ग़वासी

सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल

सम्पादक
राजकिशोर पाण्डेय
अकबरुद्दीन सिद्दीकी

दक्खिनी प्रकाशन समिति, हैदराबाद

५—०—०

ग़व्वासी

सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल

सम्पादक :
राजकिशोर पाण्डेय
अकबरुद्दीन सिद्दीक़ी

दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति, हैदराबाद

प्रकाशक :
विमला वाघ्रे एम्. ए.
मन्त्री दक्खिनी प्रकाशन समिति
अशीरबाग रोड, हैदराबाद (दक्षिण.)

प्रथम संस्करण १००० जनवरी १९५५

मूल्य ५-०-० रुपए

मुद्रक : हिन्दी प्रेस
हिन्दी प्रचार सभा, हिन्दी भवन, नामपल्ली रोड, हैदराबाद (दक्षिण)

विवरण

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद तथा इदारे अदबियाते उर्दू, हैदराबाद के संयुक्त प्रयत्नों से दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति की स्थापना ६ अक्तूबर १९५३ को हुई। समिति के पदाधिकारी तथा सदस्य निम्न प्रकार हैं :—

(१) डाक्टर बी. रामकृष्णराव
(मुख्य मन्त्री हैदराबाद राज्य) अध्यक्ष

(२) श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त आई. ए. एस.
(शिक्षा सचिव, हैदराबाद राज्य) उपाध्यक्ष

(३) डा० एस. एम. क़ादरी ज़ोर एम ए. पी. एच. डी.
(मन्त्री इदारे अदबियाते उर्दू) उपाध्यक्ष

(४) श्रीमती विमल वाघ्रे एम-ए. मन्त्री

(५) श्री श्रीराम शर्मा (मन्त्री हिन्दी प्रचार सभा)
(लेक्चरार गवर्नमेण्ट कॉलेज गुलबर्गा) सदस्य

(६) श्री गोपालराव अपसिंगीकर
(लेक्चरार लॉ कॉलेज, हैदराबाद) ,,

(७) श्री वंशीधर जी विद्यालङ्कार
(अध्यक्ष हिन्दी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय) ,,

(८) श्री राजकिशोर पाण्डेय एम-ए.
(लेक्चरार निज़ाम कॉलेज, हैदराबाद) ,,

(९) श्री जितेन्द्रनाथ वाघ्रे बी-ए. एल-एल. बी.
(एडवोकेट, हाईकोर्ट, हैदराबाद) ,,

(१०) श्री श्रीनिवास लाहोटी ,,

(११) प्रोफेसर अब्दुल क़ादर सरवरी एम-ए. एल-एल. बी.
(अध्यक्ष उर्दू विभाग उस्मानिया विश्वविद्यालय) ,,

(१२) प्रोफेसर मजीद सिद्दीक़ी एम-ए. एल-एल. बी.
(प्रो. इतिहास और राजनीति, उस्मानिया विश्वविद्यालय) ,,

(१३) प्रोफेसर हुसैन अली खाँ
(भूतपूर्व डीन, आर्ट्स कॉलेज, उस्मानिया विश्वविद्यालय) ,,

(१४) श्री हमीदुद्दीन शाहद एम-ए.
(लेक्चरार चादरघाट कॉलेज) ,,

(१५) फजलुर्रहमान एम ए.
(भूतपूर्व शिक्षा संचालक, हैदराबाद) ,,

इस समिति ने निश्चय किया है :—

(१) प्रति वर्ष दक्खिनी की पाँच उत्कृष्ट रचनाएँ आवश्यक टिप्पणियों और सम्पादन के साथ नागरी लिपि में प्रकाशित की जाएँ।

(२) दक्खिनी की जो उत्तम पुस्तकें अब तक फ़ारसी लिपि में नहीं छपीं उन्हें नागरी के साथ साथ फ़ारसी लिपि में भी छपाया जायेगा।

(३) दक्खिनी के सम्बन्ध में जो लोग शोध-कार्य करना चाहते हैं उन्हें आवश्यक सहायता दी जायगी।

समिति की प्रार्थना पर केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मन्त्रालय ने साहित्य प्रकाशन के लिए ७५०० रु० की एक कालिक सहायता दी है। हैदराबाद राज्य ने समिति को ३५०० रु० वार्षिक की सहायता प्रदान की है। केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार की सहायता प्राप्त कराने में राज्य के मुख्य मन्त्री डा० बी. रामकृष्णराव ने सहायता की।

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद ने समिति को सहायता के रूप में ३००० रु० दिए हैं और इदारे अदबियाते उर्दू ने ७५० रु.। श्री लक्ष्मीनारायण जी गुप्त ने समिति की बैठकों का संचालन तथा समय समय पर समिति के कार्यों का उचित रूप से निर्देशन किया।

समिति की पुस्तकें हिन्दी प्रेस, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद से प्रकाशित हो रही हैं। प्रेस के कार्यकर्ताओं ने पुस्तकों को समय पर प्रस्तुत करने में पूर्ण योग दिया है।

इन पुस्तकों का सम्पादन कर के तथा आवश्यक सुझाव दे कर जिन लोगों ने सहायता पहुँचाई है—और जिन लोगों ने जिस रूप में भी सहयोग दिया उन सब के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

विमला वाघ्रे, मन्त्री
दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति
मार्गशीर्ष कृ. ४' २०११
१४-११-'५४

बशीरबाग़ रोड
हैदराबाद (दक्षिण)

दो शब्द

भारतीय भाषाओं के विकास के इतिहास में हिन्दी और उर्दू का विकास एक उल्लेखनीय अध्याय है। यह बात इसलिए नहीं कही गई है कि हिन्दी तथा उर्दू एक दूसरे के अत्यन्त निकट हैं—सच बात तो यह है कि व्याकरण के नियमों और दूसरी बहुत सी बातों में दोनों अभिन्न हैं—इन दोनों भाषाओं ने अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावली तथा विन्यास से बहुत कुछ ग्रहण किया है। हिन्दी तथा उर्दू की एक मिली जुली पुरानी शैली दक्खिनी का निर्माण करती है। इसमें दक्षिणी भाषाओं ने भी अपना योग दिया है, हालांकि इन भाषाओं को एक दूसरे ही कुल की भाषा माना जाता है।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करने के बाद यह ज़रूरी हो गया है कि भाषा-विज्ञान के विशेषज्ञ तथा विद्यार्थी हिन्दी भाषा और उसके विकास में योग देने वाले उन अन्य साधनों का वैज्ञानिक अध्ययन करें जिन के कारण हिन्दी को वर्तमान रूप प्राप्त हुआ है। १४ वीं शती से अब तक दक्खिनी शैली में जो साहित्य निर्मित हुआ वह इस अध्ययन में बहुत सहायक तथा मूल्यवान सिद्ध होगा।

वर्तमान हिन्दी तथा उर्दू के अध्ययन के लिए दक्खिनी साहित्य बहुत महत्वपूर्ण है। इस तथ्य को हिन्दी और उर्दू के चिन्तक और विशेषज्ञ उत्तरोत्तर स्वीकार करते जा रहे हैं। हैदराबाद में दक्खिनी पुस्तकें बड़ी मात्रा में उपलब्ध हैं। विशेष कर आसफिया पुस्तकालय, विश्वविद्यालय, इदारे अदबियाते उर्दू, सालारजंग पुस्तक संग्रहालय तथा बहुत से निजी संग्रहालयों में दक्खिनी साहित्य की अनेक हस्तलिखित पुस्तकें हैं। कुछ समय पूर्व स्वर्गीय नवाब सालारजंग बहादुर के संरक्षण में प्रसिद्ध साहित्य सेवियों की एक समिति ने हैदराबाद में प्राप्त दक्खिनी के महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रन्थों को फ़ारसी लिपि में प्रकाशित करने का यत्न किया था। इस समिति की ओर से कुछ हस्तलिखित ग्रन्थ प्रकाशित भी हुए जो इस समय सालारजंग सम्पत्ति की ट्रस्ट के पास भण्डार में हैं।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि "दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति" नाम से हैदराबाद में एक व्यवस्थित संगठन बना है जो इस काम को आगे बढ़ाएगा। इस संगठन का उद्देश्य है—भारत तथा भारत के बाहर अन्य देशों में उपलब्ध दक्खिनी पुस्तकों और हस्तलिखित ग्रन्थों का सर्वांगीण पर्यवेक्षण करना, दक्खिनी के सभी उपलब्ध मुद्रित तथा हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह करते हुए एक अच्छे पुस्तकालय का निर्माण, दक्खिनी के महत्वपूर्ण ग्रन्थों का नागरी तथा फ़ारसी में प्रकाशन तथा यथा सम्भव दक्खिनी साहित्य का अनुसन्धान।

इस समिति को केन्द्रीय सरकार और हैदराबाद राज्य की सहायता प्राप्त है।

इस समय समिति ने हैदराबाद में उपलब्ध दक्खिनी की १५ अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तकों को नागरी लिपि में प्रकाशित करने का कार्य प्रारम्भ किया है। इस कार्य में हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद तथा इदारे अदबियाते उर्दू का सहयोग उपलब्ध है। दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति का निर्माण इन दोनों संस्थाओं के प्रतिनिधियों से हुआ है। जो हस्तलिखित ग्रन्थ अब तक फ़ारसी लिपि में प्रकाशित नहीं हुए हैं उन्हें इस लिपि में भी प्रकाशित किया जाएगा।

इन हस्तलिखित पुस्तकों के प्रकाशन से हिन्दी तथा उर्दू गद्य के विकास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ेगा तथा दोनों भाषाओं की शब्दावली में भी वृद्धि होगी। दक्खिनी साहित्य भाषा सम्बन्धी दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण नहीं है अपितु उस की कुछ रचनाएँ साहित्यिक दृष्टि से भी अत्यधिक उत्कृष्ट कोटि की हैं, अतः मुझे आशा है जहाँ समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तकें अनुसन्धान करने वाले विद्यार्थियों के लिए बहु-मूल्य सिद्ध होंगी, वहाँ उन से विशेषज्ञों और साहित्य प्रेमियों का मनोरंजन भी होगा।

डाक्टर बी० रामकृष्णराव
अध्यक्ष
दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति

मार्गशीर्ष कृ. ४' २०११
१४-११-'५४

भूमिका

कुतुबशाही वंश :

सन् १५१८ में सुल्तान कुली ने गोलकुण्डा में कुतुबशाही राज्य की नींव डाली। सुल्तान कुली फ़ारस में हमदान का निवासी था और बहमनी बादशाहों के समय में भारतवर्ष आया था। सुल्तान मुहम्मदशाह चतुर्थ ने इसे अपना अंग-रक्षक नियुक्त किया। यह अपनी प्रतिभा और योग्यता के कारण उन्नति करता गया और कुछ दिनों में तेलंगाना प्रान्त का गवर्नर नियुक्त हुआ। यह सुल्तान मुहम्मदशाह का बड़ा विश्वासपात्र सरदार था। बहुत से प्रान्तीय गवर्नरों के स्वतन्त्र हो जाने पर भी इसने बहमनी साम्राज्य से सम्बन्ध विच्छेद नहीं किया किन्तु सन् १५१८ में बादशाह के व्यवहारों से तंग आकर स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी और इस प्रकार गोलकुण्डा में कुतुबशाही राज्य की स्थापना हुई।

क़रीब १६९ वर्षों तक इस वंश के निम्नांकित सात बादशाहों ने गोलकुण्डा में शासन किया :—

१ सुल्तान कुली (सन् १५१८ से १५४३ तक)
२ जमशेद कुली कुतुबशाह (१५४३ से १५५० तक)
३ इब्राहीम कुली कुतुबशाह (१५५० से १५८० तक)
४ मुहम्मद कुली कुतुबशाह (१५८० से १६१२ तक)
५ मुहम्मद कुतुबशाह (१६१२ से १६२५ तक)
६ अब्दुल्ला कुतुबशाह (१६२५ से १६७२ तक)
७ अबुल हसन तानाशाह (१६७२ से १६८७ तक)

बीजापुर पर विजय प्राप्त करने के बाद सन् १६८७ में औरंगज़ेब ने गोलकुण्डा पर आक्रमण किया और आठ मास क़िले को घेरे पड़ा रहा। अन्त में तानाशाह बन्दी बना कर दौलताबाद भेज दिया गया और गोलकुण्डा साम्राज्य का अन्त हुआ।

बादशाहों का साहित्य-प्रेम :

गोलकुण्डा के बादशाहों के शासन काल में कला एवं साहित्य-विशेषतः दक्खिनी साहित्य की बड़ी उन्नति हुई। बहमनी बादशाहों की भाँति गोलकुण्डा के अधिकांश बादशाहों के शासन काल में दक्खिनी राज्य-भाषा के पद पर आसीन रही। कुतुबशाही वंश के शासकों में बहुत से बादशाह स्वयं बहुत अच्छे कवि थे एवं उन्होंने बहुत से कवियों एवं लेखकों को अपने राज्य में आश्रय दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि इस वंश के शासन काल के क़रीब पौने दो सौ वर्षों में साहित्य की बड़ी उन्नति हुई।

इस वंश का संस्थापक सुल्तान कुली यद्यपि फ़ारस का निवासी था और उसकी मातृभाषा फ़ारसी थी किन्तु भारतवर्ष में अधिक दिनों से रहने एवं बहमनी बादशाहों के समय में गवर्नर रहने के कारण उसे दक्खिनी का अच्छा ज्ञान था। फ़रिश्ता ने लिखा है कि इसने गोलकुण्डा में 'ऐशखाना' नाम का एक विशेष भवन बनवाया था; जिसमें कवि एकत्रित होकर अपनी कविताएँ सुनाते थे। बादशाह स्वयं उन मुशायरों में उपस्थित होता था।

इस वंश का चौथा बादशाह सुल्तान मुहम्मद कुली कुतुबशाह दक्खिनी, तेलुगु और फ़ारसी का अच्छा विद्वान् एवं कवि था। उसकी रचनाओं का एक संग्रह कुलियात नाम से प्रसिद्ध है। यह पुस्तक १८०० पृष्ठों की एक भारी-भरकम पुस्तक है और कई दृष्टियों से इसका दक्खिनी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान है। कुलियात की अधिकांश रचनाएँ मौलिक हैं और उनमें नवीनता है। उसमें हिन्दी शब्दों का प्रयोग अधिक है और जिन फ़ारसी शब्दों का प्रयोग किया गया है; उन्हें भी हिन्दी के साँचे में ढाल कर। उसमें भारतीय रीति-रिवाजों; यहाँ के शूर-वीरों और ऋतुओं आदि का सुन्दर वर्णन है।

मुहम्मद कुली कुतुबशाह की रचनाओं से पता चलता है कि उसके समय में ही उसकी रचनाएँ पर्याप्त लोकप्रिय हो चुकी थीं। उसके शेरों को राजमहलों और मजलिसों में गाया जाता था। बहुत से शायर इसके तर्ज़ पर शेर लिखते और इसकी शायरी की प्रशंसा में गज़लें लिखते।

मुहम्मद कुली ने अपने चारों तरफ़ इस तरह का वातावरण पैदा कर दिया था कि न चाहने पर भी उसे शायरी करनी पड़ती। उसने अपने एक शेर में लिखा है कि :—

"कुतुबशाह रोज़ ऐसे ही शेर कहता है जैसे नदी में लहरें उठती हैं। किन्तु न तो नदी की गति में कोई अन्तर पड़ता है और न लहरों का वेग ही कम होता है।"

यही कारण है कि मुहम्मद कुली की कविता में सादगी; स्वाभाविकता और प्रवाह है।

इसने अपने समय की कविता को एक नई दिशा की ओर मोड़ा। उस समय तक अधिकांश कविताएँ धार्मिक विषयों पर लिखी जाती थीं। उसने अपनी कविता के लिए नये-नये विषयों को चुना। उसने हिन्दू मुसलमानों के रीति-रिवाजों; त्योहारों एवं प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन बड़ी सुन्दरता के साथ किया है।

इस वंश का पाँचवाँ बादशाह सुल्तान मुहम्मद कुतुबशाह भी फ़ारसी और दक्खिनी का अच्छा कवि था। उसका एक दीवान फ़ारसी का और दूसरा दक्खिनी का उपलब्ध है। इन दीवानों में फ़ारसी और दक्खिनी काव्य के विविध रूप दिखलाई पड़ते हैं। ये; फ़ारसी की कविताएँ 'जिलुल्ला' और दक्खिनी की कविताएँ 'कुतुबशाह' उपनाम से करते थे।

गोलकुण्डा के कुतुबशाही शासकों के आश्रय में रहने वाले कवियों में-- वजही; ग़वासी; इब्न निशाती; ग़ुलामअली; तानाशाह; तबई और सेवक मुख्य हैं।

ग़वासी का जीवन-वृत्त :

ग़वासी की रचनाओं को देखने से पता चलता है कि वह अपने समय का बहुत बड़ा कवि था किन्तु तत्कालीन इतिहासों और बाद के लिखे गए तज़किरों से उसके जीवन-वृत्त पर बहुत कम प्रकाश पड़ता है। स्थान स्थान पर उसकी रचनाओं में प्राप्त अन्तः-साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि वह गोलकुण्डा का निवासी था और सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह का समकालीन था।

ग़वासी ने अपनी रचनाओं में कहीं 'ग़वासी' और कहीं 'ग़वास' उपनाम का प्रयोग किया है। इसका असल नाम भी यही था या कुछ दूसरा था और इसके माता-पिता कौन थे; इसके सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। ग़वासी की जन्मतिथि ज्ञात नहीं है किन्तु यह अनुमान किया जाता है कि यह इब्राहीम कुली कुतुबशाह के शासन काल में पैदा हुआ और इसने सुल्तान मुहम्मद कुली कुतुबशाह के शासन काल में कविता करना आरंभ किया। इसने अपनी मसनवी 'सैफ़ुल मुलूक व बदीउल जमाल' को उस समय पूरा किया जब अब्दुल्ला कुतुबशाह गद्दी पर बैठ चुका था।

ग़वासी ने इस मसनवी का रचना काल पुस्तक के अन्त में दिया है :--

"बरस एक हज़ार पंजतीस में; किया ख़त्म यू नज़्म दिनतीस में"

इससे प्रतीत होता है कि ग़वासी ने अपनी इस मसनवी को १०३५ हिजरी (सन् १६२६) में पूरा किया।

"यूरोप में दक्खिनी मख़तूतात" के लेखक श्री नसीरुद्दीन हाशमी ने लिखा है कि यूरोप में प्राप्त कुछ हस्त लिखित प्रतियों में पाठ-भेद मिलता है। उन प्रतियों में उपर्युक्त शेर नीचे लिखे रूप में प्राप्त हैं :--

१ बरस एक हज़ार हौर पंजबीस में; किया ख़त्म यू नज़्म दिनतीस में
२ बरस एक हज़ार हौर सत्तावीस में; किया ख़त्म यू नज़्म दिनतीस में

इन शेरों के अनुसार "सैफ़ुल मुलूक व बदीउल जमाल" का रचना काल १०२५ हिजरी (सन् १६१७) और १०२७ हिजरी (सन् १६१६) निकलता है। किन्तु पुस्तक के प्रारंभ में जो बादशाह की तारीफ़ की गई है उससे एवं पुस्तक के अन्त के कुछ शेरों से पता चलता है कि पुस्तक अब्दुल्ला कुतुबशाह के शासन काल में लिखी गई। अब्दुल्ला कुतुबशाह १०३५ हिजरी (सन् १६२६) में गद्दी पर बैठ चुका था। अस्तु; इसी वर्ष पुस्तक लिखी गई; यह मानना उचित होगा।

उपर्युक्त मसनवी के लिखने के समय तक ग़वासी तत्कालीन कवियों में पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुका था किन्तु दरबार में उसे कोई सम्मान प्राप्त न था। वह किसी मामूली नौकरी से अपनी जीविका निर्वाह करता था और अपने दिन ग़रीबी में बिता रहा था। ग़वासी ने उपर्युक्त मसनवी के अन्त में इसे स्वीकार किया है और उसने बादशाह का ध्यान अपनी ग़रीबी की ओर आकृष्ट किया है :—

जो सुल्तान अब्दुल्ला इन्साफ़ कर
मेरे जौहराँ पोते दिल साफ़ कर
देवे दाद मेरा बहुत मान पाऊँ
उमस दूर थे ता गिरेबान पाऊँ
कि यू शाह मेरा ख़रीदार होय
तो ताज़ा मेरा तबये गुलज़ार होय
कि ग़मगीं हूँ मैं सख़्त संसार ते
धरू दग़दग़े लाक इस आज़ार ते
परेशानगी में जम्याँ ख़्याल मैं
ले आया हूँ ऐसे रतन ढाल मैं

किन्तु ग़रीबी में भी उसे अपनी काव्य शक्ति का गर्व था। वह हिन्दुस्तान के सभी शायरों में अपने को बड़ा समझता था :—

मेरा ज्ञान अजब शकरिस्तान है
जो इस थे मिठा सब हिन्दुस्तान है
जिते हैं जो तूती हिन्दुस्तान के
भिकारी हैं मुंज शक्करिस्तान के
शकर खा मेरे शक्करिस्तान थे
मिठे बोल उठे वो अपस ज्ञान थे
लताफ़त मनें मैं सुख़न संज हूँ
धर न हार लक ग़ैब के गंज हूँ
जो मैं मन सूँ तब आजमाई करूँ
तो सर्‌याँ उपर पेशवाई करूँ
हुनर की गवी का सो मैं बाग हूँ
बचन के उतम गंज का नाग हूँ
सके कौन मिलने मेरे तौर में
कि रुस्तम हूँ मैं आज के दौर में

ग़वासी ने अपनी इस मसनवी को सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह को समर्पित

किया है और वह लिखता है कि इसके लिए उसे अन्त: प्रेरणा मिली है :—

बहर हाल यू नज्म इलहाम सूँ
किया मैं नवल शाह के नाम सूँ

ऐसा प्रतीत होता है कि इस मसनवी के लिखने के बाद ग़वासी को दरबार में पर्याप्त सम्मान प्राप्त होने लगा और अन्त में बादशाह ने प्रसन्न होकर उसे 'मलिकुल्शुअरा' की उपाधि से विभूषित किया। यह उपाधि उसे कब और क्यों प्राप्त हुई; इसके सम्बन्ध में तत्कालीन इतिहासकार मौन हैं। किन्तु उस समय दरबार में 'वजही' जैसे प्रतिभा सम्पन्न लेखक और कवि के रहते 'मलिकुल्शुअरा' की उपाधि ग़वासी का पाना; इस बात को सूचित करता है कि वह बादशाह का विशेष कृपा-पात्र बन चुका था।

तत्कालीन इतिहासों से पता चलता है कि १०४५ हिजरी (सन् १६३६) में बीजापुर के बादशाह मुहम्मद आदिलशाह ने मलिक ख़ुशनूद नाम के अपने दरबारी शायर को गोलकुण्डा दरबार में दूत बना कर भेजा। मलिक ख़ुशनूद जब बीजापुर वापिस जाने लगा तो अब्दुल्ला कुतुबशाह ने अपने दरबार के प्रसिद्ध शायर ग़वासी को मलिक ख़ुशनूद के साथ बीजापुर अपने दूत की हैसियत से भेजा। बीजापुर में ग़वासी की बड़ी आव-भगत हुई। इससे प्रतीत होता है कि गोलकुण्डा में ग़वासी की हैसियत केवल शायर की ही न थी बल्कि राज-काज में बादशाह उसके विचारों को महत्व देता था।

अपनी पहली मसनवी के ठीक चौदह वर्षों बाद १०४६ हिजरी (सन् १६४०) में उसने अपनी दूसरी मसनवी "तूतीनामा" की रचना की। उस समय तक उसे पर्याप्त सम्मान प्राप्त हो चुका था और उसे धन-दौलत किसी बात की कमी न थी। किन्तु 'तूतीनामा' के कुछ अंशों को पढ़ने से ज्ञात होता है कि उसकी रचना के समय वह अपनी सांसारिकता से दुःखी था और वह अपना ध्यान ख़ुदा की ओर लगाना चाहता था :—

ग़वासी अगर तूँ है सचला ग़वास
लगा इश्क अपने ख़ुदा सात ख़ास
चलेगा किता नफ़्स के कये मने
किता होयगा नावँ के पये मने

× × ×

हो बेदार एक बार इस ख़्वाब ते
निकल भार इस ग़म के गरदाब ते

जो है रहनुमा पीर हैदर तेरा
हम अल्लाह वहे हम पैग़म्बर तेरा
ज कुच ख़्वास्त तेरा है सब उस पू छोड़
दुनिया के इलाक़े ते ले दिल कू तोड़
न कर एतमाद इस गुज़र गाह का
यू फाँदा है दरवेश हौर शाह का
सँभाल अपें ऐ यार इस दाम ते
नको ग़ाफ़िल अछ आपने काम ते

ऐसा प्रतीत होता है कि 'तूतीनामा' की रचना के बाद ग़वासी अपना अधिक समय 'इबादत' में लगाने लगा और दरबार में कम आने जाने लगा। संभवतः इसी से इतना बड़ा शायर होने पर भी तत्कालीन इतिहासों और फलतः बाद के तज़किरों में इसके जीवन पर बहुत कम प्रकाश डाला गया। ग़वासी की मृत्यु किस सन् में हुई; इसके सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है किन्तु इतना निश्चित है कि सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह के शासन काल में ही इसकी मृत्यु हो गई।

काव्य और शैली :

ग़वासी की दो रचनाएँ उपलब्ध हैं :—

१ सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल
२ तूतीनामा

दकन में उर्दू के लेखक ने ग़वासी की कुछ ग़ज़लों और मर्सियों की भी चर्चा की है और उनके उदाहरण अपनी पुस्तक में दिए हैं।

उपर्युक्त दोनों पुस्तकें फ़ारसी-मसनवियों की प्रणाली पर लिखी गई हैं और उनमें प्रेम कथाओं का वर्णन है। फ़ारसी मसनवियों के अनुसार इन पुस्तकों में पहले ख़ुदा की प्रार्थना; पैग़ंबर की तारीफ़; ख़लीफ़ा की प्रशंसा और तत्कालीन बादशाह के संबंध में लिखा गया है और उसके बाद कहानी का प्रारंभ किया गया है। पहली पुस्तक की कहानी पर आगे के पृष्ठों में विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है। तूतीनामा की कहानी निम्नांकित है :—

भारतवर्ष में एक बड़ा धनी सौदागर रहता था। उसके जहाज सातों समुद्रों में जाते थे और उसके पास ऐसी क़ीमती चीज़ें थीं; जो बड़े-बड़े बादशाहों के पास भी न थीं। किन्तु वह सौदागर किसी पुत्र के न होने से बड़ा दुःखी था बहुत दिनों के बाद उसे एक लड़का पैदा हुआ। लड़का बड़ा ही सुन्दर और प्रतिभाशाली था। सौदागर ने उसकी शादी एक सुन्दरी युवती के साथ कर दी। लड़का धीरे-धीरे अपने बाप का सारा कारोबार देखने लगा। उसने एक मैना और एक तोता ख़रीदा;

जो आदमियों की बोली बोलते थे और जिन्हें कुरान का भी ज्ञान था। तोता भविष्य-दर्शी था। उसने समय-समय पर ऐसी सलाहें दीं कि उनसे उसे बड़ा लाभ हुआ। एक बार वह विदेश में व्यापार के लिए गया। उसकी युवा पत्नी घर में अकेली थी। एक दिन जब वह अपनी छत पर बैठी थी; उसकी निगाह एक सुन्दर नवजवान से मिली जो नीचे रास्ते से जा रहा था। नवजवान ने एक बूढ़े से उस सौदागरिनी के पास प्रेम का सन्देश भेजा। सौदागरिनी भी उस पर आसक्त हो चुकी थी। उसने मैना से इस सम्बन्ध में पूछा किन्तु मैना के मना करने पर उसे मरवा डाला। दूसरे दिन उसने तोता से पूछा। तोता मैना की मृत्यु देख चुका था। उसने मना करने में खतरा देखा और कहा कि ये सब बातें रहस्य की हैं; किसी से कहनी नहीं चाहिए; नहीं तो तुम्हारा और हमारा हाल वही होगा; जो एक रानी का हुआ। इसके बाद तोते ने रानी की कहानी सुनाई और रात बीत गई। दूसरे दिन फिर सौदागरिनी तोते से राय लेने पहुँची। तोते ने कहा कि अपने गहनों को साथ न रखो अन्यथा वह नवजवान धोका देकर तुम्हारे गहनों को ले सकता है, जैसा कि एक कहानी में हुआ है। इसके बाद उस तोते ने वह कहानी सुनाई और रात बीत गई। इस प्रकार तोता ३५ दिनों तक कहानियाँ सुनाता रहा और सौदागरिनी को टालता रहा। इसके बाद सौदागर आ गया और उसे तोते से सारी बातें मालूम हो गईं। उसने अपनी व्यभिचारिणी स्त्री को मार डाला और सारी धन संपत्ति ग़रीबों को दान देकर स्वयं फ़क़ीर हो गया।

तूतीनामा के कथानक का आधार कुछ विद्वान् फ़ारसी के एक गद्य की पुस्तक को मानते हैं। वस्तुतः इस कथा का मूल आधार 'शुक-सप्तति' की कथा है; जो फ़ारसी साहित्य एवं अन्य भाषाओं के साहित्यों में भी बहुत पहले ही पहुँच चुकी थी।

ग़वासी ने अपनी पहली मसनवी की रचना सन् १६२६ में की और तूतीनामा उसके ठीक १४ वर्षों के बाद सन् १६४० में लिखा गया। ऐसा प्रतीत होता है कि इन दोनों मसनवियों की कहानियों के चुनाव में भी ग़वासी की तत्कालीन मानसिक स्थिति का बहुत बड़ा हाथ है। पहली मसनवी की रचना के समय ग़वासी में सांसारिक सुखों को प्राप्त करने की बड़ी अभिलाषा थी। अस्तु; उसने ऐसा कथानक लिया जिसमें प्रेम की सफलता और उसका सौन्दर्य प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया गया है। तूतीनामा के अनेक उद्धरणों से स्पष्ट है कि उसकी रचना के समय वह अपनी सांसारिकता से ऊब चुका था। अस्तु; उस समय वह एक ऐसी कहानी चुनता है जिसमें सांसारिक प्रेम का खोखलापन और उसकी निःस्सारता प्रदर्शित की गई है।

ग़वासी की जो दो मसनवियाँ उपलब्ध हैं; उन दोनों की कहानियाँ मौलिक नहीं हैं किन्तु उन दोनों में ग़वासी की प्रतिभा का पूर्ण चमत्कार दिखलाई पड़ता है। यही कारण है कि ग़वासी की केवल दो रचनाएं उपलब्ध होने पर भी उसका

जो है रहनुमा पीर हैदर तेरा
हम अल्लाह वहे हम पैग़म्बर तेरा
ज कुच ख़्वास्त तेरा है सब उस पू छोड़
दुनिया के इलाक़े ते ले दिल कू तोड़
न कर एतमाद इस गुज़र गाह का
यू फाँदा है दरवेश हौर शाह का
सँभाल अपें ऐ यार इस दाम ते
नको ग़ाफ़िल अछ आपने काम ते

ऐसा प्रतीत होता है कि 'तूतीनामा' की रचना के बाद ग़वासी अपना अधिक समय 'इबादत' में लगाने लगा और दरबार में कम आने जाने लगा। संभवतः इसी से इतना बड़ा शायर होने पर भी तत्कालीन इतिहासों और फलतः बाद के तज़किरों में इसके जीवन पर बहुत कम प्रकाश डाला गया। ग़वासी की मृत्यु किस सन् में हुई; इसके सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है किन्तु इतना निश्चित है कि सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह के शासन काल में ही इसकी मृत्यु हो गई।

काव्य और शैली :

ग़वासी की दो रचनाएँ उपलब्ध हैं:—

१ सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल
२ तूतीनामा

दकन में उर्दू के लेखक ने ग़वासी की कुछ गज़लों और मर्सियों की भी चर्चा की है और उनके उदाहरण अपनी पुस्तक में दिए हैं।

उपर्युक्त दोनों पुस्तकें फ़ारसी-मसनवियों की प्रणाली पर लिखी गई हैं और उनमें प्रेम कथाओं का वर्णन है। फ़ारसी मसनवियों के अनुसार इन पुस्तकों में पहले ख़ुदा की प्रार्थना; पैग़ंबर की तारीफ़; ख़लीफ़ा की प्रशंसा और तत्कालीन बादशाह के संबंध में लिखा गया है और उसके बाद कहानी का प्रारंभ किया गया है। पहली पुस्तक की कहानी पर आगे के पृष्ठों में विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है। तूतीनामा की कहानी निम्नांकित है:—

भारतवर्ष में एक बड़ा धनी सौदागर रहता था। उसके जहाज सातों समुद्रों में जाते थे और उसके पास ऐसी क़ीमती चीज़ें थीं; जो बड़े-बड़े बादशाहों के पास भी न थीं। किन्तु वह सौदागर किसी पुत्र के न होने से बड़ा दुःखी था बहुत दिनों के बाद उसे एक लड़का पैदा हुआ। लड़का बड़ा ही सुन्दर और प्रतिभाशाली था। सौदागर ने उसकी शादी एक सुन्दरी युवती के साथ कर दी। लड़का धीरे-धीरे अपने बाप का सारा कारोबार देखने लगा। उसने एक मैना और एक तोता ख़रीदा;

जो आदमियों की बोली बोलते थे और जिन्हें कुरान का भी ज्ञान था। तोता भविष्य-दर्शी था। उसने समय-समय पर ऐसी सलाहें दीं कि उनसे उसे बड़ा लाभ हुआ। एक बार वह विदेश में व्यापार के लिए गया। उसकी युवा पत्नी घर में अकेली थी। एक दिन जब वह अपनी छत पर बैठी थी; उसकी निगाह एक सुन्दर नवजवान से मिली जो नीचे रास्ते से जा रहा था। नवजवान ने एक बूढ़े से उस सौदागरिनी के पास प्रेम का सन्देश भेजा। सौदागरिनी भी उस पर आसक्त हो चुकी थी। उसने मैना से इस सम्बन्ध में पूछा किन्तु मैना के मना करने पर उसे मरवा डाला। दूसरे दिन उसने तोता से पूछा। तोता मैना की मृत्यु देख चुका था। उसने मना करने में खतरा देखा और कहा कि ये सब बातें रहस्य की हैं; किसी से कहनी नहीं चाहिए; नहीं तो तुम्हारा और हमारा हाल वही होगा; जो एक रानी का हुआ। इसके बाद तोते ने रानी की कहानी सुनाई और रात बीत गई। दूसरे दिन फिर सौदागरिनी तोते से राय लेने पहुँची। तोते ने कहा कि अपने गहनों को साथ न रखो अन्यथा वह नवजवान धोका देकर तुम्हारे गहनों को ले सकता है, जैसा कि एक कहानी में हुआ है। इसके बाद उस तोते ने वह कहानी सुनाई और रात बीत गई। इस प्रकार तोता ३५ दिनों तक कहानियां सुनाता रहा और सौदागरिनी को टालता रहा। इसके बाद सौदागर आ गया और उसे तोते से सारी बातें मालूम हो गईं। उसने अपनी व्यभिचारिणी स्त्री को मार डाला और सारी धन संपत्ति ग़रीबों को दान देकर स्वयं फ़क़ीर हो गया।

तूतीनामा के कथानक का आधार कुछ विद्वान् फ़ारसी के एक गद्य की पुस्तक को मानते हैं। वस्तुतः इस कथा का मूल आधार 'शुक-सप्तति' की कथा है; जो फ़ारसी साहित्य एवं अन्य भाषाओं के साहित्यों में भी बहुत पहले ही पहुँच चुकी थी।

ग़वासी ने अपनी पहली मसनवी की रचना सन् १६२६ में की और तूतीनामा उसके ठीक १४ वर्षों के बाद सन् १६४० में लिखा गया। ऐसा प्रतीत होता है कि इन दोनों मसनवियों की कहानियों के चुनाव में भी ग़वासी की तत्कालीन मानसिक स्थिति का बहुत बड़ा हाथ है। पहली मसनवी की रचना के समय ग़वासी में सांसारिक सुखों को प्राप्त करने की बड़ी अभिलाषा थी। अस्तु; उसने ऐसा कथानक लिया जिसमें प्रेम की सफलता और उसका सौन्दर्य प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया गया है। तूतीनामा के अनेक उद्धरणों से स्पष्ट है कि उसकी रचना के समय वह अपनी सांसारिकता से ऊब चुका था। अस्तु; उस समय वह एक ऐसी कहानी चुनता है जिसमें सांसारिक प्रेम का खोखलापन और उसकी निःस्सारता प्रदर्शित की गई है।

ग़वासी की जो दो मसनवियाँ उपलब्ध हैं; उन दोनों की कहानियाँ मौलिक नहीं हैं किन्तु उन दोनों में ग़वासी की प्रतिभा का पूर्ण चमत्कार दिखलाई पड़ता है। यही कारण है कि ग़वासी की केवल दो रचनाएं उपलब्ध होने पर भी उसका

स्थान दक्खिनी के कवियों में बहुत ऊँचा है। उसने अपनी प्रतिभापूर्ण वर्णन शक्ति; सुन्दर शब्दों के चुनाव; नई उपमाओं और अपनी अद्भुत सूझ-बूझ से इन कथानकों को नया रूप प्रदान कर दिया है। अपनी पहली मसनवी में ग़वासी स्वयं लिखता है :—

मेरा दिल ख़ज़ीना जो मामूर है
बचन के जवाहिर सों भरपूर है
लगा रोलने ताईं मैं जौहराँ
चिपाया तजल्याँ में नौ अंबराँ
कया शेर ताज़ा बड़े छन्द सों
हर एक बन्द बसलाइया बन्द सों
जो लफ़्ज़ मिलाया रंगेली निछल
पुरोया जवाहिर की छेली निछल
ख़्यालाँ के फौजाँ को दौड़ाइया
हज़ाराँ नवे तशबिहाँ लाइया
जो कुछ तशबिहाँ खूब माकूल हैं
मेरे ख़्याल के बन के वो फूल हैं

ग़वासी की प्रतिभा का पता इससे चलता है कि उसने पहली मसनवी को केवल तीस दिनों में पूरा किया। ग़वासी की दोनों मसनवियों में स्थान स्थान पर प्रकृति का बड़ा संश्लिष्ट चित्रण मिलता है। तूतीनामा में एक स्थान पर ग़वासी ने प्रातःकाल का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है। 'सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल' में स्थान स्थान पर समुद्रों; नगरों और बाग़ीचों का बड़ा सुन्दर वर्णन मिलता है। सिंहल द्वीप के बाग़ीचे का वर्णन देखिए :—

कहूँ बाँके चमनाँ कूँ मैं क्यों चमन
कि था हर चमन साफ़ एक एक गगन
भर अमरत सूँ चमनाँ के म्याने तमाम
जड़त के अथे हौज़ खाने तमाम
बने-बन बरक लहलहाते अथे
कल्याँ पर कल्याँ बार आते अथे
पवन झोले खा फूल की डाल हल
सो पड़ते अथे फूल हर झाड़ तल
मगर आ अंबर के चितारे तमाम
चमन में बिछाये थे तारे तमाम

अथे बूँद शबनम के यूँ पात में
रतन ख़ास ख़ूबाँ के ज्यूँ हात में

ग़वासी ने अपनी पहली मसनवी के प्रारंभ में सखुन की तारीफ़ में जो 'बचन' या शब्द शक्ति का वर्णन किया है; वह दक्खिनी साहित्य में ही नहीं अन्य साहित्यों में भी बेजोड़ है।

ग़वासी की भाषा तीन सौ वर्ष पुरानी बोलचाल की दक्खिनी है। उसमें निम्नांकित विशेताएँ दिखलाई पड़ती हैं।

(१) उसमें फ़ारसी शब्दों की अपेक्षा हिन्दी शब्दों के प्रयोग की ओर अधिक झुकाव है। उसमें हिन्दी के बहुत से ऐसे शब्दों का भी व्यवहार हुआ है; जो संस्कृत से आये हैं और जिनका प्रयोग तत्सम रूप में होता है। उदाहरणार्थ नीचे लिखे शब्दों को लिया जा सकता है :—

अन्त, तल, भुजंग, पन्थ, पवन, निराधार, अंबर, नाद, मान, ज्ञान; तुरंग, अमृत, निरंजन, दुःख, गंभीर, आधार, नीर, आनन्द, हस्त, कामिनी, बल, बालक, निर्मल, मार्ग, अधर, गगन, निशि, ज्योति, चन्द्र, धीर, रोमावली, अन्धकार, द्वन्द, मोहिनी, ध्यान, मद।

इन तत्सम रूपों के अतिरिक्त ग़वासी ने बहुत से ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है; जो हिन्दी में संस्कृत से आये हैं किन्तु उनका प्रयोग तद्भव रूप में होता है। जैसे :—

पन्त, तिर्जग (त्रिजग), दिपाना (दीप्त करना), बिर्द (विरुद), जग, सगल (सकल), औतार, बैचन, सुजान, सन्दूर (समुद्र), निदा (नाद, शब्द), भान (भानु), खर्ग (खड्ग), सामी (स्वामी), काम, जगपती, दीवा बत्ती, बैन, रतन, फूल, पूत, दीस (दिवस), धरतरी, निछल, सातरा (सत्र)।

(२) ग़वासी की रचनाओं में बहुत से ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया है; जो मराठी, तेलुगु या कन्नड़ से दक्खिनी में आकर मिल गये हैं। इनमें बहुत से शब्द अपने पूर्व रूप में प्रयुक्त हुए हैं और कुछ शब्दों का रूप विकृत हो गया है। जैसे :—

पाड़ना (डालना या निकालना), भंडोली (बर्तन), लई (बहुत), मुंडी (सिर), कंडालना (नफ़रत करना), खंडी (कोड़ी), सटना (ख़तम होना), दुराही (शासन), सामी (स्वामी), झाड़ (वृक्ष), नेट (दोस्त) इत्यादि।

(३) वाक़िया, नामा, क़िला आदि बहुत से फ़ारसी शब्दों को शुद्ध रूप में न लिख कर उसी रूप में लिखा गया है, जैसा इनका उच्चारण होता है।

(४) ग़वासी ने दक्खिनी के अन्य कवियों की भाँति बहुत से नये शब्दों और मुहाविरों का प्रयोग किया है। जैसे :—

फूल का बार आना (फूल खिलना); मजलिस भराना (दरबार में जाना); दड़ी मारना (जल्दी से चला जाना); मुख जातरा करना (मुख देखना); अन्द गन्द मिटाना (नामो निशान मिटाना); नाँव नंग होना (नेक नामी बदनामी होना) आदि बहुत से नये मुहावरे ग़वासी की रचनाओं में प्रयुक्त हुए हैं।

ग़वासी ने बहुत से ऐसे शब्दों का भी प्रयोग किया है जो या तो नये हैं या जिनका प्रयोग प्रचलित अर्थों से विभिन्न अर्थों में किया गया है। जैसे :—

वहा (भाव या क़ीमत अर्थ में)

"उनन का बहा कोई दे ना सके"

अपसता (अपने से अर्थ में)

"सदा राज करता अथा अपसता"

सूर (ख़ुशी अर्थ में)

"सदा सूर मुझ कूँ तेरे सूर थे"

बदल (लिए अर्थ में)

"अंझू बहाता मोहिनी के बदल"

इसी प्रकार 'ख़ुश मान' का प्रयोग 'इज्ज़त'; 'अभाल' का प्रयोग 'बादल'; 'ताव' का प्रयोग 'क्रोध'; 'बरास' का प्रयोग 'आशा पूर्ण होना' आदि अर्थों में किया गया है।

(५) छन्दों में मात्रा की पूर्ति के लिए बहुत से शब्दों का रूप विकृत किया गया है। जैसे :—

(१) हती तेरे दरबार के फाड़ सब
छड़ीदार तुज दार के झाड़ सब

(२) कि ऐ बादशाह; भोगुनी बख़्तवर
तूँ फ़रज़न्द के कारन अब ग़म न कर

(३) कहा मैं 'इसी का' दिवाना हूँ भोत
अगर चे अपन ठार दाना हूँ भोत

(४) एकाएक बड़े गुल सिती हाँक मार
निकल जंगिया आए एक धर ते भार

उपर्युक्त उद्धरणों में 'पहाड़' के स्थान पर 'फाड़'; 'बहुगुनी' के स्थान पर

'भोगुनी'; 'बहुत' के स्थान पर 'भोत'; और 'बाहर' के स्थान पर 'भार' शब्द का प्रयोग हुआ है।

(६) ग़वासी की भाषा में कहीं कहीं लिंग का भी व्यतिक्रम दिखलाई पड़ता है। बहुत से शब्द जिनका आज कल स्त्रीलिंग प्रयोग होता है; पुल्लिंग रूप में प्रयुक्त हुए हैं। जैसे :—

(१) "मुनाजात ग़वास का कर क़बूल"
(२) "हतेली तेरा लोह अंगुली क़लम"
(३) "तेरा याद दायम है चारा उसे"
(४) "मेरा रूह परवाने के सारका"

उपर्युक्त उदाहरणों में 'मुनाजात'; 'हतेली'; 'याद'; और 'रूह' शब्दों का प्रयोग पुल्लिंग हुआ है किन्तु आज कल इन शब्दों का प्रयोग स्त्रीलिंग होता है।

कहानी का संक्षेप :

किसी समय मिस्र में आसिम नवल नाम का बादशाह रहता था। बादशाह को किसी बात की कमी न थी किन्तु वह एक सन्तान के न होने से बहुत दुःखी था। इस दुःख के कारण वह राज-काज से उदासीन रहने लगा। ज्योतिषी लोगों ने उसकी जन्म-पत्री देख कर कहा कि, यदि वह यवन देश के राजा की लड़की से शादी कर ले तो उसे उस रानी से पुत्र की उत्पत्ति होगी। यह बात सुन कर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने अपने एक दूत को बहुमूल्य उपहारों के साथ 'यवन' के राजा के पास भेजा। 'यवन' के बादशाह ने आसिम नवल की प्रार्थना स्वीकार कर ली और बड़ी धूम-धाम से विवाह सम्पन्न हुआ।

जैसी ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की थी; बादशाह को उसी वर्ष एक पुत्र उत्पन्न हुआ। जिसका नाम सैफ़ुल मूलूक रखा गया। संयोगवश उसी दिन मिस्र के वज़ीर को जिसका नाम सालेह था; उसे भी एक पुत्र उपत्न्न हुआ। वज़ीर ने अपने पुत्र का नाम 'साअद' रखा।

सैफ़ुल मुलूक और 'साअद' दोनों में बड़ी मित्रता थी। दोनों का पालन-पोषण साथ साथ हुआ और दोनों की शिक्षा-दीक्षा भी साथ साथ ही हुई। कुछ ही दिनों में दोनों बहुत सी विद्याओं में पारंगत हो गए।

एक दिन बादशाह आसिम नवल ने सैफ़ुल मुलूक और साअद दोनों को बुलाया। बादशाह ने खजाने से एक सुनहला बक्स मँगाया और उसमें से एक ज़रीदार कपड़ा और एक अँगूठी निकाल कर सैफ़ुल मुलूक को दी। साथ ही एक सुन्दर घोड़ा भी दिया और कहा कि "ये चीज़ें मुझे हज़रत सुलेमान से प्राप्त हुई थीं। तुम्हीं मेरे उत्तराधिकारी हो। अस्तु; इन चीज़ों को मैं तुम्हें देता हूँ।"

सैफुल मुलूक इन उपहारों को प्राप्त कर बड़ा प्रसन्न हुआ। रात को संयोगवश उसकी दृष्टि उस वस्त्र पर बनी हुई एक तस्वीर पर पड़ी; जो भेंट में उसे पिता से प्राप्त हुआ था। वह तस्वीर में बनी स्त्री के सौन्दर्य को देख कर अपनी सुधि-बुधि खो चुका था।

बादशाह को जब यह खबर मालूम हुई तो उसने साअद को बुलाया और तस्वीर वाले वस्त्र की प्राप्ति का पूरा वृत्तान्त सुनाया। उसने कहा कि "एक दिन मैं दरबार में बैठा हुआ था कि बड़े ज़ोरों की आँधी आई। कुछ ही देर में कुछ परियाँ ये चीजें लेकर मेरे सामने आईं। उन्होंने बतलाया कि इन वस्तुओं को हज़रत सुलेमान ने भेंट में भेजा है।"

बादशाह ने यह भी बतलाया कि वस्त्र पर बनी हुई तस्वीर बदीउल जमाल की है; जो 'गुलिस्ताने-एरम' के बादशाह की बेटी है, उसे प्राप्त करना बड़ा कठिन है।

सैफुल मुलूक की दशा दिन पर दिन बिगड़ती जा रही थी। बादशाह ने बहुत से अनुभवी वैद्यों को बुला कर उसकी दवा करने को कहा। किन्तु उसकी अद्‌भुत बीमारी का निदान करना वैद्यों के लिए कठिन था। बादशाह ने बहुत से लोगों को गुलिस्ताने-एरम की खोज में भेजा; वे लोग एक साल तक इधर उधर भटकने के बाद वापिस आए किन्तु गुलिस्तान-एरम का कहीं पता न चला।

अन्त में सैफुल मुलूक बादशाह की आज्ञा लेकर स्वयं साअद एवं अन्य साथियों के साथ गुलिस्ताने-एरम की खोज में चल पड़ा।

बहुत से समुद्रों को पार करता हुआ सैफुल मुलूक और उसके साथियों का दल चीन पहुँचा। वहाँ के बादशाह ने सबका बड़ा स्वागत किया और गुलिस्ताने-एरम का पता लगाने का प्रयत्न किया। वहाँ एक एक सौ सत्तर वर्ष के बूढ़े ने बतलाया कि वह बहुत से देशों का भ्रमण कर चुका है किन्तु उसने इस नाम का शहर न देखा है न सुना है। उसने यह भी बतलाया कि, कुस्तुन्तुनियाँ बहुत बड़ा व्यापारिक नगर है; जहाँ संसार के विभिन्न देशों से लोग आते हैं। संभव है वहाँ गलिस्ताने-एरम का पता चल जाए।

सैफुल मुलूक बूढ़े की इस बात को सुन कर चीन के बादशाह से बिदा लेकर कुस्तुन्तुनियाँ की ओर चल पड़ा। रास्ते में एक बड़ा तूफ़ान आया। सारी नौकाएँ डूब गईं। साअद एवं सैफुल मुलूक के अन्य साथी कुछ डूब गए और कुछ तख़्तों पर बहते हुए दूर जा पड़े। राजकुमार अकेला एक तख़्ते पर बहता हुआ हब्शियों के एक द्वीप में पहुँचा। हब्शियों ने पकड़ कर राजकुमार को अपने बादशाह के सामने उपस्थित किया। बादशाह ने सैफुल मुलूक को अपनी शाहज़ादी के पास भेजा कि वह उसे भून कर खा जाए किन्तु शाहज़ादी सैफुल मुलूक के सौन्दर्य पर मुग्ध थी। उसने प्रेम प्रकट किया किन्तु राजकुमार के घृणा प्रकट करने पर उसे बन्दीगृह में डाल दिया।

राजकुमार किसी प्रकार हब्शियों के बन्दीगृह से भाग निकला एवं कई द्वीपों में होता तथा अनेक प्रकार के कष्ट उठाता क़ैसरिया नाम के नगर में पहुँचा। इस नगर में बन्दरों का निवास था। वहाँ केवल एक ही मनुष्य था जो उनका बादशाह था। क़ैसरिया के राजा ने राजकुमार का बड़ा स्वागत किया। राजकुमार कई दिनों तक क़ैसरिया के बादशाह का आतिथ्य ग्रहण करता रहा किन्तु वहाँ भी गुलिस्ताने-एरम का पता न पाकर बादशाह से विदा लेकर आगे बढ़ा।

राजकुमार फिर एक द्वीप में पहुँचा। वहाँ हाथी के बराबर मकोड़े देख कर वह बड़ा भयभीत हुआ और एक वृक्ष पर जा चढ़ा। इतने में उसकी दृष्टि समुद्र किनारे खड़े शुतुर मुर्ग़ पर पड़ी। सैफुल मुलूक वृक्ष से उतरा और शुतुर मुर्ग़ के साथ दूर तक निकल जाने की इच्छा में वह उसके पैरों को पकड़ कर लटक गया। शुतुर मुर्ग़ सैफुल मुलूक को लेकर उड़ा और अपने बच्चों के पास पहुचा। शुतुर मुर्ग़ के बच्चे सैफुल मुलूक को खाना ही चाहते थे कि एक बड़ा अजगर उन्हें निगल गया। वह जान बचा कर भागा और पानी के एक स्रोत के किनारे पहुँचा। वहाँ उसे पड़ा हुआ एक सुन्दर अनार का फल मिला; जिसे खाकर उसने अपनी क्षुधा शान्त की।

इसके बाद सैफुल मुलूक इसफ़न्द नाम के द्वीप में पहुँचा। उस द्वीप में उसे एक बड़ा राजमहल दिखलाई दिया। वह महल में पहुँचा। सभी कमरे बेशक़ीमती क़ालीनों से सज़े हुए थे। चारों ओर के बाग़ीचों में सुन्दर फूल खिले हुए थे। किन्तु उस महल में किसी मनुष्य का पता न था। राजकुमार कई कमरों में घूमता हुआ महल के मध्य भाग में पहुँचा। उसने देखा कि कमरे के मध्य भाग में एक सुन्दर चौकी रखी हुई है और उस पर कोई स्त्री मुँह ढाँप कर सोई हुई है। राजकुमार और नज़दीक पहुँचा। उसने कई बार उसके पास बैठ कर जगने की प्रतीक्षा की किन्तु बेकार। राजकुमार डरा और वह लौटना ही चाहता था कि उसकी दृष्टि चौकी पर पड़ी हुई पट्टी पर पड़ी। उसने पट्टी को पढ़ कर देखा तो उसे मालूम हुआ कि उस पट्टी पर कोई मन्त्र लिखा हुआ है, जिससे सोई हुई स्त्री की नींद बाँधी गई है। राजकुमार ने पट्टी ज़मीन पर पटक कर तोड़ दी। सोई हुई स्त्री जाग उठी। उसके सौन्दर्य से कमरा प्रकाशित हो उठा। राजकुमार उसे देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ।

किन्तु स्त्री बड़े आश्चर्य में थी। उसने राजकुमार से पूछा तुम कौन हो? राजकुमार ने अपनी पूरी कहानी कह सुनाई। सैफुल मुलूक के पूछने पर उस कुमारी ने जो अपने सम्बन्ध में बतलाया उसका सारांश यह है :—

"मैं सिंहल द्वीप की राजकुमारी हूँ। मेरी और दो बहिनें हैं। मेरी बहिनों में मेरी छोटी बहिन बहुत ही सुन्दर है। एक दिन हम तीनों बहिनें पिता-माता की आज्ञा लेकर बगीचे में घूमने गईं और वहाँ हौज़ में स्नान करने लगीं। इतने में बड़े ज़ोरों का बवण्डर उठा। आसमान धूल से भर उठा। इतने में न जाने किधर से एक जानवर आ गया।

वह अपने पंखों से को तेज़ी से चलाता हुआ मुझे लेकर आसमान में उड़ गया और मुझे लाकर यहाँ रखा। उसने मुझे झुक कर सलाम किया और कहा कि वह परियों के बादशाह का छोटा भाई है। उसका बड़ा भाई दरियाये कुलजुम (लाल समुद्र के आस-पास का प्रदेश) का शासक है। उसने यह भी कहा कि वह राजकुमारी के सौन्दर्य पर आकृष्ट है; इसीलिए वह उसे उठा लाया है। मैं किसी प्रकार उसके प्रेम को स्वीकार न कर सकी। अस्तु; उसने उस पट्टी पर कोई मन्त्र लिख कर मेरी नींद बाँध दी थी। वह वर्ष में एक दो बार आ जाता है और मुझ से प्रेम की बातें करता है। मुझे यहाँ आये हुए बारह वर्ष बीत गये और मेरे जीवन के इतने वर्ष व्यर्थ में गए।"

राजकुमारी ने यह भी बतलाया कि वह गुलिस्ताने-एरम की राजकुजारी बदी-उल-जमाल को जानती है। वह उसकी सखी है। राजकुमार को वह उससे मिलाने का प्रयत्न करेगी।

राजकुमार बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने बतलाया कि उसके पास हज़रत सुलेमान की अँगूठी है। वह उसकी सहायता से दैत्य को मार सकेगा। दोनों शीघ्रता से उस दरिया की ओर चले जहाँ वह दैत्य रहता था। सैफुल मुलूक ने ज्यों ही हज़रत सुलेमान की अँगूठी दिखलाई; दरिया से एक सुन्दर सन्दूक़ निकल आया। दोनों सन्दूक़ को उठा कर बाहर लाये। उस सन्दूक़ के भीतर जानवर के रूप में वह दैत्य था। सैफुल मुलूक ने सन्दूक़ को तोड़-फोड़ कर जानवर का सर मरोड़ दिया। चारों ओर ज़ोर-ज़ोर का बवंडर उठा। ख़ून की वर्षा होने लगी। आकाश से एक बड़ा शिर गिरा; जिससे पृथ्वी हिल गई। दैत्य अपनी जीवन-लीला समाप्त कर चुका था।

दैत्य की मृत्यु से प्रसन्न राजकुमार और राजकुमारी एक नाव पर सवार होकर सिंहल द्वीप की ओर चल पड़े। एक द्वीप में पहुँचने पर दोनों की भेंट शिकार खेलने को आये हुए कुछ आदमियों से हुई। वे आदमी राजकुमारी के चचा की प्रजा थे। राजकुमारी का चचा ताजुल मुलूक, वासित नाम के नगर का राजा था।

सैफुल मुलूक, राजकुमारी और उन लोगों के साथ वासित नगर पहुँचा। ताजुल मुलूक अपनी खोई हुई भतीजी को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ।

राजकुमारी के आने का समाचार सिंहल द्वीप भेजा गया। राजकुमारी के माता-पिता राजकुमारी को पाकर अत्यन्त प्रसन्न थे। उन्होंने सैफुल मुलूक के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

सिंहल द्वीप में सैफुल मुलूक ने कितने दिन आनन्द से बिताए। एक दिन वह घोड़े पर सवार होकर शिकार खेलने जा रहा था। उसने रास्ते में एक दुबले पतले व्यक्ति को देखा। उसकी सूरत शकल साअद से मिलती थी। सैफुल मुलूक ने अपने साथ के आदमियों से उस व्यक्ति को राजभवन में ले जाने का आदेश दिया। वह बड़ी जल्दी शिकार से लौट आया। उसने उस नौजवान को बुलाया और उसके

सम्बन्ध में पूछ-ताछ करने लगा। नौजवान की बातों से सैफुल मुलूक को मालूम हुआ कि वह उसके मंत्री का लड़का—उसका परम-मित्र साअद है; जिससे वह समुद्र में नाव डूब जाने के कारण बिछुड़ गया था। दोनों मित्र एक दूसरे से गले मिले।

उन्हीं दिनों बदीउल जमाल सिंहल द्वीप आई। राजकुमारी से मिल कर वह बड़ी प्रसन्न हुई। बदीउल जमाल ने राजकुमारी से पूछा दैत्य के हाथ से कैसे उसका उद्धार हुआ। राजकुमारी ने कहा—बातें बड़ी लम्बी और रहस्य की हैं; चलो बागीचे में चल कर बातें करेंगे।

राजकुमारी अपनी माँ और बदीउल जमाल के साथ उस बाग़ीचे में आई; जहाँ सैफुल मुलूक नित्य घूमने जाया करता था। दोनों सखियाँ आपस में बातें कर रही थीं और सैफुल मुलूक थोड़ी दूर पर बैठा हुआ कुछ गा रहा था। बदीउल जमाल सैफुल मुलूक के स्वर को सुन कर मुग्ध थी। राजकुमारी ने बतलाया कि वही उसे दैत्य के हाथ से उद्धार करने वाला है। राजकुमारी, बदीउल जमाल के साथ सैफुल मुलूक के पास आई। सैफुल मुलूक और बदीउल जमाल दोनों एक दूसरे के सौन्दर्य को देख कर अपनी सुधि-बुधि खो चुके थे।

बदीउल जमाल के लिए माता-पिता की आज्ञा प्राप्त करना आवश्यक था। उसने एक पत्र अपनी दादी के नाम लिखा; जो सीमीपटन में रहती थी। उसने वह पत्र सैफुल मुलूक को दिया और एक जिन्न के साथ उसे सीमीपटन भेजा। सैफुल मुलूक जिन्न की पीठ पर सवार होकर क्षण मात्र में सीमीपटन पहुँचा। सीमीपटन की सीमा पर आग की ऊँची लपटें उठ रहीं थीं। सैफुल मुलूक को सीमीपटन का सौदर्न्य अद्भुत लगा। सीमीपटन की भूमि ईश्वरीय ज्योति से जगमगा रही थी। ज़मीन पर कंकड़ और पत्थर के रूप में हीरे-मोती बिखरे हुए थे। नगर में एक से एक आलीशान महल बने हुए थे और उन पर जड़ाऊ कलश रखे हुए थे। महलों के चारों ओर सोने की ऊँची दीवारें थीं जिनके भीतर सुन्दर बाग़ थे। उन बग़ीचों में अमृत के समान मीठे जल से भरी हुई सुन्दर नहरें बह रही थीं।

एक महल में अखण्ड नीलम के तख़्त पर बदीउल जमाल की दादी बैठी हुई थी। उसके चेहरे से शांति और पवित्रता की ज्योति प्रकाशित हो रही थी। सैफुल मुलूक ने उसे झुक कर सलाम किया और बदीउल जमाल का पत्र उसे दिया। दादी सैफुल मुलूक के सौन्दर्य और उसकी नम्रता से बड़ी प्रसन्न हुई और उसने विश्वास दिलाया कि वह बदीउल जमाल के साथ विवाह कराने में सैफुल मुलूक की मदद करेगी।

उसने तमाम देवों को एकत्र होने का आदेश दिया और देवों की एक बड़ी सेना एवं सैफुल मुलूक को साथ लेकर गुलिस्ताने-एरम में अपने पुत्र शहबाल से मिलने के लिए चली। गुलिस्ताने-एरम के पास आकर उसने शाहज़ादे को एक

बागीचे में बिठला दिया और स्वयं साथ के देवों के साथ नगर में गई।

दरियाये कुलज़ुम का बादशाह अपने भाई के सैफुल मुलूक के द्वारा मारे जाने से बड़ा दुखी था। उसने अपनी सेना के सिपाहियों को आदेश दे रखा था कि उसके भाई को मारने वाला व्यक्ति जहाँ भी पाया जाय ज़िन्दा पकड़ कर उसके सामने उपस्थित किया जाय।

सैफुल मुलूक उस बगीचे में घूम रहा था और खिले हुए रंगबिरंगे फूलों को देख कर मन ही मन प्रसन्न हो रहा था। इतने में दरियाये कुलज़ुम के बादशाह के दूत उस बागीचे में पहुँचे। सैफुल मुलूक से बातों ही बातों में उन्हें ज्ञात हो गया कि उनके बादशाह के भाई को मारनेवाला व्यक्ति वही है। वे ज़बरदस्ती सैफुल मुलूक को पकड़ कर अपने बादशाह के पास ले गये और वहाँ वह बन्दी बना लिया गया।

बदीउल जमाल गुलिस्ताने-एरम आ गई थी। वह सैफुल मुलूक के एका-एक ला पता हो जाने से बड़ी दुःखी थी। उसने अपनी दादी शहरबानू को उसकी लापरवाही पर बड़ा बुरा भला कहा और यह भी बतलाया कि सैफुल मुलूक के बिना उसका जीवित रहना बड़ा कठिन है। शहरबानू ने अपने पुत्र शहबाल से कहा—कि यह उसके लिए बड़े अपमान की बात है कि कोई उसके राज्य से किसी व्यक्ति को बिना उसके आदेश के पकड़ मँगवावे।

शहबाल ने एक बड़ी सेना लेकर दरियाये कुलज़ुम पर आक्रमण की तैयारी की। दोनों बादशाहों की फ़ौजों में बडी भयंकर लड़ाई हुई और अन्त में दरियाये कुलज़ुम का बादशाह पकड़ा गया। शहबाल ने उससे इस शर्त पर संधि की कि वह सैफुल मुलूक को बन्दी-गृह से मुक्त कर दे।

इस प्रकार बदीउल जमाल और सैफुल मुलूक की शादी धूम-धाम से संपन्न हुई। सिंहल द्वीप के बादशाह के प्रार्थना करने पर वहाँ की राजकुमारी का विवाह साअद के साथ हुआ। कुछ दिनों तक गुलिस्ताने-एरम में रहने के बाद सैफुक मुलूक और साअद दोनों राजकुमारियों और दहेज में प्राप्त अनगिनत अमूल्य पदार्थों एवं दास-दासियों के साथ अपने देश में पहुँचे।

प्रेम गाथा की परंपरा :

उपर्युक्त कहानी को पढ़ने में स्पष्ट है कि प्रेम-गाथा की जो धारा हिन्दी के प्रेम-मार्गी शाखा के कवियों—कुतुबन, मझन और जायसी के द्वारा प्रवाहित हुई; उसका बहुत बड़ा प्रभाव दक्खिनी-साहित्य पर पड़ा। उत्तरी भारत के हिन्दी-साहित्य में यह धारा थोड़े ही समय के बाद लुप्त होती दिखाई पड़ती है किन्तु दक्खिनी में बहुत बाद तक अविच्छिन्न रूप से प्रभावित होती रही। हिन्दी के प्रेम-मार्गी शाखा के कवियों ने जिस प्रकार प्रसिद्ध प्रेम कथाओं को लेकर काव्य-रचना की उसी प्रकार दक्खिनी के बहुत से कवियों ने लोक-प्रसिद्ध कथाओं को अपनी कविता

का विषय बनाया। जायसी आदि की भाँति इन कवियों ने जो कथानक लिए; उनका सारांश इतना ही है कि कोई राजकुमार किसी राजकुमारी के सौन्दर्य की चर्चा सुन कर या उसे चित्र में देख कर उस पर आसक्त होता है और उसे पाने का प्रयत्न करता है और बड़ी कठिनाइयों के बाद उसे प्राप्त करता है। जायसी आदि सन्तों ने अपनी रचनाएं मत प्रचार की दृष्टि से की थीं। उनकी रचनाओं में परोक्ष सत्ता के प्रति कहीं कहीं संकेत इतना स्पष्ट है कि कथा की शृंखला टूटती हुई सी प्रतीत होती है। दक्खिनी के कवियों की रचनाओं में इस प्रकार का कोई संकेत नहीं है। अस्तु; उनमें स्वाभाविकता अधिक है।

कहानी की मौलिकता :

ग़वासी ने स्वयं इस बात की चर्चा नहीं की है कि उसे यह कहानी कहाँ से प्राप्त हुई। पुस्तक के प्रारंभ में कुछ अपने बारे में लिखते हुए ग़वासी ने लिखा है कि एक दिन वह प्रातःकाल के समय बाग़ में घूमने गया था। हरे भरे वृक्षों पर सुन्दर फूल खिले हुए थे। ठंढी हवा बह रही थी। उस प्राकृतिक सौन्दर्य को देख कर अचानक उसके मनमें आया कि उसे कोई ऐसा काम करना चाहिए; जिससे उसका नाम अमर हो जाए। अचानक उसे अन्तःकरण में यह प्रेरणा हुई :—

"कि सैफुल मुलूक हौर बदीउल जमाल
यू दोनों हैं आलम मने बेमिसाल

उनन दुइ का दास्ताँ खोल तूँ
सो दफ़तर उनन इश्क़ का खोल तूँ

कि कई दास्ताँ जग में हो गए अहें
वले कोई ऐसा नहीं कए अहें"

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि ग़वासी ने इस बात को स्वीकार किया है कि सैफुल मुलूक और बदीउल जमाल की कहानी एक प्रसिद्ध कहानी है और कहानी का कथानक उसकी मूल कल्पना नहीं है।

वस्तुतः सैफुल मुलूक और बदीउल जमाल की प्रेम कहानी अलिफ लैला की एक प्रसिद्ध कहानी है। पंचतंत्र; हितोपदेश एवं कथासरित्सागर की कहानियों की भाँति अलिफ़ लैला की कहानियाँ विभिन्न देशों में लोक कथाओं के रूप में प्रचलित हैं। इन कथाओं का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ है या उन कथाओं के आधार पर कहानियाँ लिखी गई हैं। विलियम हार्ट ने अलिफ़ लैला के विभिन्न भाषाओं में अनुवादों की चर्चा करते हुए लिखा है कि ग़वासी ने अपनी इस मसनवी की कथा "सैफुल मुलूक" नाम की एक फ़ारसी गद्य की पुस्तक से लिया है। यह पुस्तक

इंडिया आफ़िस और ब्रिटिश म्यूजियम के पुस्तकालयों में उपलब्ध है। इस पुस्तक के लेखक का पता नहीं है। पुस्तक के प्रारंभ में जो भूमिका दी गई है; उसका सारांश निम्नांकित है :—

सुल्तान महमूद ग़ज़नवी को कहानियों के सुनने का बड़ा शौक़ था। जो कोई एक दिलचस्प कहानी पेश करता; वह इनाम पता। सुल्तान का वज़ीर इस प्रकार धन लुटाए जाने से बड़ा परेशान था; उसने स्वयं एक दिलचस्प कहानी उपस्थित करने का निश्चय किया।

वज़ीर एक वर्ष का अवकाश लेकर घूमने के लिए निकला और दमिश्क़ के बादशाह के दरबार में पहुँचा। वहाँ उसे पता चला कि बादशाह के पास एक कहानियों की पुस्तक है; जिसमें बहुत सी दिलचस्प कहानियाँ संग्रहीत हैं। उसने बड़ी कठिनाई से उस पुस्तक को प्राप्त किया और उन कहानियों को सुल्तान महमूद के सामने उपस्थित किया। उस पुस्तक में तीन कहानियाँ थीं :—(१) बोस्तान एरम; (२) सैफ़ुल मुलूक और (३) शाहपाल बिनशाह रुख़ की कहानी।

उपर्युक्त कहानी का कोई ऐतिहासिक महत्व हो या न हो उससे इतना पता अवश्य चलता है कि जिस लेखक ने फ़ारसी गद्य में सैफुल मुलूक की कहानी लिखी; उसे भी यह कहानी किसी अन्य पुस्तक से प्राप्त हुई।

कुछ लेखकों ने संभवतः विलियम हार्ट के कथन के आधार पर इस बात को स्वीकार कर लिया है कि ग़वासी ने सचमुच अपनी इस मसनवी का कथानक फ़ारसी गद्य में लिखी उपर्युक्त पुस्तक से लिया। उन्होंने इस बात के लिए ग़वासी की काफ़ी लानत-मलामत भी की है कि उसने अपनी रचना में न उस पुस्तक की चर्चा की है और न उसके लेखक के प्रति कोई कृतज्ञता व्यक्त की है; जिस पुस्तक से उसने अपनी मसनवी का कथानक लिया है।

वस्तुतः ऐसा प्रतीत होता है कि ग़वासी को इस कथानक का थोड़ा बहुत रूप लोक कथाओं के रूप में प्राप्त हुआ होगा और उसने पुनः अपनी प्रतिभा से उसे साहित्यिक रूप दिया होगा। सैफुल मुलूक के कथानक की जो फ़ारसी गद्य की प्रति उपलब्ध है; उसमें एवं ग़वासी की इस मसनवी के पात्रों के नाम एवं कथानक के रूप में भी स्थान स्थान पर बड़ा अन्तर है। अस्तु; केवल विलियम हार्ट के कथन के आधार पर ग़वासी की इस मसनवी को किसी दूसरी पुस्तक का अनुवाद-मात्र मान लेना ग़वासी और उसकी प्रतिभा के प्रति बड़ा अन्याय होगा।

उपलब्ध-प्रतियाँ :

१—सालारजंग म्यूजियम; हैदराबाद के पुस्तकालय में सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल की तीन हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध हैं :—

(क) पहली प्रति ८×६ इंच आकार की है। इसमें शेरों की संख्या १८२२ है।

देखने में प्रति पूर्ण मालूम होती है, किन्तु बीच-बीच में अन्य प्रतियों में प्राप्त कुछ शेर नहीं हैं। पुस्तक में सम्पादक और संपादन काल के सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा है किन्तु अक्षरों की बनावट और लिखने के ढंग से पता चलता है कि प्रति पुरानी है।

(ख) दूसरी प्रति क्राउन साइज़ की है। इसमें शेरों की संख्या १८७२ है। पुस्तक में सम्पादन-काल १०६७ हिजरी लिखा है। पुस्तक में सम्पादक का नाम नहीं है।

(ग) तीसरी प्रति डेमी साइज़ की है। इस प्रति में तीन पुस्तकें एक साथ सम्पादित की गई हैं। पहले मुक़ीमी की रचना चन्दन बदन महरयार; उसके बाद आजिज़ की रचना लैला-मजनूँ और अन्त में ग़वासी की सैफ़ुल मुलूक व बदीउल जमाल संपादित है। पुस्तक के अन्त के कुछ पृष्ठ नहीं हैं अस्तु; सैफ़ुल मुलूक का अंश पूर्ण नहीं है। इस प्रति का संपादन करने वाला रहमतुल्ला नाम का कोई व्यक्ति था; जो दिल्ली का रहने वाला था किन्तु पुस्तक का संपादन उसने औरंगाबाद में रह कर किया। सम्पादन काल ११५७ हिजरी है।

२—निजाम कालेज हैदराबाद के रिटायर्ड उर्दू प्रोफेसर श्री आगा हैदर हसन साहब के पुस्तकालय में भी सैफ़ुल मुलूक की एक प्रति मौजूद है। इस प्रति में भी नुसरती के 'गुलशन-इश्क' और 'सैफ़ुल मुलूक' दोनों का सम्पादन एक ही पुस्तक में किया गया है। इस प्रति का सम्पादक दक्खिनी का प्रसिद्ध कवि वज्दी है, जिसकी 'पंछीबाचा' नाम की रचना उपलब्ध है। इस प्रति में वज्दी के लिखे कुछ शेरों से पता चलता है कि उसने इस प्रति का संपादन इस्माइलखां नाम के किसी व्यक्ति के कहने पर ११३८ हिजरी में किया।

३—इदारे अदबियाते उर्दू; हैदराबाद के पुस्तकालय में इस पुस्तक की एक प्रति है। इस प्रति में ११४ पृष्ठ हैं; प्रत्येक पृष्ठ में १३ पंक्तियाँ हैं। पुस्तक ७३/४×४३/४ इंच आकार की है। पुस्तक का सम्पादक ज़ैनुल् आबदीन हुसेनी ने १२२६ हिजरी में किया।

४—उपर्युक्त प्रतियों के अतिरिक्त "यूरोप में दक्खिनी मखतूतात" के लेखक श्री नसीरुद्दीन हाशमी ने योरोप के पुस्तकालयों में प्राप्त कुछ और प्रतियों की चर्चा की है:—

(क) "सैफ़ुल मुलूक व बदीउल जमाल" की एक प्रति इंडिया आफ़िस के पुस्तकालय में सुरक्षित है। इस प्रति का संपादक अज़ीजुल्ला नाम का व्यक्ति है और इसका संपादन काल ११३३ हिजरी है।

(ख) पुस्तक की दूसरी प्रति ब्रिटिश म्यूज़ियम पुस्तकालय के ओरियंटल विभाग में है। इस प्रति का संपादन काल ११५६ हिजरी है। संपादक के नाम का

पता नहीं है ।

(ग) केम्ब्रिज विश्व विद्यालय के पुस्तकालय में इस पुस्तक की दो प्रतियाँ उपलब्ध हैं । इन प्रतियों के संपादन काल एवं संपादक का पता नहीं ।

५—उपर्युक्त हस्तलिखित प्रतियों के अतिरिक्त यह पुस्तक दो स्थानों से फ़ारसी लिपि में प्रकाशित हो चुकी है :—

(क) सन् १८७१ में यह पुस्तक हैदरी प्रेस; बम्बई की ओर से प्रकाशित हो चुकी है ।

(ख) हैदराबाद में नवाब सालार जंग की संरक्षता में कुछ विद्वानों की एक उपसमिति बनी । उस उपसमिति ने इस पुस्तक को प्रकाशित किया है । पुस्तक सन् १९४६ में प्रकाशित हुई और इसका संपादन श्री मीर सआदत अली रिज़वी ने किया है ।

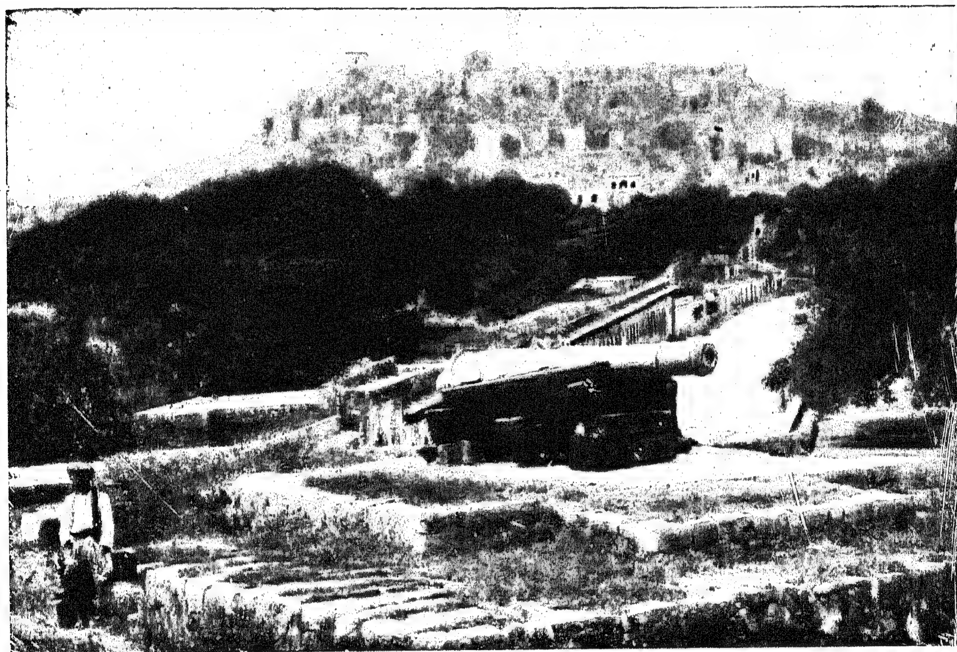
प्रस्तुत पुस्तक का संपादन दोनों छपी हुई पुस्तकों और इदारे अदबियाते उर्दू के पुस्तकालय में प्राप्त प्रति के आधार पर किया गया है । हम इन पुस्तकों के संपादकों के आभारी हैं ।

पुस्तक में कुछ स्थानों पर प्रूफ की अशुद्धियाँ रह गई हैं । भाषा पुरानी होने के कारण संभव है कुछ और त्रुटियाँ रह गई हों; हम उनके लिए क्षमा प्रार्थी हैं ।

हैदराबाद (दक्षिण)
२१ दिसम्बर; ५४

राजकिशोर पाण्डेय
अकबरुद्दीन सिद्दीक़ी

विषय–सूची



गोलकुण्डा



मुल्ला ग़वासी

हम्द[1]

इलाही जगत का इलाही सो तूँ
करनहार जम[2] बादशाही सो तूँ

तेरे हुक्म तल नौ गढ़[3] आसमान के
रैय्यत मलक[4] तेरे फ़रमान के

भरया तिस गढ़ाँ बीच तारे हशम[5]
करें नौबताँ[6] सूँ उलंग[7] दम बदम

फ़रंग्याँ[8] सूँ बिजल्याँ के रुचसाज़[9] तूँ
ज़ुहल[10] कूँ रख्या कर फ़रंगदाज़[11] तूँ

जहाँ लग जो बादल के हैं गड़गड़ात
तेरी फ़तह[12] दौलत दमामे के ठाट

हती[13] तेरे दरबार के फाड़[14] सब
छड़ीदार तुज[15] दार[16] के भाड़ सब

जो बारह इमामाँ हैं उन पर सलाम
सो बारह सिलहदार[17] तेरे मुदाम[18]

नब्याँ हौर बाज़े वल्याँ हैं जिते
तेरे दार के सरगुरू[19] हैं विते[20]

तेरी बादशाही को कुछ अन्त नईं
तेरे मुल्क में ग़ैर को पन्त[21] नईं

---

१ ईश्वर की स्तुति २ हमेशा ३ इस्लाम के अनुसार आसमान के ६ खण्ड ४ फरिश्ते ५ शान शौकत वाले ६ बारी बारी से ७ लाँघना, छलाँग मारना ८ तलवार ६ रुचि के साथ सजाना १० ग्रह विशेष (शनिश्चर) ११ सिपाही १२ फ़तह की दौलत, विजय का धन, विजय के बाद बजने वाले बाजे १३ हाथी १४ पहाड़ १५ तुम्म; तुम्हारे १६ द्वार १७ सन्तरी १८ हमेशा १६ बड़ा दर्जा रखने वाले २० उतने ही २१ पन्थ, रास्ता ।

खज़ीने[१] भरया ग़ैब के ग़ैब ते[२]
हुआ तूँ अपे[३] पाक फिर ऐब ते

बसाया है तिर्जग[४] का एक हाट तूँ
दिखाया हर एकस[५] कूँ एक बाट तूँ

खुलाया जनत की किवाड़ाँ तुहीं
बँधाया शफ़क़[६] के पहाड़ाँ तुहीं

चँदा में ते तूँ चन्दना काढ़ता
सूरज ते गरम धूप तूँ पाड़ता[७]

दिखाता तमाशे अजब दूर थे
दिपाता[८] है लख नूर एक नूर थे

हरया कर रख्या तूँ जमीं सात कूँ
दिया रंग फल फूल हौर पात कूँ

नवे फूल डाल्याँ पे बार आई सो
वो तशरीफ़[९] है तुज कने पाई सो

जो कुछ तूँ करे सो सरे[१०] जम तुझे
सदा सेवे मिल सात आलम तुझे

ग़वासी जो तुज दार का खाक है
तेरी बाट का महज़ खाशाक[११] है

दिखा कीमियाँ कर तूँ मुझ खाक कूँ
दे रंग बास मुज दिल के फल फाँक कूँ

---

१ ख़ज़ाना २ ग़ैब के ख़ज़ीने ग़ैब ते भरया—बहुत से ऐसे ख़ज़ाने, जो लोगों को मालूम न थे, उन्हें अनजाने ढंग से तू ने भर दिया है। ३ आप, स्वयं, ख़ुद ४ त्रिजग, तीनों लोक ५ हर एक को ६ प्रातःकाल और सायंकाल आकाश की लालिमा ७ (मराठी) निकालना ८ दीप्त करता, प्रकाशित करता ९ ख़िल्लत, बादशाह की ओर से इनाम के रूप में प्राप्त हुआ लिबास १० मुनासिब ११ तिनका।

दुआ

रहीमा सचा तूँ ग़नी[1] होय रे
ग़नी तुज बग़ैर[2] अज़ नहीं कोय रे

तूँ मक़बूल[3] है मुक़बिलाँ[4] का सचीं
तू ही नूर रौशन दिलाँ का सचीं

जो कोई ज़िन्दा दिल है तूँ उनका हयात[5]
जो कोई होवे तुज साथ तूँ उनके सात

जो हूँ या इलाही तेरा दास मैं
किया हूँ बहुत एक तेरी आस मैं

तूँ मुज दास पर खोल दर[6] फ़ैज़[7] का
मेरे मन मनें[8] भर असर फ़ैज़ का

तरावत[9] दे मुज आस[10] के बाग़ कूँ
दवा बख्श मुझ दर्द के दाग़ कूँ

वफ़ा में बड़ा कर जवाँमर्द मुज
तेरे बाट का करके रख गर्द मुज

अता कर मुझे कुच तेरे नावँ सूँ
दे परवाज़ मुजकूँ बलन्द धावँ[11] सूँ

तेरे नूर की रह दिखाना मुझे
दिला अक़ेबत का बिछाना मुझे[12]

जिलादे मेरे जीव की आग कूँ
दे रंग बास मुज दिल की फल फाँक कूँ

---

१ जिसे किसी चीज़ की आवश्यकता न हो २ तेरे सिवा ३ प्राप्त ४ भक्त ५ जीवन ६ दरवाज़ा ७ कृपा ८ में ९ तरावट १० आशा का बाग़ ११ ऊँचा धाम, ऊँची जगह, मन की ऊँची स्थिति १२ दिला........मुझे—क़यामत के समय आराम का बिछौना दे।

सदा कस्ब[1] मेरा सो एख़्लास[2] कर
तेरे ख़ास बन्दों में मुज ख़ास कर

जका[3] जोत तुज ध्यान केरा रतन
मेरे मन के सन्दूक़ में रख जतन

हुमाँ[4] कर मुजे बाट के औज का
शहंशाह कर ज्ञान की फ़ौज का

मसीहा का दे मुजकूँ आसार जम[5]
मेरी जीब कूँ कर शकर[6] बार जम

भर अमृत के चश्मे मेरे किल्क[7] में
रतन ग़ैब के ल्या मेरे सिल्क[8] में

जो ग़वास हो तुज सराता[9] अछूँ
नवे मज़मुना धुन्द[10] ल्याता अछूँ

ब हक़्क़े[11] नबी है जो तेरा रसूल
मुनाजात[12] ग़व्वास का कर क़बूल

---

१ प्राप्त किया हुआ २ मुहब्बत से प्राप्त करने दे ३ जगा ४ एक विशेष पक्षी, जिसके सम्बन्ध में विश्वास है कि उसकी छाया जिस पर पड़ जाती है, वह बादशाह हो जाता है। ५ मसीहा......आसार जम—मुझे मसीहा की शक्ति दे ६ मिठास बरसाने वाली ७ क़लम ८ लड़ी; विचारों की लड़ी ६ तेरी सराहना करता रहूँ १० ढूँढ़ना ११ नबी के नाम पर १२ प्रार्थना।

नात[1]

सचा तूँ मुहम्मद सचा मुस्तफ़ा
सचा है तूँ अहमद सचा मुरतुज़ा[2]

तूँ ताहा तूँ यासीन तूँ अबतही[3]
तूँ उम्मी[4] तूँ मक्की[5] तूँ मुरसिल[6] सही

तूँ अव्वल तूँ आख़िर[7] तू ही है अमीर
तूँ ज़ाहिर तूँ बातिन[8] नबी बे नज़ीर

तुही हाशमी हौर क़ुरैशी[9] रसूल
जो[10] कुछ तूँ कहे सो करे रब क़ुबूल

तूँ क़ायम तूँ हुज्जत[12] तूँ हाफिज सचा
तूँ शाफ़े[11] तूँ साबिक़ तूँ वायज़[12] सचा

तक़ी[13] हौर सख़ी तूँ वली हौर ख़लील[14]
दिया तुज नबी नाँव ख़ुउल् जलील

ख़ुदा के नब्याँ[15] का सो सुल्तान तूँ
देवनहार साऱ्याँ कूँ ईमान तूँ

तूँ साहब सचा है जगत तीन का
सदा तुज थे मामूर[16] घर दीन का

तूँ ज़ाहिर तूँ पिन्हा[17] अछे सब सिते[18]
वले[19] हर कड़ी मिल अछे रब सिते

---

१ पैग़म्बर की तारीफ़ २ मुहम्मद, मुस्तफ़ा, अहमद, मुरतुज़ा, ताहा, यासीन—पैग़म्बर के नाम ३ बतहा, मक्का का पुराना नाम है। मक्का में रहने वाले को अबतही कहेंगे। ४ जिस को पढ़ने लिखने की आवश्यकता न हो ५ मक्का का रहने वाला ६ रसूल, ख़ुदा का संदेश पहुँचाने वाला ७ मुहम्मद साहब के लिए यह विश्वास है कि वे सृष्टि में सर्व-प्रथम पैदा हुए तथा ये सभी पैग़म्बरों में अन्तिम पैग़म्बर हैं ८ अप्रत्यक्ष ९ मुहम्मद साहब का ख़ानदानी नाम १० प्रमाण ११ क़यामत के समय अच्छे लोगों के सहायक १२ शिक्षा देने वाला १३ परहेजगार १४ दोस्त १५ नबी का बहुवचन १६ आबाद १७ अप्रत्यक्ष १८ से १९ लेकिन।

जमीं से अरश[1] पर गए शह सवार
करे तूँ गुज़र पल में कई लाक बार

मलायक[2] यू परवाना तुज नूर के
वल्याँ सारे ज़र्रें हैं तुज सूर के

तलब का जो सर पर रख्या ताज तूँ
दिया तिल में जा नूर मेराज[3] तूँ

खुदा हौर तुज में जुदाई नहीं
किसे रब सूँ यूँ आशनाई नहीं

हतेली तेरा लौह[4] उँगली क़लम
तेरी मुश्त में अर्श कुर्सी है जम

खुदा का जो आलम है, हेजदाहज़ार[5]
रख्या है तरे छाँव तल बरक़रार

तू जिस ठाँव अपना रखे पाँव तूँ
तो दर हाल जिव आवे उस ठार कूँ

ज़बाँ देवे तू बेज़बानाँ के तईं
फ़रह-बख़्श[6] जीवाँ के कानाँ के तईं

तुही मौजज्याँ[7] कूँ सो दिखलान हार
तुही सब कूँ जन्नत में लेजानहार

ग़वासी जो सबका है तुज नाँव पर
फिदा जिव है उसका तेरे पाँव पर

नबी के अबाबक्र[8] असहाब हैं
सो दूसरे उमर इब्ने-खत्ताब हैं

सो उस्माँ नबी के बड़े यार हैं
हमेशाँ वो उनके वफ़ादार हैं

---

१ आठवाँ आसमान, खुदा का स्थान २ फरिश्ते ३ यह विश्वास है कि मुहम्मद साहब खुदा के पास गये और सातों आसमान की सैर करके बहुत थोड़ी देर में वापिस आगये। मुहम्मद साहब का यह पूरा काम मेराज कहलाता है। ४ स्लेट ५ अठारह हज़ार ६ खुशी देनें वाला ७ करामत ८ अबावक्र, उमर इब्ने खत्ताब, उस्मान पहला दूसरे और तीसरे खलीफा।

हज़रत अली की तारीफ़ में

तूँ है सात जग का वली या अली[१]
वल्याँ तेरे जग के कुली या अली

जो कोई ग़ौस है कुतुब अक़ताब हैं[२]
जो कोई जलालत[३] के असहाब[४] हैं

वो हैं खाक हो जम तेरे पाँव तल
करें ज़िन्दगानी तेरे छावँ तल

धरत गुम मुठी में तेरे यूँ दिसे
कि दो मग़ज़[५] बादाम में ज्यों दिसे

कि तूँ वो कलीम[६] आज मग़रूर है
जो खाँदा[७] नबी का तेरा तूर[८] है[९]

जो सीमुर्ग़ है क़ाफ़ टारा उसे
तेरा याद दायम है चारा उसे[१०]

पहाड़ाँ तेरे दास कहवावें सब
"चल आवे" कहे तूँ तो चल आवें सब

दिखावे जलालत के जो धात तूँ[११]
भरे ल्या घड़ी में समन्द सात तूँ

तिल उतना ग़ज़ब कर जो तूँ दूर होय
भँडोली नव अंबर की फट चूर होय

---

१ चौथे ख़लीफ़ा २ सन्तों के विभिन्न प्रकार ३ बुजुर्गी ४ साहब का बहु वचन ५ बादाम के भीतर का बीज ६ मूसा पैग़म्बर दूसरा नाम ७ कन्धा ८ एक विशेष पहाड़, जिस पर ख़ुदा ने अपना 'नूर' गिराया, जिसे देख कर मूसा बेहोश हो गए। ९ तुममें मूसा के मुक़ाबिले में भी इस बात का गौरव हासिल है कि मूसा तो ख़ुदा के नूर को न देख सके किन्तु तुम नबी के कन्धे पर रहकर ख़ुदा के नूर को देख सके। १० जो सीमुर्ग़ काल्पनिक पक्षी है, वह भी तेरी याद के बिना जीवित नहीं रह सकता। ११ जलालत के घात दिखाना—शक्ति प्रदर्शन करना।

खड़ा होय अगर हठ सों एक साथ तूँ
न फिरने देवे दीस[१] हौर रात कूँ

भुजंग धरत सों आ निकल ख़ाक थे
रह्या भार ले सर पे तुज धाक थे

करामत थे तेरे कंकर फाड़ होयँ
सुकी डालियाँ सब हरे झाड़ होयँ

विलायत के आसमान थे भार ज्यों
तेरा खर्ग निकल्या सूरज-सार ज्यों[२]

चन्दर तारे दहशत सों छुप गए तमाम
सेह्[३] मक्र[४] करने थे सब रहे तमाम

गगन जो अहे नाग फन सात का
पड़े ज़र्द[५] उस पर जो तुज हात का

सो सातों फन उसके पड़े टूट कर
जमीं टुकड़े हो जाये सब फूट कर

कि फिर झाड़ गुल बर जमीं तुज को आये
शुजाअत[६] तेरा सुन मलक गड़बड़ाये

जो सब ठार तेरी दुराही[७] चले
सभी खन में तेरी जो शाही चले

जो कोई तुज विलायत मने शक जो लाय
वो बेशक जो दोज़ख़ के दरम्यान जाय

फ़िदा या अली मैं तेरी बाट पर
सटूँ[८] खारजाँ[९] की मुड्याँ काट कर

---

१ दिवस २ विलायत......सार ज्यों—वली की विशेषताओं के आसमान में तूँ सूर्य के समान प्रकट हुआ है। ३ (अरबी) जादू ४ धोखा ५ मार ६ बहादुरी ७ हुकूमत ८ (मराठी) फेंकदूँ ९ अली के विरोधी।

करूँ विर्द[1] अपना तेरा नावँ मैं
दुन्याँ दौलताँ ग़ैब थे पाउँ मैं

बदन पर करूँ जीब हर बाल कूँ
सराऊँ सदा तुज नवल लाल कूँ

रहूँ तुज थे जग में सरफ़राज़[2] हो
सदा तुज हवा में उडूँ बाज़ हो

तेरी पन्थ की धूल अंजन करूँ
दरद दुःख कूँ एकधर[3] थे भंजन करूँ

रहूँ तेरे बन्दयाँ मने खास हो
तेरी मदह्[4] दरिया में 'ग़व्वास'[5] हो

नज़र कर करम की तूँ मुँज पर मुदाम
तुज ऊपर हज़ाराँ दुरूद हौर सलाम

जो बाराँ इमामाँ बड़े राज हैं
चमामें[6] उनों को मेरे ताज हैं

तहय्यात[7] उनके उपर लाक-लाक
मुख़ालिफ़ उन्हों के अछो जम हलाक

१ विरद, यश २ सम्मानित हो ३ एक दम ४ तारीफ़ की मदी ५ गोताख़ोर, कवि का नाम ६ जूते ७ दुआ के शब्द ।

मीराँ मुहीउद्दीन की तारीफ़ में

क़सम खाऊँ मैं सूरयेयासीन[1] सूँ
कि हक़ बाद है जीव मेरा तीन सूँ[2]

हिमायत जो मुज बस अहे तीन का
मुहम्मद, अली हौर मुहीउद्दीन का

कि यू तीन सो एक हैं; दुई नईं
दो देखे सो अहवल[3] बिना कोई नईं

वल्याँ में वली सो मुहीउद्दीन हैं
मुक़र्रब[4] वली सो मुहीउद्दीन हैं

मुहिब्बाँ[5] जिते हैं सगल[6] तालिबाँ[7]
यू महबूब के हैं वो सब मतलुबाँ[8]

तुहीं ग़ौस[9] आज़म सो मशहूर है
चिराग़े नबी का तुँही नूर है

ख़ुदा के सो है शेर का शेर यू[10]
धरे सब मने तेज़ शमशीर यू

कि इस बात शाहिद[11] है बन्दा नवाज़
मुहम्मद हुसेनी है गेसूदराज़[12]

मुही उद्दीन का क़द्र उनों फ़ाम अपें
कहे है नवद हौर नुह नाम अपें[13]

---

१ कुरान का एक अध्याय २ कि हक़ बाद......तीन सूँ—ख़ुदा के बाद मैं इन तीन आदमियों को चाहता हूँ। ३ (अरबी) जिसको कोई चीज़ दो नज़र आती है ४ जो ख़ुदा के पास पहुँच चुके हैं। ५ दोस्त ६ (मराठी) सब ७ ढूँढने वाले ८ चाहने वाले ६ मुहीउद्दीन का दूसरा नाम १० ख़ुदा......शेर तूँ—हज़रत अली शेरे ख़ुदा कहे जाते हैं, तुम उनके शेर हो। ११ गवाह १२ बन्दा नवाज़, मुहम्मद हुसेनी, गेसू दराज़ दक्षिण के एक बड़े फ़क़ीर, जिनकी समाधि गुलबर्गा में हैं, उनका नाम तो मुहम्मद हुसेनी था और 'गेसूदराज' और 'बन्दा नवाज' उनकी उपाधियाँ हैं। १३ मुहीउद्दीन......नाम अपें—मुहीउद्दीन की क़द्र वही लोग जान सकते हैं, जो ख़ुदा के निन्यानवे नामों से परिचित हैं।

जो कोई जो मुही उद्दीन सूँ फिर पड़े
टुटे गर्दन उसकी तलें सर पड़े

उसे छोड़ जो कोई मँगे दीन कूँ
नहीं दीन व ईमान उस हीन कूँ

न उसको ख़ुदा ना मुहम्मद अली
दिवाना कुत्ता हो फिर हर गली

जो कोई एक दिल है मुही उद्दीन सूँ
सरअफ़राज़[1] है वो दुनियाँ दीन सूँ

अछे जिस थे ख़ुश यू वल्याँ का वली
ख़ुश उसथे ख़ुदा हौर मुहम्मद अली

कहे ग़ैन हौर वाव अलिफ़ स्वाद ये[2]
मुही उद्दीनियाँ कूँ अछे याद ये

जहाँ लग मुही उद्दीनियाँ[3] हैं तमाम
हैं मक़बूल अल्लाह के वस्सलाम

---

१ इज्जत वाला २ कहे ग़ैन......ये—ग़वास; कवि का नाम ३ मुहीउद्दीन के अनुगामी ।

सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह की तारीफ़ में

सो सुल्ताँ मुहम्मद कुतुबशाह गम्भीर
जग आधार है हौर जग दस्तगीर

चँदा चौंदवाँ ख़ुशरवी बुर्ज का[1]
अमोलक रतन हुस्न के दुर्ज[2] का

सगल पादशाहाँ में उसका है नाँव
उसी कुतुब का कुतुब तारा है छाँव

सुलेमाँ[3] के जो तख़्त का नाँव है
अता शह कूँ वो तख़्त का ठाँव है[4]

पर्‌याँ देव आवें वतन छोड़ सब
खड़े हो रहें डरते हत जोड़ सब

नित इस शह के सेवक हों सेवें तमाम
देखन शाह कूँ यूँ कहलेवें तमाम

"मगर फिरके दुनियाँ में औतार हो
सुलेमान आया तख़त सवार हो

अजब क्या जो शाहाँ मिल आवें तमाम
सो बन्दगी का खत[5] देके जावें तमाम

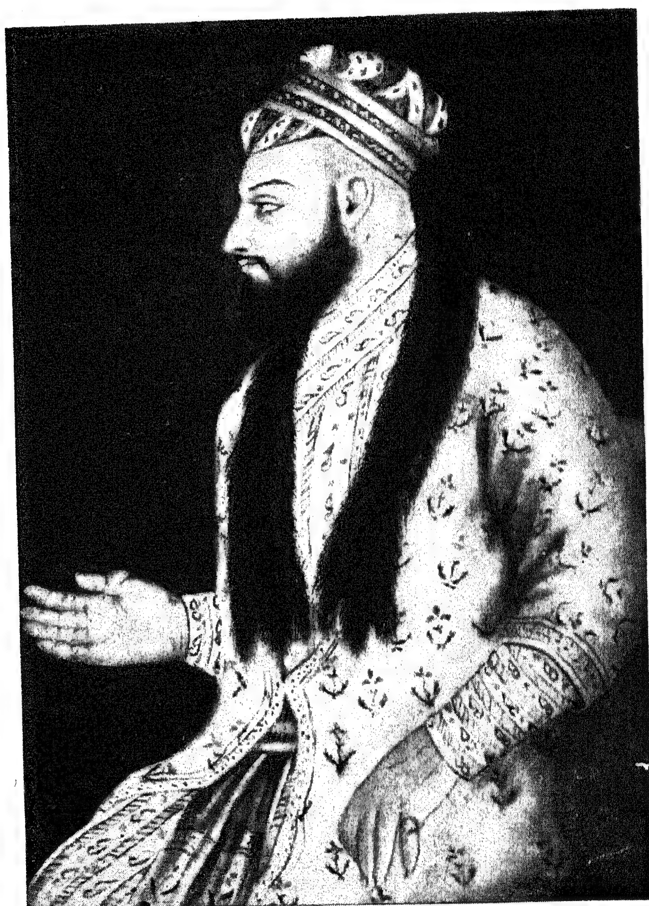
जलालत भर्‌या हाल देख शाह का
कलजा फटे मेह्‌ हौर माह[6] का"

---

१ चँदा चौंदवाँ......बुर्ज का—बादशाहत के आसमान में मुहम्मद कुतुब शाह चौदहवें चाँद के समान हैं। २ रत्न रखने की डिबिया ३ इस्लाम के एक पैगम्बर; जिनका तख्त बड़ा मशहूर है। कहा जाता है कि हजरत सुलेमान जहाँ जाते थे, जिन्न और परी उसे ले जाते थे क्यों कि वे उन की रियाया थे। ४ अता......ठाँव है—मुहम्मद कुली कुतुब शाह को हज़रत सुलेमान का वही तख्त मिला है। ५ बन्दगी का ख़त देना, गुलामी का दस्तावेज़ लिखाना ६ सूरज और चाँद।



अब्दुल्ला कुतुबशाह



इब्राहीम कुतुबशाह

किये अद्ल[1] यू शह हर एक ठाँव सूँ
कि नवशेरवाँ का छिया नाँव सूँ

दिलेराँ सो हैबत थे हलते डरें
गवूयाँ[2] में थे शेराँ निकलते डरें

इसी शह दिलावर के डर वास्ते
सितारे खड़े हो न सक न्हासते[3]

अगर शह जो फ़रमावे एक तार कूँ
चलाता लेकर आवे संसार कूँ[4]

वचन सुन के याजूज[5] शह धाक ते
छुपा जाके पाताल में ख़ाक ते

कुवत शह का पाकर मखी सारकी[6]
थपेड़ाँ सो रुस्तम के मुख मारती

हिमायत सो शह आदिल का पावकर
अदल जा वतन कर रह्या आव पर

दिसे शह कूँ यूँ हात तेग़ आवदार
कि हैदर के ज्यूँ हात में ज़ुल्फ़क़ार[7]

जम उस शह कूँ यू कामरानी[8] सजे
अदालत में नौशेरवानी सजे

अगर इल्म की बात पूछे जिसे
अँदाजा नहीं मारते दम किसे[9]

कि हैं शह को रोशन गुपुत राज़ सब
छुपे ग़ैब के जो हैं आवाज़ सब

---

१ इन्साफ़ २ शेर की माँद ३ भाग नहीं सकते ४ अगर......संसार कूँ—अगर बादशाह एक तार को भी हुक्म दे दे तो वह संसार को खींच कर लायेगा। ५ एक फ़रिश्ते का नाम है, जो गुनाह करने के कारण पाताल में उल्टा लटका दिया गया है। ६ सरीखी ७ हज़रत अली की तलवार का नाम ८ कामयाबी ९ अगर......किसे—बादशाह इतना बड़ा आलिम है कि उसके सामने कोई आलिम होने का दावा नहीं कर सकता।

अगर कोई लेवें गूँद[1] कुच दिल मनें
कहे खोल शह फाम[2] कर तिल मनें

मँगे दिल जो टुक शाहे गंभीर का
पवन पर बँधावे महल नीर का

लटकता जो शह जावे जिस ठाँव चल
हवा आ पड़े फर्श हो पाँव तल

अँबर सात जो गिर्द घेरे अहें
सो शह के रँगारंग[3] डेरे अहें

रज़ा शह की होवे ज़रा चूर का
लेवे तिल मनें तख़्त चन्द सूर का

ख़ज़ीने जो हैं शह के भर पूर हो
जवाहिर के हैं ऐव सन्दूर[4] हो

जिता उस खरचते तो सरता[5] नहीं
जिता ल्याके भरते तो भरता नहीं

न ऐसा कहीं शाह सुजान है
न ऐसा दिलावर कहीं ज्वान है

न शह सार सूरज किस असमान में
न शह सा रतन है किसी खान में

फिदा शह पे चन्द सूर असमान के
जिते हैं रतन जग केरे खान के

ग़वासी जो शायर है शह का मुदाम
करे यूँ दुआ शाह कूँ सुबह-शाम

जहाँ लग यूँ दुनियाँ बसन-हार है
जहाँ लग यूँ अंबर निराधार है

१ सोचना २ मालूम करके ३ रंग-बिरंग के ४ समुद्र ५ ख़तम नहीं होता ।

जहाँ लग अहो शह की शाही क़रार
रखे अमन सूँ शह कूँ परवरदिगार

अहो दोस्ताँ शह के शह दाँव तल
दन्दे[1] हौर सब दुशमनाँ पाँव तल

कि शह घर सदा ऐश का काज अछो
बसे लग दुन्याँ शाह का राज अछो

---

१ द्वन्द्व रखने वाले; प्रतिद्वन्दी ।

सुखन[1] की तारीफ़

कलम काफ़ व नूँन थे जो निकला बहार
सो पहले बचन कूँ किया आशकार[2]

बचन का पड़ा नाद सरों मने
किया ठार आ जीव के तन मने

जो कुछ राज़ पर्दे में हैं ग़ैब के
जो कुछ हैं छिपे भेद लारैब[3] के

विते सब बचन में समाते अहें
बचन में च थे भार आते अहें

बचन थें सदा जीव कूँ रूच है
बचन तेच भरपूर सब कूच है

बचन अर्शकुर्सी[4] पोथे[5] धाए हैं
बचन आदमी के बदल आए हैं

बचन का फ़ज़ीलत[6] जम ऊँचा अहे
बचन के न कोई हद का पहुँचा अहे

बचन का अहे गर्म बाज़ार जम
बचन कूँ पुरोहे हर एक ठार जम

बचन तेच होवे ख़ुदा का सिफ़त
बचन ते होवे नात[7] और मनक़ेबत[8]

बचन ते शहाँ कूँ सराते अहें
बचन तेच बहु मान पाते अहें

---

१ बचन, कविता २ क़लम......आशकार—क़लम जब अस्तित्व में आई तो उससे कविता निकली। ३ (अरबी) इसका शाब्दिक अर्थ है, जिस में कोई सन्देह न हो। यहाँ ख़ुदा के लिए इसका प्रयोग किया गया है। ४ आठवाँ आसमान, जहाँ ख़ुदा रहता है। ५ पर से ६ बुज़ुर्गी महत्व ७ पैग़म्बर की तारीफ़ ८ फ़क़ीर और महात्माओं की तारीफ़।

बचन ते सवालाँ जवाबाँ होवें
बचन ते हिसाबाँ किताबाँ होवें

बचन ते मुरादाँ जगत पावते
बचन थे मुलुक हौर गड़ाँ[1] आवते

बचन थे भले और बुरे काम सब
हर एकस कूँ होते अहें फ़ाम[2] सब

बचन तेच होवे सदा सुलहो जंग
बचन तेच हासिल होवे नावँ व नंग[3]

बचन थे हुई फ़ाम नेकी बदी
बचन थे हुवे मुन्तही[4] मुब्तदी[5]

बचन थे दिलाँ हाथ लेते अहें
बचन थे किते जीव देते अहें

बचन थे चले दीन व दुनियाँ तमाम
बचन के हैं मुँहताज सब ख़ास व आम

बचन थे घराँ होवते हैं खड़े
बचन तेच होते हैं लोगाँ बड़े

बचन मोती हैं जीव के कान के
बचन पर थे वारें रतन खान के

बचन की यू झलकार नौ मान में
सितारा नहीं है किस असमान में

बचन ग़ैब के हैं अजब जौहराँ
बचन के सो हैं जौहरी शायराँ

बचन के समन्द का हूँ ग़व्वास मैं
धरन हार हूँ मोतियाँ ख़ास मैं

१ किले २ मालूम होना ३ नेकनामी, बदनामी ४ माहिर, पारंगत ५ जिसने किसी काम को सीखना शुरू किया हो।

जगत जौहरी सब मेरे पास आए
मेरे खास मोतियाँ कूँ जीव कर ले जाए

चड़े हात मोती यू जिस राज के
तो सर पर रखे जोड़ उपर ताज़ के

उनन का बहा[1] कोई दे ना सके
बग़ैर राज भी कोई ले ना सके

---

१ क़ीमत ।

कुछ अपने बारे में

जो एक दिस[1] निकल मैं सहरगाह[2] कर
चल्या फूल बाड़े कदन[3] ख़्याल धर

सो यूँ कुछ वहाँ फूल बार आये थे
सब्ज़पोश डाल्याँ पे झलक आये थे

मगर पाच[4] सूँ शमा के झाड़ कर
दिवे ल्याये थे नूर के सर बसर[5]

मेरा रूह परवाने के सारका[6]
जो आशिक है नूरों की झलकार का

देख इस शमा के झाड़ कूँ नूर के
लग्या फिरने खुश खोल पंख सूर के

मुँजे हालत इस ठार पैदा हुवा
सआदत[7] केरा दिन हुवेदा[8] हुआ

मेरे बख़्त का सूर झलक आइया
मुख इक़बाल चौधर थे दिखलाइया

किवाडाँ खुले सब मेरे काम के
खिले फूल मक़सूद[9] के काम के

मेरा जीब बुलबुल हो बोलन लग्या
छुपे ग़ैब के नग़मे खोलन लग्या

हुवा अक्ल का दस्त माया मुझे[10]
तो इस धात खातिर में आया मुझे[11]

---

१ दिवस, दिन २ सुबह के समय ३ की तरफ़ ४ 'जमरूद' नाम का विशेष वेशक़ीमती पत्थर जिसका रंग हरा होता है ५ मगर पाच... ...सर बसर—हरे वृक्षों की तुलना जमरूद की शमा से और फूलों की तुलना चिराग़ की लौ से की गई है ६ सरीखा ७ (अरबी) भाग्य ८ प्रकट होना ९ उद्देश्य १० हुवा अक़्ल... ...मुझे—अक़्ल का हाथ मेरा दोस्त बन गया ११ तो इस धात... ...आया मुझे—इस तरह यह बात मेरे दिल में आई।

कि पंजावो ना दिल ते ताज़ा निगार
जो दुनिया में अपना अछे यादगार[1]

मैं यूँ बोल पूरा किया नईं लगूँ
निदा[2] ग़ैब का आइया मुझको यूँ

कि ऐ ताज़े नक्शाँ[3] कूँ पहचान हार
बचन ग़ैब के ढूँढ़ ढूँढ़ ल्यान हार

बना एक तरह तूँ कि यू वक्त है
तूँ सूँ यार जो अब तेरा बख़्त है[4]

खुला है तेरे मुख पे दर फ़ैज़ का
हुआ है अता तुज असर फ़ैज़ का

निकल आ फ़साहत[5] के मैदान तूँ
बचन के तुरंग कूँ दे जौलान[6] तूँ

कि इस ठार तुज बिन नहीं कोई अब
ले जा तूँ बलाग़त केरा गोय अब[7]

कि सैफुल-मुलूक हौर बदीउल्जमाल
यू दोनों हैं आलम मने बे मिसाल

उनन दुई का दास्ताँ बोल तूँ
सो दफ्तर उनन इश्क का खोल तूँ

कि कई दास्ताँ जग में हो गए अहें
वले कोई ऐसा नहीं कए अहें

तेरे ताईं आया है यू दास्ताँ
ज़फ़र[8] तुज कूँ ल्याया है यू दास्ताँ

---

१ कि पंजावो......यादगार—दिल के अच्छे भावों को प्रकट करें जिनसें दुनिया में अपनी यादगार बाक़ी रह जाय २ नाद, शब्द ३ नए नए नक्शे, नई नई बातें ४ तूँ सूँ......बख़्त है—तक़दीर तेरा साथ दे रही है ५ शायरी ६ जौलान देना, एड़ लगाना ७ बलाग़त......केरा गोय ले जाना—ऊँची शायरी के गेंद को ले जाना ८ जीत।

पड्या यू निदा जूँ मेरे कान में
खड़ा आ फ़साहत के मैदान में

मेरा दिल खज़ीना जो मामूर[१] है
बचन के जवाहिर सों भर पूर है

लगा रोलने ताईं मैं जौहराँ[२]
दिपाया तजल्याँ[३] में नौ अंबराँ

कया[४] शेर ताज़ा बड़े छन्द सों
हर एक बन्द बसलाइया[५] बन्द सों

जो लफ्ज मिलाया रंगेली निछल
पुरोया जवाहिर की छेली[६] निछल

ख्यालाँ के फौजाँ को दौड़ाइया
हज़ाराँ नवे तशबिहाँ लाइया

बनाया नवे मज़मुनाँ हौर भी
दिया तबा[७] को ज़ोर पर ज़ोर भी

रच्या बोल पर बोल यूँ रस भरे
जो इस थे मिठाई के बछराँ झड़े

मेरा ज्ञान अजब शकरिस्तान है
जो इस थे मिठा सब हिन्दुस्तान है

जिते हैं जो तूती[८] हिन्दुस्तान के
भिकारी हैं मुंज शक्करिस्तान के

शकर खा मेरे शक्करिस्तान थे
मिठे बोल उठे वो अपस ज्ञान थे

---

१ (अरबी) भरा हुआ २ लगा रोलने... ...मैं जौहराँ—मैंने अच्छे अच्छे जवाहिर चुने ३ चमक ४ कहा ५ बिठाया ६ ढेर ७ तबीयत ८ एक पक्षी का नाम है, यहाँ कवियों के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

कया मैं जो कुछ आई सो फ़ाम में
किया नावँ एक रूम हौर शाम में[१]

उचाया तरज़ एक ताज़ा मिठा
जगत् बीच पाड्या[२] आवाज़ाँ मिठा

दिखाया हुनर मूशिगाफ़ी[३] किया
सलासत[४] के तईं सिर ते साफ़ी दिया[५]

नज़ाकत को मैं आपने ख़्याल थे
दिखाया हूँ बारीक कर बाल थे

दिया ताज़गी शेर के धात कूँ
सेहर[६] कर दिखाया हर एक बात कूँ

लताफ़त मनें मैं सुख़न संज[७] हूँ
धरनहार लक ग़ैब के गंर्ज[८] हूँ

जो मैं हम सूँ तब आजमाई करूँ[९]
तो सार्‍याँ उपर पेशवाई करूँ

कहूँ तोज़ मज़मून एक तिल मने
कि बेहद उबलते हैं मुज दिल मने

हुनर की गवी[१०] का सो मैं बाग[११] हूँ
बचन के उतम गंज का नाग हूँ

सके कौन मिलने मेरे तौर में
कि रुस्तम हूँ मैं आज के दौर में

---

१ रूम और शाम, देशों के नाम, ये देश अपने शायरों के लिए प्रसिद्ध हैं २ (मराठी) डालना या पैदा करना ३ मूशिगाफ़ी करना—बाल की खाल निकालना ४ सादगी ५ सिर ते साफ़ी दिया—नये सिरे से साफ़ किया ६ (अरबी) जादू ७ शायर ८ गैब के गंज—छिपे हुए ख़ज़ाने ९ तब आजमाई करना—शायरी करना १० शेर की माँद ११ (मराठी) शेर।

मेरी जीब अजब खर्ग[1] है आबदार
सदा तेज़ पानी धरे बेशुमार

मैं अप जीब की खर्ग तासीर थे
बचन का लिया मुल्क एक धीर थे[2]

फ़हम का सो गम्भीर दरिया हूँ मैं
जवाहिर के मौजाँ सूँ भऱ्या हूँ मैं

उतारिद[3] सो है किल्क[4] मुज हाथ का
दवात है सो मेरा चँदर रात का

गगन सातों दफ्तर मेरे शेर के
सितारे सो जौहर मेरे शेर के

जो कुछ तशबिहाँ खूब माकूल हैं
मेरे ख्याल के बन के वो फूल हैं

मेरे तबा का झाड़ जम ल्यावे बार[5]
खिले फूल तिसकूँ हज़ाराँ हज़ार

यू अमृत सू बैताँ[6] बड़े शौक़ सूँ
मैं लिखने लग्या दिल के अत ज़ौक़ सूँ

क़लम जीव पा चुलबुलाने लग्या
दो जीबाँ सूँ मुझकूँ सराने लग्या

जहाँ होवे मज़कूर[7] यू दास्ताँ
दिलाँ कूँ देवे सूर[8] यू दास्ताँ

सुनें आशिक़ाँ यू तो हैरान होयँ
पढ़ें पीर मर्दां तो फिर जवान होयँ

---

१ खड्ग, तलवार २ एक दम ३ एक तारे का नाम, फ़ारसी कवियों ने उसे ख़ुदा का मुंशी कहा है और उनका कहना है कि ख़ुदा जो कुछ कहता है, उतारिक उसे लिखता जाता है ४ क़लम ५ बार लाना, फल लाना ६ शेर ७ कही जायेगी ८ चमक, ख़ुशी ।

निरंजन जगत् का तू सामी अहे
दयावन्त दातार नामी अहे

बली जाऊँ उसकी दया के उपर
मेहरबान रब की मया के उपर

जो मुज दिल के सन्दूर[1] पर दौड़िया
इनायत केरा साँत[2] बरसाइया

सो मेरे ख्यालाँ के सीप्याँ मने
हर एक बुंद तिस साँत के आ जमे

सो यूँ कूच[3] मोत्याँ उबलने लगे
ख़्यालाँ के सीप्याँ में ढलने लगे

जो दिल समुद कूँ मौज पर मौज आई
हर एक मौज चौंधर ते ज्यूँ फ़ौज आई

सो फ़ौजाँ मुझे शौक़ में ल्याये हैं
जवाहिर की झलकारं दिखलाए हैं

जो ग़व्वास हूँ मैं कमर बाँधिया
सो समदूर में दिल की डुबकी लिया

सो यूँ मोतियाँ ढाल ल्याने लग्या
जवाहिर के ल्या रास भाने लग्या

जो सात अंबराँ में समा ना सके
किसी के हिसाबाँ में आ ना सके

सो मोत्याँ के अंगे लिया रास मैं
मदद मंग अपने ख़ुदा पास मैं

---

१ समुद्र २ वर्षा ३ कुछ।

पुरोने लग्या बैस अप हाथ सूँ[1]
रंगारंग हाराँ बहुत भाँत सूँ

हर एक हार सिंगार संसार का
सुरज हो डुबे जोत हर हार का[2]

कहूँ दास्ताँ सर बसर खोल मैं
करूँ जग कूँ बेताब उठूँ बोल मैं

---

१ पुरो ने लग्या......हाथ सूँ—बैठ कर अपने हाथ से मैं उन मोतियों को पिरोने लगा।
२ सुरज हो......हार का—हर हार के प्रकाश से सूरज की रोशनी भी मात हो जाती थी।

दास्तान का आग़ाज़[1]

कि हज़रत सुलेमान के वक़्त पर
अथा मिस्र में राज एक बख़्तवर[2]

नगर मिस्र का तिस अथा तख़्त गाह
अथे तिस ज़बततल[3] सकल बादशाह

नवलआसिम[4] उस राज का नेक नाँव
शहाँ में अथा उस शरफ़[5] ठाँव ठाँव

वो दाना वो आक़िल जवाँमर्द था
मुसलमाँ ख़ुदा तर्स[6] बा-दर्द था

बन्दा उसके घर का सो इक़बाल था
बसा सौ उसे कोठर्‌याँ माल था

अथे घोड़े पागाह[7] में नौलाख उसे
तीरन्दाज़ तुफ़ंगी थे सौ लाख उसे

अथा उसके लश्कर कने बेशुमार
शुजात[8] और अद्‌ल[9] में नामदार

चला जग उपर हुक्म हर साल यूँ
किया बादशाही सूँ ख़ुशहाल यूँ

अदिक छाँव का रूख था शहरेयार
कले सरो आज़ाद ज्यूँ ताजदार

सदा राज करता अथा अपसता[10]
वले[11] उसको बेटी न बेटा अथा

सो एक दिस अपस में अँदेशा किया
फ़िकर ज़ाद हो मन में यूँ लाइया

---

१ कहानी का प्रारम्भ २ (फ़ारसी) भाग्यवान ३ ज़ाब्ते के नीचे, क़ानून के नीचे ४ बादशाह का नाम ५ महत्ता ६ ख़ुदा से डरनेवाला ७ अस्तबल ८ बहादुरी ९ न्याय १० अपने से, स्वतन्त्रता पूर्वक ११ लेकिन ।

"कि अपसें मुलुक-माल परवर दिगार
इता कुच दिया है जो नईं उस शुमार

वले कोई जतन इस रखनहार नईं
कि मुज बाद मेरा कोई इस ठार नईं

न जानूँ यू माल हौर मुलुक यू विलात[1]
पड़ेगा किसी जाके दुश्मन के हाथ

अगर कोई फ़रज़न्द होता मुँजे
तो ये जग में आनन्द होता मुँजे

बड़ा नावँ होता मेरा ठार-ठार
दुनियाँ में रहता एक मेरा यादगार

हुकूमत मेरा हात चढ़ता उसे
यू माल हौर मुलुक सब सँपड़ता[2] उसे

दरेग़ा[3] ! बड़ा ग़म है मुज दिल मने
न जानूँ भँजर्न[4] होवे किस तिल मने"

पशेमान[5] इस धात होता अछे
अपस में च झक झक रोता अछे

सुबह उठ करे ख़ैर खैरात भोत[6]
कि हो ताकि फ़रज़न्द अपसे तुरुत

खुदा के वली खूब अछे कोई जहाँ
नँगे पाँव सूँ जाय चलता वहाँ

मँगे जाके पहले यही मुद्दुवा[7]
करे खिदमत हौर उनकी लेवे दुवा

सदा रात दिन उसकूँ यही काम था
न निस नींद ना दिन कूँ आराम था

---

१ विलायत, शहर २ (मराठी) प्राप्त होता ३ अफ़सोस ४ भंजन, टूटना, दुःख का दूर होना ५ पछताता ६ बहुत ७ अभिलाषा ।

हुवा फ़िकर के फ़िकर थे अधेड़
लिया दुःख विचारे को चौंधर ते घेर

सख्या बादशाही थे उम्मीद सब
वह चिन्ता हुआ मन में ग़म भेद सब

फिराया क़िनाअत[१] सख्या[२] तन के भेस
छिले बैठिया घर में चालीस दीस[३]

वज़ीराँ जो दौलत के थे ठार-ठार
मिले शाह के दरबार सब एक बार

जो कोई जो वज़ीराँ मने खास थे
जो शह सूँ धरनहार इख़लास[४] थे

सो इद्रीस हौर सालेहइब्नेहमीद[५]
यू दोनों कमर बाँध होमुस्तईद

महाबल कने पेश हुवे सूँ विचार
भजन करने दुःख शाह का कर क़रार

अदब सात मिल शह के आँगे हुए
दरस शाह का ज्यूँ निभा[६] देखिए

सो ग़मग़ी दिस्या शाह का हाल सब
कबूदी[७] हो रह्या है रंग लाल सब

भीतर गए हैं दीदे[८] दुःखों पीस कर
गई है फ़िकर ते कमर बैस कर

कि जागे पे ख़तरा न था ठार कूच
निकल जीव जाने न था भार कूच[९]

---

१ सब्र २ छोड़ दिया ३ छिले बैठिया......दीस—चालीस दिनों के लिए इबादत करने बैठा ४ मुहब्बत, प्रेम ५ इद्रीस, सालेहइब्ने हमीद—वज़ीरों के नाम ६ ग़ौर से ७ नीला ८ आँखें ९ कि जागे......भार कूच—जिसके जगे रहने पर किसी प्रकार का ख़तरा पहले न था, उसी बादशाह का शरीर ऐसा मालूम होता था कि न जाने जान कब निकल जाय।

कहे आके "ऐ ख़ुश रवे[1] नामदार
रखे तुज कूँ ख़ुशहाल परवरदिगार

तूँ क्या फ़िक्र करता है दिन हौर रात
यू क्या काम है तूँ जो पकड़्या है हात

नज़िक है जो लश्कर में फ़ितना उठे
खलल होवे हौर मुल्क तेरा लुटे[2]

कि यू काम तुज शह कूँ वाजिब नहीं
तेरी अक्ल कूँ यू मुनासिब नहीं

अगर कोई शाहाँ सुनेंगे यू बात
तो ख़ुशमान[3] से ना कसे धात-धात

तूँ आरिफ़[4] है तुजकूँ हमें क्या कहें
तेरा हाल यू देख क्यों चुप रहें"

शहंशाह इस बात को सून कर
दिया जवाब माकूल यूँ चून कर

'कि ऐ ख़ैरख़ाहाँ अधिक फ़ाम[5] के
तरद्दुद करन हार हर काम के

मैं इस वक्त वो शाहे गंभीर हूँ
कि जोड़ा नहीं मुंज जहाँगीर कूँ

कि शाहाँ न सोयें मेरे धाक थें
लरज़ते मेरे अद्ल के हाँक थें

जो हट कर अगर मैं धरूँ दिल मने
तो दुश्मन कूँ रहने न देऊँ तिल मने

---

१ बादशाह २ नजिक है......तेरा लुटे—तुम्हारे इस प्रकार रहने से लश्कर में फ़साद पैदा होने की संभावना है और यदि ऐसा हो गया तो चारों ओर अशान्ति फैल जाएगी और देश लुट जाएगा ३ अच्छा मान, अच्छी इज्जत ४ समझदार ५ समझ ।

जो हट कर अगर मैं करूँ दिल में दन्द
तो रहने किसी कूँ न देऊँ अन्द-गन्द[1]

किसी शाह का डर नहीं कुच मुझे
वले एक यू ग़म किया हुच[2] मुझे

शाहाँ में अगरचे हूँ मैं जग पती
वले घर कूँ नईं कोई दीवाबती[3]

यही है मेरे दिल कूँ धड़का बड़ा
सो क्यों मुल्क मुज बाद होगा खड़ा

इसी वास्ते सख़्त दिल गीर[4] हूँ
नहीं हाल कुच मुज ते तग़य्यीर[5] हूँ"

वज़ीराँ सुनें शाह सूँ यू विचार
शहंशाह कूँ धीरक दे सब एक बार

नुजुम्याँ[6] कू एक घर ते हाज़िर किए
छिपा शाह का राज़ ज़ाहिर किए

देखे खोल ज्यूँ शह के ताले-क़वी[7]
ख़ुशी सब कें तईं मुख दिखाई नवी

सितारा उठा जाग शह बख़्त[8] का
हुवा वक्त खूबी केरे वक्त का

शहंशाह के ताले क़वी पायकर
बशारत[9] दिये शह कूँ यूँ आयकर

"कि ऐ बादशाह, भोगुनी[10] बख़्तवर
तूँ फ़रज़न्द के कारन अब ग़म न कर

---

१ नामो निशान २ हेच करना, बेकार करना ३ चिराग़ ४ रंजीदा ५ बदला हुआ हूँ ६ नुजूमी, ज्योतिषी ७ बड़ी क़िस्मत ८ भाग्य ९ ख़ुशख़बरी १० बहुगुनी, अधिक गुण वाला।

यमन[१] के जो राजा की बेटी है एक
चन्द्र-सूर खाते हैं रश्क उसकूँ देख

उसे मँग, तुज शाह कूँ वो सजे
कि देगा ख़ुदा उस थे फ़रज़न्द तुझे"

सुन्याँ इस बशारत कूँ ज्यूँ शह सवार
ख़ुश्याँ साथ घर में थे निकल्या बहार

परेशान ख़ातिर हुवा जमाँ नव[२]
लगा दीपने मन केरा शमा नव

किया सिजदा उस वक्त शुकराने का
सो पाया जो था मुद्दुवा पाने का

महाराज गंभीर आसिमनबल
चढ्या देक अपस हाथ इक़बाल बल

बुला भेज्या सब अमीराँ के तईं
गुनी पेशवा हौर वज़ीराँ के तईं

बुला भेजिया सब अमीराँ के तईं
गुनी पेशवा हौर वज़ीराँ के तईं

दिया हुक्म आनन्द पा बेहिसाब
लिखें नामाँ शाहे यमन को शिताब[३]

जो लिखने कूँ नामाँ जूँ आया दबीर[४]
इशारत सूँ मन शह का पाया दबीर

समझ शाह के दिल के सूरात[५] कूँ
लिख्या नामाँ बेगीकर[६] इस धात सूँ

कि "ऐ भोगनी शाह समरथ सजन
तुम्हारा सदा गरम अछो अंजुमन

---

१ एक शहर का नाम २ परेशान......जमाँ नव—उसका परेशान-दिल नए सिरे से सन्तुष्ट हो गया ३ शीघ्रता से ४ मुंशी ५ (अरबी) वाक्य ६ वेग से, जल्दी से।

जहाँ आफ़री[1] है जो सब पर क़दीर[2]
जग आधार है हौर जग दस्तगीर

जो तुमनाँ कूँ कर बादशाहे यमन
किया है अता तख़्त गाहे यमन

बड़े हैं तुम्हीं नेक नामी में आज
दिसें बेबदल[3] एहतेशामी[4] में आज

बहुत दिन थे मुंज दिल में ऐ शहसवार
मुहब्बत तुम्हारा किया है क़रार

अगरचे हमें ज़ाहिरा दो हैं दूर
वलेकिन हैं बातिन[5] में दोनों हुज़ूर

मेरे दिल में यूँ आबता है इताल[6]
जो ज़ाहिर वो बातिन अछे एक हाल

तुम्हारा मेरा घर सो है एक घर
तुम्हारा कह्या है मेरे सीस उपर

व लेकिन सुन्या हूँ मैं तुमनाँ कूँ एक
उतम पाक-दामन है फ़रज़न्द नेक

अगर उस मेरे अक़्द में ल्यायेंगे[7]
मेरी बस्तकर्[8] मुझको दिखलायेंगे

तुम्हारा वफ़ादार कहलाऊँगा
अज़ीज़ाँ के शर्तां बजा लाऊँगा"

मुहब्बत सूँ गुज़रान कर बात कूँ
किया खत्म नामे[9] को इस धात सूँ

१ दुनिया को पैदा करनेवाला २ समर्थ, ख़ुदा ३ जिसकी बराबरी का कोई न हो ४ शान व शौक़त ५ अन्दर से, भीतर से ६ अब ७ अक़्द में लाना, शादी करना ८ शादी करना ९ पत्र।

जो कुछ खिलअताँ[1] ख़ुसरवानी अथे
जो कुछ तोहफ़े नादिर शहानी अथे

अथा मर्तबा ख़ुस रवानी[2] जिता
कई लक वज़ा सूँ मुहय्या किता

दिए दबदबे साथ हाजिब[3] संगात
तुरुत बात ल्याए मरातिब[4] संगात

अंगे मेहतरां[5] सूँ खज़ाना किए
यमन के कदन ख़ुश रवाना किए

एक एक मुल्क, एक-एक शहर, एक-एक विलात
एक-एक गढ़, एक-एक कोट, लक धात-धात

उलंगते-उलंगते[6] चले ता यमन
खबर गई यमन के शहंशाह कन

कि शह मिश्र के मुल्क का बेनज़ीर
हिजाबत[7] कूँ भेजा है अपना वज़ीर

जो शाहे यमन शहर सिंगार सब
कितेक सात रच आपना भार सब[8]

मजालिस भरा ख़ुसरबी शान सूँ
बुला भेजिया सब कूँ बहुमान सूँ

वो नामाँ सरासर पड़ाया तमाम
सो मक़सूद[9] ख़ातिर में ल्याया तमाम

हुआ ख़ुश लिखे सो हर एक बैन पर
ले नामा रख्या आपने नैन पर

१ बादशाह की तरफ़ से दिए हुए कपड़े २ बादशाही ३ दूत ४ मर्तबा, शान ५ बड़े लोग ६ तेजी के साथ चलते हुए ७ सन्देश ८ जो शाहे......भार सब—यमन के बादशाह ने अपने शहर को सजाया। उसने पूरी शक्ति से महल और बाहर के हिस्से को सजाया ९ ख्वाहिश।

कुबुल्या जो कुछ ल्याये सो यादगार
रखाया जतन याद सूँ ठार-ठार

नवाज्या सकल खास हौर आम कूँ
दिया खिलअताँ सबकूँ इकराम[१] सूँ

जो शाहे यमन शादमानी[२] किया
बड़ी मेहमानी शहानी किया

दिया अपनी बेटी कूँ उस शाह कूँ
बँन्द्या अक्द सूरज कूँ उस माह कूँ

तमाम उस उरूसी गिरी काज की[३]
किया मुस्तएदी बड़े साज की

ज़रीनाँ[४] के बेहद निछल दुरजकाँ[५]
बड़े मोल के तोहफ़े लक दर लकाँ

पर्‌याँ सी कनीज़ाँ[६] उतम ज़ात क्याँ
चंचल छन्द भर्‌याँ सूरज धात क्याँ[७]

हर एक साफ़ तन ढाल मोती दिसे
नवे रंग जाली में ज्योती दिसे

सभी किसवताँ[८] उनकूँ रंग रंग सब
हर एक खुश नुमा हौर खुशाहंग[९] सब

गुलामाँ कितेक खूब साहबजमाल[१०]
सुना वाँदे खण्ड्याँ[११] कितेक कर रूमाल

कितेक तबले के मिस्ल तातार के
कितेक फर्श बेमिस्ल ज़र तार के

---

१ इनाम २ खुशी ३ उरूसी गिरी का काज, दुलहिन को सँवारने का काम ४ सोना ५ डब्बी ६ सेविकाएँ ७ सूरज धात क्याँ; बहुत ही सुन्दर ८ लिबास ९ खूबसूरत १० खूबसूरत ११ (मराठी) खण्डी, कोड़ी ।

दरयायी तुरंग हौर हती बेशुमार
अमोलक किते जिन्स के यादगार

जो था मरतबा जहेज केरा जिता
किया मुस्तैद एक तरफ़ थे विता

बड़े मरतबे सूँ सरा बेहिसाब
लिख्या मिस्र के शह कूँ यूँ जवाब

"कि ऐ बादशाह जगपति नामदार
तेरी बादशाही अछो बरक़रार

सदा फ़तह व नुसरत[१] सूँ तू राजकर
बसे लग दुनिया, नित नवे काज कर

तूँ दरिया है गंभीर गुण ज्ञान का
कि होता तूँ फ़रज़न्द सुफ़वान[२] का

दया कर जो मुजकूँ किया याद तूँ
सो रूँ-रूँ कूँ मेरे किया शाद तूँ

नवाज्या मुझे हौर किया सरफ़राज़[३]
बड़े उम्र की बेल तेरे दराज़

जो कुच अम्र तेरा सूँ मैं सिर लिया
क़ुबूल आपने जीव दिल सूँ किया

कि मेरी हया का तूँ जीव दान है
फ़िदा तुजपे वो पाक-दामान है

जो मुज हौर फ़रज़न्द होता अगर
तो एक धरते करता फ़िदा तुज उपर

मुबारक तुझे ख़्वास्तगारी[४] अछो
यू नारी सदा तुजकूँ प्यारी अछो"

---

१ ख़ुदा की मदद २ एक बड़े बादशाह का नाम, जिसके खान्दान में आसिम नवल पैदा हुआ था ३ सरफ़राज़ करना, इज़्ज़त करना ४ मँगनी, शादी के लिए लड़की माँगना।

लिख्या यू नवाज़िश कर इस धात सात
बड़े गुलगुले[1] हौर मरातिब सँगात

अनन्द की ख़ुशी मंग अल्लाह कन
दिया पालकी भेज उस शाह कन

जो मंज़िल बमंज़िल सो आने लगे
अंबर हौर धरत जगमगाने लगे

शिताबी सूँ चल रात-दिन आइए
जो ज़ेबा रतन शाह तईं लाइए

जो नज़दीक जूँ मिस्र के आइए
अंगे एक हाजिब कूँ दौड़ाइए

जो आसिम नवल शह ख़बर पाइया
उमस[2] साथ ख़ुशियाँ मने आइया

मंगे तिउँ; अँगे उसकी आया मुराद
जो कुच्छ दिल मने था सो पाया मुराद

किया काज का साज ख़ुश ठार-ठार
हुआ जग में यू काज सब आशकार[3]

वो महलाँ च्तर सूँ चितारे तमाम
सदर ख़ुश रवानी सँवारे तमाम

क़माशाँ[4] से असमान के ताव मोल
बिछाने लगे जातहाँ खोल खोल

बटे-बाट[5] धग नवरतन के बिछाए
मुरस्सा[6] के ख़ुश बारगाहाँ[7] उच्चाए

कदम ज़ाफ़राँ को गलाने लगे
गुलाँ हौज़ख़ाने भराने लगे

१ शान-शौकत २ हौसला ३ प्रकट होना ४ एक बेशक़ीमती कपड़ा ५ हर रास्ते पर
६ हीरे जवाहिरात जड़े हुए ७ दरबार।

पिसा मुश्क फुल नीर में घाल कर
दिखाए नवा एक बर्षगाल कर[1]

मिले मजलिसाँ हौर वज़ीराँ तमाम
सिलहदार[2], सरदार, अमीराँ तमाम

रंगारंग हुआ शाह का भार सब
झलकने लग्या जड़त सिंगार सब

हुए मुस्तहिद[3] सब ख़ुश आने के साथ
अनन्द पर अनन्द लक खुशियाँ धात-धात

रंगेला हशम[4] गत सो हर ठार रुच
छिपा रास्ता भार पर भार रुच

अपे शाह आसिम अधिक ज़ौक़ सूँ
उमस[5] पाय कर मन में इस शौक़ सूँ

निकल कर खड़ा ज्यूँ शहे दानियाल
ख़ुश्याँ थे खिल्या है बदन ज्यूँ गुलाल

मँगा शाह तेज़ी पवन सा शिताब
न सावज रखे कोई उसका रिकाब

सो हाता मर्ने पेन कर हस्तक़र
उतम ज़ात तेज़ी के उपराल चढ़

एकस तरफ़ क़ैसर जो पकड्या है ज़ीन
कि दूजी तरफ़ शाहे फ़ग़फ़ूर चीन[6]

चल्या सामने होने उस हूर कूँ
निछल नूर के पाक सन्दूर कूँ

---

१ पिसा मुश्क......वर्श गालकर—फूलों से बसे जल में पिसी हुई कस्तूरी इस तरह से से छिड़की जा रही थी, जैसे मानों वर्षा हो रही हो २ सिपाही ३ तैयार होना ४ शान-शौक़त ५ उत्साहित होना ६ एकस ....चीन—शादी के जुलूस में बादशाह घोड़े पर सवार था। उसकी शान इतनी थी कि मालूम होता था कि क़ैसर (रूम का बादशाह) और फ़ग़फ़ूर (चीन का बादशाह) घोड़े को दोनों तरफ़ पकड़े चल रहे हैं।।

दमामे लगे पीट सूँ गाजने
बजन्तर[1] हरेक जिन्स के बाजने

उठे बोल जन्तर दोतारे[2] तमाम
लगे गावने गान हारे तमाम

अगर ऊद अंबर जलाने लगे
बुखूराँ[3] के असमान छाने लगे

देखे लोग इस हूर के शाह कूँ
मिले सामने आके बहुमान सूँ

हुए दो तरफ़ ते सलामाँलक्याँ[4]
मिले हौर खिले ज्यूँ कल्याँ डालक्याँ

दे ताज़ीम[5] सबकूँ किया बातशाह
ले दुंबाल[6] सबकूँ अपन सात शाह

ज्यूँ आया निकल शाह मैदान में
उजाला पड्या सातों असमान में

महलदार हर एक वो साहब जमाल
उड़ागे लगे शह वे तगटे[7] रुमाल

रुमालाँ के अक्साँ झलकने लगे
हवा पर सूँ बिजल्याँ चमकने लगे

भरे थे हर एक ठार यूँ खासो आम
जो छुप गए थे एक धर ते तारे तमाम

मती हस्त आँगे सुहाते अथे
पहाड़ाँ मगर चल कर आते अथे

१ बाजा २ एक दो तारों वाला बाजा विशेष ३ धुआँ ४ सलाम-अलैकुम ५ इज़्ज़त करना
६ अपने साथ लेकर ७ शाल दुशाले ।

हर एक हस्त बेमिस्ल मक़बूल[1] ख़ूब
मुरस्सा की पीठ्याँ उपर झूल ख़ूब[2]

तुरंग; बाव के पाँव[3] कई लक हज़ार
चितर में चितारे सके ना चितार

बिचकते अपने छाँव देक ठाँव में
मुरस्सा के टोडर[4] हर एव पाँव में

नफ़ीरियाँ वो बुरग़ाम[5] उठे यूँ तराट[6]
सिने आसमाँ के गए फाट फाट

सक्के[7] चादिएं[8] भर ले फुल नीर सूँ
छिड़कने लगे चौकधन धीर सूँ

जो आहिस्ता डग डग चलाने लगे
मलिक लक वजा सों सराने लगे

नज़र तल दिस्या सारे आलम कूँ यूँ
सुलेमान शह, आरूस बिलक़ीस[9] ज्यूँ

अपन शहर में शाह ज्यूँ आइया
महलाँ में सबको बुला लाइया

जो उस हूर की आई ज्यूँ पालकी
ख़ुशी हुई ज्यादा नवल लाल की

शहंशाह ज्यूँ लाक दर्जे संगात
चला लेके ख़िलवत[10] में ताज़ीम सात

---

१ बहुत ही प्रसिद्ध २ मुरस्सा की......ख़ूब—हाथियों की पीठ पर जो झूल डाली गई थी, वह हीरे मोतियों से जड़ी थी ३ तुरंग बाव के पाँव—बहुत ही तेज चलने वाले घोड़े ४ घोड़ों के पैरों के कड़े ५ विशेष प्रकार के बाजे ६ बजने लगे ७ भिश्ती ८ मश्क ९ सुलेमान...... बिलक़ीस—सुलेमान बादशाह जैसे अपनी दुलहिन बिलक़ीस के साथ जुलूस में चल रहे हों १० रंगमहल।

हुआ शौक़ पर शौक़ उस शाह कूँ
सो देख्या घूँघट खोल उस माह कूँ

तजल्ली दिखत वंई हुआ बेक़रार
सो दौड़ाइयाँ दिल को बेअख्तियार

लताफ़त सूँ कर सुलह हौर जंग कूँ
मदन कामता हो गया संग सूँ

उसी रात उस सात सोहबत किया
मदन कामिनी मद पे इशरत किया

खुशी सूँ लिया शाहज़ादी के हात
बन्द्या उसके गौहर कूँ अलमास सात

मयस्सर हुआ ज़ौक़ दिन हौर रात
अनन्द पर अनन्द लक खुश्याँ धात धात

एका एक जो कुदरत केरा बल हुआ
कितेक दिन कूँ उम्मीद का फल हुआ

सैफुल मुलूक का पैदा होना

इलाही जो साहब है संसार का
जो देता है मँग्या मँगनहार का

जो बेटा दिया शाह कूँ बेत्रदल
चँदर सूर ते खूब निर्मल निछल

सो हाशिम नवल शाह पाया उमस
बहर हाल फ़रज़न्द हुआ कर अपस

खज़ीने दफ़ीने जो खोलन लग्या
रतन हीर के रास खोलन लग्या[१]

गिनाया तुरुत जग मनें काज यूँ
गिना ना सके जग में कोई राज यूँ

दुवा सूँ उछाहात बहुत सिद्क़ सात[२]
मँग्या अपने फ़रज़न्द कूँ बेहद हयात

खुश्याँ सात अमृत घड़ी फ़ाल[३] देक
सो सैफुल मुलूक कर रख्या नाँव नेक

जो था सालेह उस शाह केरा वज़ीर
खुदा उसके हक़ पर हुआ दस्तगीर

उसी रात उसे एक बेटा दिया
दिवा उसके घर का सो रोशन किया

मुबारक घड़ी में देखत फ़ाल वो
सो साअद[४] कर उसका रख्या नाम सो

जो इस हाल थे शाह कूँ अपड़ी[५] खबर
फुग्या सिर थे भी खुर्रमी पाय कर[६]

---

१ खज़ीने......लग्या—पुत्र उत्पन्न होने की खुशी में उसने बहुत धन लुटाया २ सच्चे दिल से ३ जन्म-पत्री ४ सालेह वज़ीर के बेटे का नाम ५ (मराठी) मिली ६ फुग्या......पाय कर खुशी से फूल गया।

बुला भेजिया बेग सालेह के तईं
कया यों कि इस धात माँगता हूँ मैं

जो यू दोनों बालक मिल एक ठार अछें
बधें एक दिल होके हौर यार अछें

मँगा भेज साअद कूँ वईं शहरेयार[1]
दो दायाँ रख्या दोनों को एक ठार

खुश्याँ सूँ नुजूम्याँ कूँ भेजा बुलाय
दिख्या शाहज़ादे के ताले खुला[2]

सो ताले में उसके यूँ आया निकल
कि चौदह बरस में एका-एका अव्वल

बड़ा ग़म उसे मुख दिखलाएगा
गुज़र लई ज़फ़ा[3] उस उपर जाएगा

तमाशा देखेगा बहुत धात धात
हलाक होवेगा खल्क़ उसके संगात

वले शादमानी[4] है आख़िर उसे
बड़ी कामरानी[5] है आख़िर उसे

सुन इस बात कूँ शह बुरा मानकर
तवक्कल[6] किया अपने रहमान पर

बहर हाल दोनों को पालन लग्या
सो तिल तिल कूँ स्पन्द[7] जालन लग्या

बरस सात के ज्यूँ ये दोनों हुए
मुअल्लिम[8] कूँ एक ख़ूब पैदा किए

---

१ बादशाह २ जन्म पत्री खोल कर देखना ३ बहुत बड़ी मुसीबत ४ ख़ुशी ५ कामयाबी
६ भरोसा करना ७ राई, बुरी नजर से बचाने के लिए राई जलाते हैं ८ उस्ताद ।

लेजा कर जो बसलाए मकतब मने
लगे पढ़ने दिन रात दोनों जने

किए इल्म तहसील[1] इस धात सूँ
जो दम मार[2] कोई ना सके बात सूँ

हुए खुशनवीसी के यूँ धात में
जो सातों क़लम[3] आए थे हात में

तीरन्दाज़ ऐसे हो निकले वो दुई
बराबर उनन के न था जग में कोई

क़वीदस्त[4] यूँ कस में कामिल हुए
जो रुस्तम ते एक धात फ़ाज़िल हुए

हुए मुस्तइद ज़ोर साधन मने
रसीदे हुए हर हुनर फ़न मने

वले शाहज़ादा सो मक़बूल था
मगर जीव के डाल का फूल था

अगर होयँ पैदा सुरज लाक लाक
तो आ न सके उसके सम कोई टाक[5]

कधीं भार सवारी जो जाता अछे
देखन शहर का खल्क़ आता अछे

जो कोई उसकूँ देखे सो आशिक़ होवे
गवाँ होश बेहोश मुतलक़ होवे

तलबगार हो एक दिन आनन्द सूँ
तलब जो किया शाह फ़रज़न्द कूँ

---

१ प्राप्त करना २ दावा करना ३ लिखने के सात प्रकार ४ ताक़तवर ५ मुक़ाबिले में ठहरना ।

सैफुल मुलूक को दरबार में बुलाना

सो एक दीस सैफुल मुलूक जग उजाल
शहंशाह के जीव के चमन का नेहाल[1]

मुहब्बत सों हो एक तन एक दिल
गुनी बख़्तवर जान साश्रद सूँ मिल

चल्या शह को तसलीम करने बदिल
अदब सात सर भूँइ धरने बदिल

देख्या शाह दोनों के तईं जो निभा[2]
सोने हौर रूपे के दो कुर्सियाँ मँगा

किया अम्र[3]; बैसो ककर[4] दूइ कूँ
लग्या देखने भर नज़र दूइ कूँ

हुआ मन में खुशहाल इस धात सूँ
कया जाय ना वो किसी बात सूँ

उबलने लग्या प्यार का दिल में शौक़
मँगाय खज़ीने में ते एक सन्दूक़

सो चौंधर जड़त यूँ जड़े थे उसे
जो ताक़त न था उस निभाने किसे

वो संदूक़ खोल एक अंगुश्तरी[5]
झमकता नगीना सो ज्यूँ मुश्तरी[6]

निछल ज़रज़री खूब ज़रबफ्त[7] एक
यू दो बस्त कूँ काढ़ अपे शाह देक

सो सैफुलमुलूक के दिया हात में
हो खुशहाल बहुत ही च इसी सात[8] में

---

१ वृक्ष २ ग़ौर से देखना ३ हुक्म देना ४ कह कर ५ अंगूठी ६ एक तारा, जो बहुत ही चमकदार है ७ जरीदार कपड़ा ८ साअत (अरबी); समय।

मँगाया उतम ज़ात तेज़ी अनूप
पवन साज़ जल्दी में अपरूप रूप

किया पेश-कश[1] हौर नवाज्या बहुत
बुलाकर कह्या "ओ मेरे मन के पूत

यू तेज़ी उतम हौर यू अंगुश्तरी
यू ज़रबफ्त निरमल निछल ज़रज़री

मरे तईं दिए थे सुलेमान भेज
पर्‌याँ हौर देवाँ के सुल्तान भेज

अजब कुच ख़ज़ीने में मेरे है यू
दिया हूँ तुजे मैं कि तेरे हैं यू

कि मुज तुज बग़ैर कोई फ़रज़न्द नईं
अज़ीज़, अरजुमन्द[2] हौर दिलबन्द[3] नईं

यू बुस्ताँ[4] तुझे आरज़ानी अछो
तेरी उम्र कूँ जावेदानी[5] अछो"

खुश इस धात फ़रज़न्द कूँ समझाइया
दे तशरीफ़[6] दोनों कूँ बहुराइया[7]

१ तोहफ़ा देना २ लायक़ ३ दिल का टुकड़ा ४ बाग़ ५ हमेशा के लिए ६ लिबास देकर ७ बहुराना, लौटाना ।

तसवीर पर रीझना

अजब रात निर्मल थी उस दिन की रात
झमकते थे नूराँ में लक धात धात

निकल आये कर चाँद तार्‌याँ सिते
झमकता अथा जगमगार्‌याँ सिते

निछल चन्दना सब में पड़ता अथा
सो ज्यूँ दूध केरा वो दरिया अथा

बने-बन पवन मकमकाती अथे
चमन दर चमन लकलकाती अथे

खुश ऐसी निछल चन्दनी देख रात
ले साअद कूँ सैफुल मुलूक अप सँगात

सुराही वो प्याले की मजलिस भर आप
लगे ज़ौक सों पीने भर-भर शराब

निछल गान हारे सो गाने लगे
रिझाने के बाजे बजाने लगे

मजालिस जमे राग हौर रंग सूँ
हुए मस्त प्याले केरे संग सूँ

अधी रात गमते हुई ऐसे धात
रहे माँदे हो नींद केरे सँगात

हुए लोग एक घर थे सब ठारे-ठार
एकट[1] शाहज़ादा सो था हुशियार

एकाएक सो दिल कूँ लग्या ज्यूँ तलाश
सो बेमिस्ल ज़रबफ्त का वो क़माश[2]

---

१ अकेला २ क़ीमती कपड़ा ।

देख्या खोलकर सर-बसर ज्यूँ उनें
सो तसवीर पाया अजब उस मनें

वो तसवीर देक वई दिवाना हुआ
वहीं इश्क़ का उसकूँ भाना हुआ

अपस में लग्या रोवने ज़ार-ज़ार
सो पड़ने लग्या बेख़बर ठार-ठार

वो सूरतनज़र में रही चूब कर[1]
सो जागा किया दिल मनें खूब कर

दिया संग सार्याँ केरा छोड़ कर
लिया खींच दम सब थे मुख मोड़ कर

अँधारे भरी कोठरी में एकट
सो जा पर रह्या बेख़बर हो निपट

---

१ चुभ कर

इश्क़ में दीवाना होना

जो साअ़द हुआ नींद से हूशियार
लग्या देखने तईं आँख्याँ पसार

नज़र नईं पड़्या शाहज़ादा कहीं
लग्या ढूँढ़ने हैरान हो हर कहीं

सो पाया अँधारे मने एक ठार
पड़्या था अकेला दुःखें बेक़रार

आँझू[1] अँखियाँ में थे ढलते अथे
नद्याँ होके दो धरती चलते अथे

न ज़रा खबर कुच उसे ज़ात की
न ताक़त ज़बाँ को है कुछ बात की

जिता साअ़द उसकूँ उचाने[2] कूँ जाय
जिता पाँव पड़ कर मनाने कूँ जाय

विता अपसें दिखलाये वेहोश कर
न दे ज्वाब चुप रहे फ़रामोश कर[3]

उठ्या साअ़द उस देक कर तलमला
लिया हैबताँ सूँ कमर बैस ला[4]

जो दर हाल शह कूँ खबर जा दिया
एकाएक शह का सिना तड़ख्या

जो देखन कूँ बेटे के आया नज़ीक
सो बेताब सख़्ती च पाया अदीक

कया यू नुजुम्याँ केरा क़ौल है
वही रंज है हौर वही हौल है

---

१ आँसू २ उठाना ३ भूल जाना ४ डर के मारे कमर बैठ गई; पस्त हिम्मत हो गया।

जो कुछ शाह केरा जो ईमान था
सो सैफ़ुलमुलूक जाव सो जान था

मुलुक माल पर शह कूँ दिल ना अछे
देखे बाज बेटे कूँ तिल ना अछे

जो मजलिस भराने[1] के तईं भार जाय
तो फ़रज़न्द कूँ दिल मने याद लाय

कधीं टुक जो दिलगीर[2] पावे उसे
निकल धड़ में ते जीव जावे उसे

सुबह उठ बला दूर दे बेशुमार
हती हौर घोड़े हज़ाराँ हज़ार

सुवाँ हौर रूपा वाँद खंड्या[3] बटाय
जवाहिर के रासाँ लेकर आ लुटाय

देख्या यूँ जो बेताब एक बारगी
कमर बैस गई हौर लगी तगबगी[4]

को उस वक्त पर किस कूँ ना कर खबर
मबादा[5] नज़र कुच्च लगी होय कर

दुवायाँ कूँ धो-धो पिलाने लग्या
लिख्या ताविज़ाँ ल्या बँधाने लग्या

१ दरबार में बैठने २ रंजीदा ३ बीस मन की एक खण्डी होती है। यहाँ 'ढेर' इस अर्थ में प्रयोग किया गया है ४ बेचैनी होना ५ कहीं ऐसा न हो।

सैफुल मुलूक का इलाज करना

जिते थे हकीमाँ अपन शहर के
हलब, चीन हौर मावरुल्नहर[1] के

शिताबी सूँ फ़रमान सादिर किया
वित्याँ कूँ बुला भेज हाज़िर किया

किते वज़ा सों सबके दिल हात ले
कया मेहरबानी सेती ला गले

जो फ़रज़न्द मेरा है सैफुलमुलूक
फ़िदा उस पे थे माल हौर यू मुलूक

मुजे उस बग़ैर कोई फ़रज़न्द नईं
अजीज़ अरजुमन्द हौर दिलबन्द नईं

हुआ है एका एक जो बेताब यू
कि देता नहीं है किसे ज्वाब यू

करेगा दवा जो कोई दर्द फ़ाम[2]
देऊँगा उसे बादशाही तमाम

सुन इस बात कूँ शाहे गंभीर ते
उठे सब हकीमाँ सो एक धीर ते

कहे शह कूँ "सब दर्द हमन फ़ाम है
करेंगे दवा यू किता काम है"

हकीमाँ देखन नाड़ी ज्यों आये हैं
दरद ज़ाहिरा कुच नहीं पाये हैं

हुए एक तरफ़ ते पशेमान[3] सब
रहे दर्द ना फ़ाम हैरान सब

---

१ देशों के नाम २ दर्द समझना, बीमारी मालूम करना ३ परेशान होना

जो उस दर्द का जिन्स[1] कुछ होवता
तो दारू व दर्मन[2] का रुच होवता

सचीं हर दर्द कूँ है हर कई दवा
वले इश्क़ के दर्द कूँ नई दवा

अछे जिसके तईं इश्क़ का दर्द जो
बिचारे हकीमाँ करें क्या कहो

मुसल्लम शहंशाह हुआ ला इलाज
न था काम उसे कुच बैठे रोये बाज

हुआ घावरा शादमानी सट्या[3]
निपट नींद दाना वो पानी सट्या[4]

१ कारण २ दवा ३ खुशी खतम हो गई ४ भूख-प्यास खतम हो गई।

साअद का सैफुल मुलूक के सामने जाना

सो एक दीस आये वज़ीराँ सकल
कहे शाह कूँ यूँ कि "ऐ शह नवल

कुच इस बात तदबीर करना भला
कुच इस फ़िक्र में पाँव धरना भला

न होना इते वज़ा[1] सूँ घाबरा
कि रहना तुज इस धात सूँ है बुरा

सरांदील[2] तेरा सब पशेमान है
दुःखी हो मुसल्लम परेशान है

अपन दर्द थे हो अपे दर्दनाक
नज़िक है जो सैफुल मुलूक हो हलाक[3]

भला है जो साअद टुक उसके नज़ीक
अछे उसके दुःख दर्द में हो शरीक

वही उसके दिल का सो अन्त पायेगा
वही उसकूँ मार्ग मनें लायेगा"

शहेशाह कूँ ख़ुश लग्या यू विचार
दिया भेज साअद कूँ बेटे के ठार

गया शाहजादे के ज्यूँ वो नज़ीक
लग्या रोवने ज़ार उसते अदीक

कहा यूँ "कि ऐ लाल साहब जमाल[4]
न सूरज चन्दर में है तेरा मिसाल

तेरा नूर हर ठार मामूर अछो
तेरा दिल ख़ुश्याँ साथ जमपूर अछो[5]

---

१ तरह २ आस-पास के लोग ३ अपन दर्द थे......हलाक—कहीं ऐसा न हो कि अपने रंजोग़म से ख़ुद ही बहुत ज़्यादा तकलीफ़ उठा कर सैफ़ुल मुलूक मर जाए ४ बहुत ही ख़ूबसूरत ५ तेरा दिल......अछो—तेरा दिल हमेशा ख़ुशी से भरा हुआ रहे ।

है मुज नैन कूँ नूर तुज नूर थे
सदा सूर[1] मुजकूँ तेरे सूर थे

अधर खोल मुज सात कुछ बोल तूँ
तेरे दिल में क्या है सो कह खोल तूँ

कि तेरा सदा मैं वफ़ादार हूँ
हर एक ठार तेरा मैं ग़म खार हूँ

एका एक यू आया है क्या फ़िक्र तुज
लग्या है किसूँ ध्यान हौर ज़िक्र तुज

नज़र किस सूरज पर पड़ी जग केरे
जो यूँ नित उबलते हैं जल के झरे

तेरा चाँद किन है; तूँ किस का चकोर
जो तिल-तिल कूँ होता है तूँ तौर-तौर[2]

कहे बाज तूँ कुच मुझे फ़ाम नई
सुने लग मेरे दिल कूँ आराम नई

मुजे खोलकर तूँ कहे तो भला
वगर नई तो मैं काट लेऊँगा गला

कमर में ते वई अपने खंजर कूँ काड़
गया आपना पेट लेने कूँ फाड़

देक ये हाल दर हाल सैफुल मुलूक
पकड़ हात साग्रद केरा देक मूक

बिरह आग सूँ जलबला आह मार
अँगारे नयन में ते डाल्या हज़ार

पछान्याँ[3] कि साग्रद वफ़ादार है
अपन दूख हौर दर्द का भार है

---

१ खुशी २ हालत बदलती रहना ३ पहचाना ।

वो ज़रबख़्त का पारचा[1] लाइया
जो थी सूरत उसमें सो दिखलाइया

कहा "मैं इसी का दिवाना हूँ भोत
अगरचे अपन ठार दाना हूँ भोत

यही रूप लुब्धाइया[2] मुजे
यही हुस्न बेसुध किया है मुजे

कहीं रूप दुनिया में इस सारका
न देख्या है कोई ख़ल्क़ संसार का

कि लगती है लई[3] दिल को हैरानगी
न जानूँ छुटे क्यों यू दीवानगी"

सुन्या राज़ साअद अपन यार ते
रज़ा लेकर आया जो उस ठार ते

शहंशाह कूँ तसलीम आकर किया
सो वो सूरते हाल सब बोलिया

१ कपड़ा २ लुब्ध किया है, आकृष्ट किया है ३ बहुत ।

परियों का ज़री का कपड़ा लाना

अजायब लग्यां[1] शह कूँ इस भेद पर
कह्या खोल तो सब कूँ यूँ सर-बसर[2]

"वो ज़रबफ़्त जो मैं दिया था उसे
जो ख़ुश हो इनायत किया था उसे

मैं एक दीस बैठा अथा तख़्त पर
सो देख्या एकाएक उसी वक्त पर

जो बारा[3] उठा एक बड़े ज़ोर का
धुत्नारा[4] उठा सख़्त शर शोर का

छिपा था गगन इस धुलारे तलें
परेशान था खल्क़ बारे तलें

सो वैसे में वाँ ते निकल भार कूँ
कितेक शह पर्‌याँ ऐन झलकार सूँ

मेरे तख्त के आँगे आयाँ तमाम
कियाँ मुजकूँ देक एक तरफ़ थे सलाम

कह्याँ मुजकूँ "ऐ साहबे तख़्त व ताज
हमन कूँ सुलेमान भेजा है आज

वो ज़रबफ़्त का पारचा लाइयाँ
मेरे आँगे रख खोल दिखलाइयाँ

जो था इस मने सूरते बे-नज़ीर
भुल्या देख सूरत वो मेरा ज़मीर[5]

लिया मैं उसी वक्त परियाँ में अंट[6]
किया सूरत किसी का है पाया मैं पंट[7]

---

१ अजीब लगा, आश्चर्य हुआ २ शुरू से आखिर तक ३ आँधी ४ बवंडर ५ दिल
६ छीन लेना ७ पंथ, रास्ता, रास्ता पाना, मालूम कर लेना।

कह्याँ खोल यूँ मुज उपर कर करम
यूँ ल्यायाँ हैं अज़ गुलिस्ताने-एरम[1]

कि है शह परी-एक बदी उल् जमाल
सो यू पाक सूरत है उसका मिसाल

वो शहबाल बिन शाह रुख़ राज की
सो बेटी है अति शर्म हौर लाज की[2]

परे हौर परियाँ जहाँ लग तमाम
करें आके शहबाल कूँ सब सलाम

वो ज़रबख़्त बेमिस्ल ना होवे कर
एक अंगुश्तरी एक तुरंग तिस उपर

लेकर आयकर पेश कश मुँज कियाँ[3]
एकाएक सब ग़ैब होकर गयाँ

न जान्या मैं इस धात होयगा ककर
कि असला न था कुच मुँजे यू खबर

सुलेमान तो नईं है जीता अताल
कि दिसता है मुज सर-बसर काम घाल

यहाँ कौन ऐसा है जान हौर पछान
जो देवे गुलिश्ताँ-एरम का निशान

लगे फ़िक्र आ शह कूँ इस धात का
मोअम्माँ[4] दिस्या मुश्क़िल इस बात का

अँदेशे मने पड़ हो दिलगीर अदीक
हलूँ शाहज़ादे के आया नज़ीक

---

१ जन्नत का बगीचा; यहाँ किसी स्थान विशेष के लिए प्रयुक्त हुआ है २ वो शहवाल...... लाज की—वह शाह रुख़ के बेटे शहवाल की बेटी है, जो बड़ी शर्म और लाज वाली है ३ वो जर बख्त......मुँज कियाँ—उन परियों ने उस वेश क़ीमती ज़री-कपड़े के अलावा, एक अँगूठी और एक घोड़ा भी दिया ४ समस्या।

कह्या ऐ मेरे मन के नूरी निहाल
उजाला दो जग का सो तेरा जमाल

तूँ जिस रूप केरा दीवाना अहे
वो ढूँढ़ने सो आलम में पाना अहे

उताला नको हो कि तुज ज़ियान है
उताला करनहार नादान है

तुजे इस वक़्त पर सबूरी[१] भली
तूँ आक़िल है तुज अक्ल पूरी भली

पछानत सिती खूब पहचान तूँ
न कर सूँ अपस कूँ परेशान तूँ

कितेक दीस ख़ातिर[२] कूँ टुक जमा राक[३]
दरद दूःख ते कर ले सीने कूँ पाक

जो लेऊँ परे[४] मैं कला हात पाँव[५]
ख़बर तेरे मक़्सूद की ठाँव ठाँव

जो इस धात सूँ मंग मुहलत लिया
सो लोगाँ कूँ मुल्के मुलुक भेजिया

पतिया[६] बाप की बात सैफुल मुलूक
रह्या दम पकड़[७] छोड़ दे दर्द दूक

लग्या फिरने ख़ुशहाल साअद सँगात
पकड़ कर रह्या वो उसे दिन व रात

१ सब्र २ (फ़ारसी) दिल ३ मन को चैन से रखना ४ पहले ५ हाथ पाँव चलाना, कोशिश करना ६ विश्वास करना, भरोसा करना ७ सब्र रखना।

गुलिस्तान एरम की खोज

गोहर सेज़[1] इस बेबदल-गंज[2] का
कहे खोल यूँ क़िस्सा इस रंज का[3]

जो गए थे रसूलाँ[4] तमाम एक बार
लगे ढूँढ़ने आलम मने ठार-ठार

सो ढूँढ़ने लगे कर उताला तमाम
सटे जाके आलम पे जाला तमाम[5]

ख़ुरासान, रूम हौर शाम हौर ख़ुतन
हबश हौर गुजरात दिल्ली दखन

इराक़ हौर शीराज़ रै[6] हौर ख़ुज़न्द
बुख़ारा; बलख़; यज़्द हौर समरक़न्द

समनजान, काशान, संजान सब
हलब, चीन, तूरान, ईरान सब

मखा[7] आगरा हौर सगल पुर्तगाल
सो मशरिक़ वो मग़रिब, जुनूब हौर शुमाल

लंका, पड़लंका[8] हौर बंगाला वो गौड़
बिचारे जिधर के उधर दौड़-दौड़

गए एक तरफ़ थे जगत् तल उपर
न पाए गुलिस्ताँ-एरम का ख़बर

बरस एक लग सब परेशान हो
फिर आए मिसर कूँ पशेमान हो

---

१ मोती रोलनेवाला, अच्छे अन्दाज़ में कहानी कहने वाला २ ऐसा ख़ज़ाना, जिसका मुक़ाबिला न हो सके ३ गोहर संज......रंज का——यह कहानी एक बेश क़ीमती ख़ज़ाने की तरह है और कहनेवाला मोती रोलने वाले की तरह है। उसने यहाँ से दुःख से भरी कहानी का कहना प्रारम्भ किया ४ दूत ५ सटे......तमाम——उन्होंने सारी दुनिया में अपना जाल फैला दिया ६ ईरान का एक शहर ७ मक्का ८ लंका से भी और आगे।

सुन्या ज्यूँ यू अहवाल सैफुल मुलूक
लग्या ग़म पे ग़म करने हौर दुःख पे दूक

अँधारे भरे घर मने जाय कर
पड़्या धरतरी[1] पर सो अड़ड़ाय कर[2]

सिना ग़म सिती कूट लेने लग्या[3]
कर उस नार कूँ याद रोने लग्या

सबूरी के पहिरन कूँ टुकड़े किया
सो बेहोशी के हात अपसें दिया[4]

लग्या इश्क दिन रात काढ़ा उसे
अड़ाया निपट होके आरा उसे[5]

सँगाती को अपने पुकारन लग्या
न सह-दुख विरह आह मारन लग्या

करे याद तिल-तिल रोवे ज़ार-ज़ार
पड़े बेख़बर होयकर टार-टार

खबर पायकर टुक जो हुशियार होय
नज़ीक आपने तो नहीं देख कोय

वो सूरत रखे आपने नयन-तल
उस ऊपर ते जावे अधीक बल-बल[6]

कहे यूँ कि मुज मन की दिलदार तूँ
मेरे मन में निसि-दिन बसनहार तूँ

तूँ किस समुद की ढाल मोती है कि
तूँ किस खान की लाल ज्योती है कि

---

१ धरित्री, पृथ्वी २ ज़ोर से गिरा ३ सिना......कूट लेने लग्या—ग़म से छाती पीटने लगा ४ सबूरी......अपसें किया—उसकी सब्र ख़तम हो गई और वह बेहोश हो गया ५ लग्या इश्क़......आरा उसे—इश्क़ ने आरे के समान उसे नष्ट करना शुरू किया ६ बलि-बलि जाना, न्योछावर होना।

किस असमान की है चन्द्र-भान तूँ
किस अक़लीन[1] की री है सुल्तान तूँ

है फुल डाल तूँ किस गुलिस्तान की
झमकती शमा किस शबिस्तान[2] की

जो इस धात तूँ मुजकूँ लुब्धाई है[3]
मेरे मन कूँ चित आपना लाई है

न जानूँ तुजे किस घड़ी पाऊँ मैं
सो क्यों ढूँढ़ काढूँ तेरा ठाँव मैं

न कुच इश्क़ का मुँज ख़बर था अवल
न कुच बिरह का मुँज को डर था अवल

तुही मुज पिरित लाग ते यूँ निढाल[4]
रहूँ क्यों सबूरी सो तुज बिन इताल

दिने-दिने इसी धात बैठा अछे
देखें उस पियारी कूँ जीता अछे

नवल शाह आसिम लग्या तलमलन
दुःखी पूत कूँ देख फिर-फिर जलन

रह्या सूख दुबला तुनक तार हो[5]
निपट ज़िन्दगानी से बेज़ार हो

अपस में अपें भर ठण्डी सर्द उसास
कया आयकर अपने फ़रज़न्द पास

कि ऐ बेबदल[6] नूर दीदे मेरे
अजब कुच देख्या हूँ मैं ताले[7] तेरे

जो कुछ फिक्र तुज हक़ पे करना अथा
बजिद होके मैं कर दिखाया बिता

१ मुल्क २ महल ३ लुब्धाई है, आकृष्ट की है ४ शक्तिहीन हो जाना ५ तार के जैसा दुबला पतला होना ६ ला जवाब; जिसकी तुलना न हो ७ क़िस्मत।

जगत् कूँ तल ऊपर कराया तमाम
सो मुल्के मुलूक उस ढूँढ़ाया तमाम

हुआ नईं कुच इस हद लग इज़हार अभूँ
इसी से पड़या नईं यू कित भार अभूँ

लग्या है परी सात तेरा जिया
न समझे किसी धात तेरा जिया

परी कूँ किनें जाके ल्या ना सके
कहाँ है सो किन खोज पा ना सके

मुजे कुच सो तदबीर दिसता नहीं
सो क्यों है कि तक़दीर दिसता नहीं

करेगा अगर मालो धन एख़्तियार
तो देउँगा तुजे बेहदो बेशुमार

अगर पादशाहाँ के बेट्याँ में कई
दिल अछता तो देता मिला तुजकूँ मैं

सैफुल मुलूक का जवाब

सुन्याँ सिर थे सैफुल-मुलूक ज्यूँ यू बात
हो तग़य्यीर[1] अपस में अपे धात-धात

कया "ऐ शहंशाह अगर लाख हूर
उतर आयें जन्नत ते मेरे हुज़ूर

तो ज़र्रा न हो किस पे मेरा ख़याल
मुजे हो तो होना बदीउलजमाल

किया सई[2] तूँ लई मेरे काम में
लिया रंज सर ख़ास हौर आम में

न कीता मेरे हक़ पे तक़सीर तूँ
किया करने के धात तदबीर तूँ[3]

हुआ दुःख तुजे मुज कदन[4] ते ज़ियाद
वले नईं हुआ तुज ते मेरा मुराद

मरे दिल में आता है अब यू ख़ियाल
जो लेऊँ रज़ा तुज कने ते इताल

फिरूँ जाके आलम के चौफीर[5] में
अपे हो करूँ अपनी तदबीर में

सो कैसा है देखूँ दरिया का सफ़र
जो लेऊँ गुलिस्ताँ-एरम का ख़बर

लिख्या होय तो हर सनद पाऊँगा
मेरे आस थे मैं बरास[6] आऊँगा

भला है जो लाना मुजे बेगी बाट
कि बहुत ही च पकड़्या मुँज दिल उच्चाट

१ (अरबी) बदल जाना २ (अरबी) कोशिश ३ न कीता......तूँ—आपने मेरे लिए कोई प्रयत्न उठा न रखा ४ मेरी तरफ़ से, मेरी वजह से ५ चारों तरफ़ ६ आशा का पूरा होना।

लगे बिरह उसका सो ज्यूँ खर्ग मुंज
यूँ जीना अख्याँ तल दीसे मर्ग मुंज[1]

अपन मन में पैदा कर ऐसा ख़याल"
पड़्या बाप केरा मुसल्लम दुंबाल[2]

जो था शाह अव्वल ते रंजूर पूर
हुवा सिर ते भी दुःख तले चूर-चूर

किते वज़ा सूँ तलमलाने लग्या
ग़ोते ग़म के दरिया में खाने लग्या

कया यूँ कि फ़रज़न्द मुजे है सो एक
क्यों उस एक कूँ देऊँ रज़ा देक देक

सकत है जो बिन तख़्त बिन ताज अछूँ
वले ताब नईं मैं जो उस बाज अछूँ

किते करन पीछे मुजे ज़ुलजलाल[3]
दया कर दिया है यू नूरी निहाल

नयन तल थे क्यों मैं भगाऊँ उसे
सितम क्यों ग़रीबी में बहाऊँ उसे

मेरा दीन यू हौर ईमान है
मेरा जीव उस पर ते क़ुरबान है

कितेक बार कूँ फिर अंदेशे संगात
कहने लग्या क्यों रखूँ क़ैद सात

मवादा[4] दुःखों ते सीना फोड़ ले
मवादा यू जीवन ते दिल तोड़ ले

---

१ लगे विरह......मर्ग मुंज—उसकी जुदाई मुझे तलवार की तरह तकलीफ़ पहुँचाती है; उसके बिना जीना मेरी आँखों में मौत के समान है २ पड़्या बाप... ...दुंबाल—अपने मन में ऐसा ख़याल करके अपनी बात को पूरा कराने के लिए, वह अपने बाप के पीछे पड़ गया ३ महान्, ईश्वर ४ कहीं ऐसा न हो ।

दोजा हौर नईं है जो करूँ कुच उसे
किया है निपट इश्क़ यूँ हेच उसे

भला जो ख़ुदा पर तवक्क़ल[१] करूँ
उसे बाट लाने केरा बल करूँ

सफ़र जाके या मन के मक़सूद पाए
जफ़ा दुक ते खिचवा के या फिर के आए

थू दो हाल थे काम खाली नहीं
बिन इस फ़िक्र ते फ़िक्र हाली नहीं

बरस पाँच के मुस्तएदी[२] किया
दिल उसका मँगे त्यूँ दिलासा दिया

नवल शाह आसिम शहे कामियाब
बुला भेज कारीगराँ कूँ शिताब

सो फ़रमाइया कश्तियाँ बेनज़ीर
एक-एक कश्ती एक-एक दरिया गँभीर

हर एकस में हुजरे[३] किते तरह के
निछल तख़्त-पोशे घराँ फ़रह के[४]

बजह तर भजर नक्श का ठार-ठार
जहाँ का तहाँ काम ख़ूब उस्तवार[५]

करे इस वज़ा तीन सौ कश्तियाँ
देक उस कश्तियाँ कूँ भुले भिश्तियाँ[६]

कुदूरत[७] उसे होय न त्यूँ बाट में
न दुःख दाट आए क्यों जंगल घाट में

---

१ (अरबी) भरोसा २ तैयारी किया ३ कमरे ४ ख़ुशी के घर, ख़ुशी और आनन्द देनेवाले ५ मज़बूत ६ देक उस... ...भिश्तियाँ—इन किश्तियों को देख कर भिश्ती भी आकृष्ट हो जाते थे ७ तकलीफ़ ।

कितेक माहरूयाँ[1] कूँ ख़ुश नाज़ के
कितेक मुतरिबाना[2] ख़ुश आवाज़ के

कितेक ख़ुश ज़राफ़त के निर्मल ज़रीफ़
कितेक बे बदल क़िस्सा खाना हरीफ़

कितेक खण्डियाँ अरग़वानी[3] शराब
कितेक जिन्स के न्यामताँ बे हिसाब

कितेक ख़ूब तोहफ़े कितेक करोड़ माल
कितेक ज़ात तेज़ी पवन के मिसाल

कितेक फ़ौज़ लश्कर केरे बेनज़ीर
कितेक टोले सौदागराँ के गँभीर

कितेक जिन्स के ख़ूब बाँदी ग़ुलाम
अपे हो बजिद[4] मुस्तइद कर तमाम

कितेक जिन्स का मूप[5] कर वेशुमार
दे साऱ्याँ कूँ तरतीब सब एक बार

हर एक काम पर शह अपे हो बजिद
जो कुच करने का था किया मुस्तइद

समज धात इस वफ़ा दैर का
ख़ुदा ते मदद मंगले ख़ैर का

दे साअद कूँ सैफुलमुलूक के दुंबाल
रवाना किया हौर हुवा वईं निढाल

लग्या रोने फ़रज़न्द के ध्यान सूँ
बुला भेज वईं अपने परधान[6] कूँ

किया मुल्क उसके हवाले तमाम
सोजा ख़ाली घर में अपे सुबह-शाम

इबादत सूँ मशग़ूल हो रात दिन
दुवा सात चित लाइया छीन-छीन[7]

---

१. माह, (चन्द्रमा) के समान सुन्दर औरतें २ मुतरिब का बहुवचन; गानेवाले ३ नारंगी रंग का ४ कोशिश के साथ ५ सामान ६ प्रधान ७ क्षण-क्षण, हर समय।

गुलिस्तान एरम की खोज में

करनहार सैर इस पिरित घाट का
देवे काड़ मार्ग[1] यूँ उस बाट का

जो साश्रद वो सैफुल मुलूक जहाज चढ़
चले गुलगुले सात दरिया में पड़

तलें साफ़ पानी उपर आसमाँ
बरसता हवा मोअतदिल[2] दरमियाँ

सभा बख़्श चौंधीर मौजाँ गँभीर
तमाशे कितेक इसे मने बेनज़ीर

सो देक ज़ौक पाने मने धात-धात
चलाने लगे जहाज़ दिन हौर रात

सो नज़दीक ज्यूँ चीन के आइए
सो जासूस वाँ के ख़बर पाइए

कहे जाके वईं शाहे फ़ग़फ़ूर[3] धीर
कि आता है फ़ौजाँ सूँ लश्कर गँभीर

न जाने किधर चाल करते हैं वो
वले इस तरफ़ ख़्याल धरते हैं वो

सुने बात फ़ग़फ़ूर हुशियार हो
किया मुस्तइद आपना ठार वो

ख़बरदार लोगाँ कूँ कर कोट के
दिला सारे दरवाज़े गड़[4] कोट के

चुन्याँ ख़ूब कूँ अपने ख़ासा मने
दिया भेज कर शाहज़ादे कने

पुछाया कि "तुम क्या सबब आए हो
तुमें कौन हैं? दिल में क्या ल्याये हो

---

१ रास्ता निकालना, उपाय निकालना २ सम शीतोष्ण जलवायु ३ चीन का बादशाह ४ गढ़ ।

अगर दोस्ती की जो कुच बात है
तो फ़रमाओ, कुदरत मेरे हात है

अगर कुच अछेगा तलब माल पर
हती हौर घोड़े रतन लाल पर

इशारत[1] करो ल्यो मुज पास ते
वरास[2] हो उतम आपने आस ते

जो कुछ है सो कह भेज देवो शिताब
मेरे पास ते ज्वाब लेवो शिताब"

जो वो शाहज़ादा गुनी नेक नाम
सुन्या मूँ ते हाजिब[3] के बाताँ तमाम

जो कोई आए थे देखने यू खबर
उनन शाहज़ादा बुला भेज कर

अपन सामने सबकूँ बसलाइया
जो कुच कये सो खातिर मने लाइया

हँसा खिलखिला हौर उठा बोल यूँ
उनन खुश हुए त्यूँ कया खोल यूँ

कि "जा यूँ कहो शाहे फ़गफ़ूर सात
कि कुच काम नईं मुझकूँ तुमना सँगात

रखो खातिर अपना तुमें जमा कर
कि नईं है मेरा दिल किसी तमा[4] पर

मेरे पास है माल व धन बेक़यास
जो कुच बस्तु होना सो है मेरे पास

वले इश्क़ के मुल्क का सय मैं
करनहार निकल्या हूँ; कुच ग़ैर नईं"

---

१ बतलाओ, इशारा करो २ आशा का पूरा होना ३ दूत ४ (अरबी) लालच ।

कि इस धात सूँ कये वो हाजिब सँगात
दे खिलअत किया ख़ुश तमाम उसकी ज़ात

ख़ुशी सात फिर वाँ ते सब वो जने
जो फ़ग़फ़ूर के आए खिदमत मने

अदब सात एक धर ते कीते सलाम
कहे खोल कर वो हक़ीक़त तमाम

किए शाहज़ादे की तारीफ़ यों
सो फ़ग़फ़ूर ख़ुश हो खिल्या फूल ज्यों

मुहब्बत जो वई मन में ग़ालिब हुआ
देखन शाहज़ादे कूँ तालिब हुआ

सरब दल के ढुंबाल[1] ले दल पे दल
मिलन आइया आप फ़ग़फ़ूर चल

मिल्या शाहज़ादे सूँ ताज़ीम सात
चल्या शहर में लेके तकरीम सात

सो निकल्या वहीं ख़ुशरवी शान सूँ
मिल्या हौर चल्या ले के बहुमान सूँ

बड़े दाब की मेहमानी किया
ज़ियाफ़त भली ख़ुशरवानी किया

ज़ियाफ़त उपर कर ज़ियाफ़त[2] ज़ियाद
किया शाहज़ादे के रूँ रूँ कूँ शाद

तमाम उसके लश्कर से मिल चन्द रोज़
लग्या बार, हो करने आनन्द ज़ोर[3]

जिते आए सो शाहज़ादे के सात
वित्याँ कूँ किया तशरीफ़ाँ[4] धात धात

---

१ पीछे २ अधिक आतिथ्य करना ३ लग्या......आनन्द ज़ोर—यह अधिक आनन्द भी उसे भार होने लगा ४ इनाम देना ।

दिया खिलअताँ सबकूँ यूँ बेशुमार
जो दिखने लग्या भार ज्यूँ नौबहार[1]

रख्या पाँच जो दीस खुशहाल कर
मुहब्बत सूँ वाक़िफ़ हुआ हाल पर

मुरव्वत सूँ शहज़ादे के मन में पैस
लिया अन्त दिल का मिल एक ठार बैस

जो कुच शाहज़ादे के मक़सूद थे
सो खातिर मने सर-बसर ल्यावते

तलब चीन के सब चितार्याँ को कर
लिया गुलिस्ताने-एरम का खबर

सो उसका सुनें भी न थे नाम वाँ
यू हरगिज़ किसी कूँ न था फ़ाम वाँ

नहीं दे सके कोई उसका निशाँ
किसी थे हुआ नईं यक़ीन व गुमाँ

सो उस वक्त एक सौ सत्तर बरस का
बुढ़ा मर्द एक कोई उस ठार था

बुला कर तफ़ह्हुस[2] किए उस थे ज्यूँ
सो वो पीर मर्द आ दिया ज्वाब यूँ

कि दायम[3] दरिया फिर के देख्या हूँ मैं
वले गुलिस्ताने एरम कईं तो नईं

मगर शहरे कुस्तुन्तुनियाँ में जो कोई
खबर दार इस बाग़ थे, होइ तो होइ

कि आता है वाँ खल्क़[4] लई दूर का
मुसाफ़िर जिता सातो सन्दूर का

१ किया खिलअताँ......ज्यूँ नौबहार—उसने लोगों को इतने रंग-बिरंगे पोशाक दिए कि, बाहर ऐसा मालूम होने लगा कि वसन्त ऋतु आ गई है २ पूछना ३ हमेशा ४ लोग ।

ज्यूँ उस थे सुन्या शाहज़ादा यू बात
अपन दिल कूँ दे फिर उताले के हात[1]

हुआ शह के एहसान का हक़गुज़ार
किया लई दुवा हौर सना[2] बेशुमार

हज़ार आरज़ू सात धर मन में आ
चला वईं रज़ा लेने फ़ग़फ़ूर पास

रज़ा मँग ली वईं हुआ मुस्तइद
सो उस शहर लग जावने हो बजिद

तमाम अपने लश्कर सूँ कश्त्याँ में बैस
चल्या इश्क़ के बल सूँ दरिया में पैस

शिताबी सूँ जा आँपड़्या उस नगर
सो लोगाँ कूँ वाँके बुला भेज कर

लग्या पूछने "गुलिस्ताने एरम
कहो बेग मेरे उपर कर करम"

कहे लोग वाँ के "कि सुन ऐ जवाँ
कि हम जानते नईं एरम का निशाँ"

चल्या शाहज़ादा वहाँ ते निकल
अँझू डालता मोहनी के बदल[3]

पयापै[4] कितेक दीस कश्त्याँ चलाए
सो एक ठार दरिया के दरम्यान आए

सो औकल क़ज़ा हौर क़दर आ खड़्या[5]
सो काम आ किधर का किधर आ पड़्या

---

१ उतावला होना, बेचैन होना २ तारीफ़ ३ अंझूँ......बदल—अपनी प्रेमिका के लिए आँसू बहाता हुआ चला ४ (फ़ारसी) लगातार ५ सो औकल......खड़्या—ईश्वरेच्छा से उनके मार्ग में कुछ परेशानी आई।

एकाएक उठा बाव तूफ़ान का
दर्‌या कूँ चड़्या ताव तूफ़ान का[1]

निपट आए थे डाट काले अभाल[2]
छिपा सूर हौर चाँद पकड़्या पताल

बरसने लग्या मेग उपराल थे
न बरस्या कधीं यूँ बरशगाल[3] थे

पड़्या गिर्द चारों तरफ़ अन्धकार
कड़कने लग्याँ बिजलियाँ ठार-ठार

न दिन फ़ाम होता समजते न रात
हुआ रात हौर दीस मिल एक धात

खुदा सूँ पड़्या आके सार्‌याँ कूँ काम
भरोसा सटे[4] जीवने का तमाम

कि दरिया उबलने लग्या शोर सूँ
उठे मौज तूफ़ान के ज़ोर सूँ

हुयाँ कश्तियाँ दरहम[5] एक धीरते
रह्या खल्क़ आजिज़ हो तदबीर ते

भर आया जहाज़ाँ मने आब सब
गँवाता गया माल व असबाब सब

बड़ा कुच हुआ तफ़रक़ा हौलनाक[6]
हुए लोग लई एक तरफ़ ते हलाक

उठ्या मौज ज्यूँ वो बहती वहीं
चली शाहज़ादे की कश्ती कहीं

हुआ जहाज़ तूफ़ान ते चूर-चूर
मलिक हौर साअद पड़े दूर-दूर

---

१ समुद्र में तूफ़ान उठने लगे २ बादल ३ वर्षा काल ४ आशा खतम होना ५ तितर-बितर होना ६ दुःखदायी अलगाव।

बला साअद अपसीस ले धात-धात[1]
चल्या वो कहीं अपनी कश्ती सँगात

तरफ़ रूम के जाके साअद पड़्या
हबश मुल्क कूँ जाय तख़्ता लग्या

लगा लग इसी धात चालीस दिन
हर एकस पे तूफ़ान गुजर्‌या कठिन

बला साअद... ...धात-धात—साअद तरह तरह की मुसीबतें अपने सर लेके चला।

हब्शियों की क़ैद में

जो मेह हौर वारा हुआ कम टुक एक
सो सैफुल मुलूक पाइया दम टुक एक

अमालाँ[1] हुए दरमियानी ते दूर
हुआ सूर का नूर जग में ज़ुहूर

अख्याँ खोल देखन लग्या ठार-ठार
न लश्कर है अपना न साअद है यार

सो आये दरेगे[2] अदिक डाट कर[3]
हुवा सख़्त बेसुध सिना फाट कर

सभी ग़र्क हो जाके याराँ पचास
जो बाँचे अथे सो मिले आस-पास

उन्वा शाहज़ादे कूँ बस लाइए
नसीहत सूँ अँगे होकर आइए

"कि सुन ऐ दुःखी शाहज़ादे गँभीर
लिया यू बला तूँ बसा अपने सीर

किसी का यहाँ कूच तदबीर नईं
यू वाक़ा हमन बाज तक़दीर नईं

दिल इस दुक ते घट करके रहना भला
जो कुच है जफ़ा[4] दुख सो सहना भला

करें मिल तवक्कल[5] ख़ुदा पर तमाम
देखें आक़िबत[6] किस वज़ा होवे काम

कहे लई सनद सात[7] याराँ वले
कलेजा दुरूनी[8] में उसका जले

---

१ बादल २ बुरे-बुरे विचार ३ अधिक संख्या में ४ जुल्म ५ भरोसा ६ नतीजा ७ कई तरकीबों से ८ अन्दर ही अन्दर।

अथा शाहज़ादे कूँ रोए बिन क़रार
कि साअद के उपराल था बहुत प्यार

फ़लक भी फिरन-हार जो फिर पड़्या
बला हो के उपराल थे गिर पड़्या[१]

एका-एक बड़े गुल सिती हाँक मार
निकल ज़ंगियाँ[२] आए एक धरते भार

सिलहकोश[३] सारे बड़े घात के
बड़े थोबड़े हौर बड़े ज़ात के

दरिया पर के वो चोर सारे अथे
पकड़ आदमियाँ खान-हारे अथे

देखे शाहज़ादे की कश्ती को आ
लगे मारने बाँ[४] तुफंगाँ[५] बला

लड़ाई किए आके शर शोर सों
किए ज़ेर दारोगिरी[६] ज़ोर सों

पकड़ शाहज़ादे कूँ यारा सँगात
वहीं बन्द कर ले चले राते-रात

सुबह का उजाला हुआ देखकर
सब आए किनारे कूँ दरिया-उतर

निभा देखते हैं जो दरिया किनार
रखे हैं तखत एक ऊँचा सँवार

कुढंगी, जँगी अलखन[७] उसपे चढ़
बड़े वज़ा बैठ्या है सख़्ती अकड़

---

१ फ़लक़ भी......गिर पड्या——आसमान मानो मुसीबत होकर उसके ऊपर गिर पड़ा २ हबशी
३ हथियार बन्द ४ बान, बाण, तीर ५ बन्दूक ३ पकड़-धकड़ ७ जिसको देखा न जा सके ।

इता कूच बदशक्ल चेहरा अथा
जो देखन किसे उस कूँ ज़ोहरा न था[1]

फ़रिश्ते भी डरते अथे अर्श पर
उतर आवने इस ज़मीं फ़र्श पर

बड़ा भूत कहते सो था आप वो
कि सारे भूताँ केरा बाप वो

गया होंट उपर का जो इक धीर कूँ
लग्या था पिशानी उलंग सीर कूँ[2]

तलें का यूँ आया अथा लुड़क होंट
जो था उसके गुरग्याँ मने फ़र्क़ बहूत

लम्बा क़द लम्बी नाक चौड़े बुलाख[3]
जिसे ग़ार के नाद लबदाँ फ़राख[4]

बड़े डाँगरे सार के कान दो
उजड़ घर केरे खोड़ जो रान दो[5]

मसे काले उसके अथे मुँह पर
मख्याँ भिन भिनाती हैं ज्यूँ गूह पर

अँगुठ्याँ बदल आपने साज़ के
खुश अँगुल्याँ में पहना डले प्याज के

पकड़ उसके नज़दीक साऱ्याँ को ल्याए
उसे एक तरफ़ ते सलामाँ दिलाए

सो हबत सूँ साऱ्याँ के सीने फुटे
लगे काँपने हौर तक़वा सटे

---

१ मजाल न होना २ गया होट......सीर कूँ—उसका ऊपर का होंट निकला हुआ था और ऐसा मालूम होता था, जैसे छलांग मार कर सर तक पहुँच गया हो ३ नथने ४ चौड़े ५ बड़े डाँगरे......रान दो—उसके दोनों कान डाँगरे (वह बूढ़ा बैल जिसके शरीर पर मांस न हो) के समान थे और उसकी रानें किसी पुराने गिरे हुए घर के निकले हुए खम्भों की तरह मालूम हो रहीं थीं।

बड़े शाहज़ादे कूँ वो देख कर
ले जावो कह्या अपनी बेटी के घर

सो काले ज़ंगी दोय संगात जा
दिए उसकी बेटी केरे हाथ जा

लेकर आए ज़ंगन कने शाह कूँ
मिलाए ज़ोहल[1] सात ज्यूँ माह कूँ

जु बेटी कने बाप भेजे जिसे
उसे तिल मने भून खावे उसे

वले शाहज़ादे का देख वो जमाल
दिवानी हुई इश्क़ लाई कमाल

अथा खुश हवा का जो एक मर्ग़ज़ार[2]
सोहावे लताफ़त में जन्नत के सार

छिपाने कूँ फ़रमाई उस ठार उसे
किए क़ैद निकले न त्यूँ भार उसे

गुज़र कर गया म्याने एक सातरा[3]
मलिक ज़ादे कूँ देख मुख-जातरा[4]

बड़े शौक़ हौर ज़ौक़ सूँ दौड़ आए
सो मुख शाहज़ादे केरा ज्यूँ निभाए

सो देक शाहज़ादा हुआ वई निढाल
रगे-रग में एक धर ते बैठा कँटाल[5]

कि ज़िश्ताँ[6] मने सख़्त वो ज़िश्त थी
निपट रूसियाही[7] में अंगुश्त थी[8]

१ एक मनहूस समझा जाने वाला सितारा २ चरागाह ३ सत्र ४ मुख-यात्रा, मुख देखना ५ नफ़रत करना ६ बदसूरत ७ काले रंग का मुँह ८ निपट......अंगुश्त थी—अपने रंग के कालापन में वह एक थी।

कि था थोबड़ा[1] उसका ज्यूँ फ़ील का
सर उसका सो काला रंजन[2] नील का

आँख्याँ डोंग्याँ ज्यूँ खुडी सार के
दो दीदे भितर ज्यूँ पथर गार के

चढ़या होंट उपराल का नाक पर
ठुडी पर पड़या है तलें का उतर

तमाम अंग गोनी केरा टाट ज्यूँ
चुच्याँ दो सीने पर हैं दो माट ज्यूँ

निकल पेट अँगे को ज्यूँ आ खड़ा
अथा पेट थे सख़्त पेडू बड़ा

बोंबी खुल रही थी सो ज्यूँ ऊखली
मुसल हो के दौड़ी थी रोमावली

लुड़कती जो चुतड़्याँ पे चोटी दिसे
जो ज्यूँ झाड़ की पेड़ मोटी दिसे

सूए सार पिड़ल्याँ उपर तेज़ बाल
न थी जग में डायन कोई उसके मिसाल

सड़ी बोई[3] बग़लाँ में ते यूँ झरे
जिनें बास उसकी सुँगे सो मरे

पवन सारका उसकी टुक बास पाय
तो ल्या हल्क में अंतड़ियाँ न्हास जाय

ज़ंग्याँ में कोई ऐसी काली न थी
हो काली कहीं ऐसी खुजाली[4] न थी

अगर लावें जिस ठार मशल हज़ार
उनावे तो तीरे पड़े अन्दकार

१ जबड़ा २ बड़ा मटका ३ बदबू ४ खुरदरे शरीर रखनेवाली ।

गंदी प्याज़ के डल पुरो छील कर
गले में हमायल-नमन[१] मैल कर

चतुर दो दमामें किते कोज के
नगारे बजाते हैं बिन कूच के

इता कुच ऊँचा था उसे
सिरी वाजते कोई पहुँचा उसे

न होय शाह राज़ी मनावें तो वो
अथे रोय हँसती जो आवे तो वो

चले घर मने शाहज़ादे कूँ ले
कँदोरे करे बार[२] अपने वले

जो बैठे दोनों मिल कँदोरे उपर
सो वो ज्यूँ हती हैर यू ज्यूँ मछर

कि आना मुवाफ़िक़ सूँ सोहबत घड़ी
पराँ उड़के जा फ़िक्र लागी बड़ी

जो फ़ारिग़ हुए पेट भर खान खा
मँगाई तुरुत मस्त प्याला निखा[३]

सो गड़व्याँ[४] पे गड़वे लगी झेलने
लगी शाहज़ादे सूँ मिल खेलने

पिये शाहज़ादे सूँ मिल बैस कर
मती होके खिलवत में गये पैस कर

सो अपने मुहब्बत करे शौक़ सूँ
मँगी ऐश करने के तईं ज़ौक सूँ

कुबुल्या नहीं शाहज़ादा उसे
डरया देख तन पर के उसके मसे

१ हार के जैसे गले में पहनना २ दस्तरख़ान तैयार करना ३ अच्छा ४ टूँटीदार लोटा।

सटी हात जा उसपे सोरात[1] कर
सो दरहम[2] हो मार्‌या वहीं लात कर

निपट दिल में जागा किया कन्दराट[3]
सो फ़ामी वो ज़ंगीन डायन खुसाट[4]

ग़ुसे सात अत ज़ंगियाँ कूँ बुलाय
सो संगीं चक्की पीसने कूँ मँगाय

मालिकज़ादे के कन ले जावो, कही
सुब्ह उठ के आटा पिसावो, कही

हुआ शाहज़ादा दुःखी ला इलाज
क्या दिल में मौत अपनी आई है आज

लग्या पीसने आटा लहूँ आँट कर[5]
छले आए हाताँ कूँ सब डाट कर

सो खलरी निकल आई दोय हात की
मशक़्क़त लगी दीस हौर रात की

हथेल्याँ जो नाज़ुक अथे पान थे
नरम तर नरम रूई खतियान[6] थे

गठे पड़ रहे सख़्त फ़ौलाद हो
गई नाज़ुकी तन की बरबाद हो

१ लालच में आना २ ग़ुस्से में आना ३ नफ़रत करना ४ खूसट ५ लहू का औंटना, ख़ून का खौलना ६ एक बहुत ही अच्छे क़िस्म की रुई।

जंगी की क़ैद से निकल भागना

कितेक दिन कूँ वो ज़ंगिए नाबिकार[1]
सुन्याँ ज्यूँ सो घर में ते काढ़्या बहार

सो बेटी कदीं थे बुरा मानकर
कपट दि्ल मने हाथ में आनकर

मँगाया वबर[2] एक लसड़ी[3] सँगात
दिया फिर दुःखी शाहज़ादे के हाथ

दे याराँ कूँ दुंबाल उसके तमाम
सो लकड़्याँ ढुलाने लग्या सुबह शाम

रह्या शाहज़ादे केरा हाल सब
दुःखों तल हुआ हाल पामाल सब

गए कपड़े सब आँग के फाट-फाट
परेशानगी हो लग्या वई उचाट

मशक़्क़त लगी दीस हौर रात की
न थी कुछ ख़बर पाँव हौर हात की

नसीबे कूँ जल बोल मारन लग्या
सो याराँ थे मिल यूँ बिचारन लग्या

किया फ़िक्र ये अपने याराँ के पास
भला है जो उस ठार थे जाय न्हास[4]

जो सौ बरस अछेंगे हमें इस कनें
रहेंगे इसी गिर्फ़तारी मने

हमन पर किसे प्यार आसे न याँ
हमारा दरद दूक यासे न याँ

---

१ (फ़ारसी) जो किसी काम का न हो २ कुल्हाड़ी ३ रस्सी ४ भागना ।

सकल मस्त एक होय कर एक बार
किए होड़ी[1] एक मुस्तइद उस्तवार[2]

अपस सबकूँ उस हौड़ी के बीच डाल
तवक्कल[3] ख़ुदावन्द ताला पे घाल

जँग्याँ के छुटे हर तरफ़ बन्द थे
अनन्द पाए दन्दूयाँ केरे दन्द से[4]

१ नाव २ मज़बूत ३ भरोसा करना ४ जँग्याँ के......दन्द से—सैफुल मुलूक और उसके साथी हबशियों की क़ैद से आज़ाद हो गए और उन्हें दुश्मनों से प्राप्त होनेवाले दुःख से मुक्ति मिली ।

एक द्वीप में आना

दर्या के उपर ज्यूँ रवाना हुए
सो खुशहाल सबके पराना[1] हुए

सो हौड़े[2] चलाने लगे हाते-हात
कितेक दीस चलने लगे राते-रात

दिसे मौज कई ऊँच हौर नीच कई
ले जाता खड़ा बाव आ खींच कई

कहीं डूबते हौर कहीं तैरते
हलाकीं सितीं[3] फीरते फीरते

अचानक पड़े एक जज़ीरे में आ
क़रार उस जज़ीरे में टुक पाय जा

कितेक झाड़ वाँ देखते मेवेदार
हर एक झाड़ मेवा सों आया है बार

वो खुशहाल एक दम वहीं दूक छोड़
सो मेवे लगे खावने तोड़-तोड़

किए प्यास हौर भूक कूँ दफ़ा वाँ
हुआ दस्त राहत केरा नफ़ा वाँ

बजा लाए शुकराना करतार का
तमाशा देखे नादिर इस ठार का

हुई रात देक इस जज़ीरे मने
रहने का फ़िकर मिल किए सब जने

अथा झाड़ वाँ एक बलन्द सायादार
सो उस झाड़ पर चढ़ के बैठे हुशियार

---

१ प्राण, जान २ नावें ३ मृत्यु से बचते हुए।

अँधारा गिरद ज्यूँ हुआ ठार-ठार
जनावर निकल आए दरिया ते भार

निहंगाँ[1] कितेक पहाड़ वैसे गँभीर
हती सारके माहियाँ[2] वेनज़ीर

अख्याँ दूर थे सो दिखे उनके यूँ
अँधारे मने देवतियाँ[3] लाये ज्यूँ

कितेक शक्ल में ऐन जैसे शिग़ाल[4]
कितेक बदशकल रींछ केरे मिसाल

कितेक उस मने के थे ऐसे बड़े
देखे आदमी तो वहीं जल मरे

कितेक बहुत हौर कब्क[5] की ज़ात के
कितेब सो शुतुरमुर्ग की धात के

कितेक उसमें रह रह उठें यूँ पुकार
जो होवे दर्या तल उपर जोश मार

सफ़ाँ दर सफ़ाँ[6] खुश गुजरते अथे
दर्या के उपर सैर करते अथे

नूरानी सुबह का जो बारा हुआ
चँदर का झलक टुक उतारा हुआ

सितारे लगे डूबने ठार-ठार
पंखी उठ लगे ग़ुल करन यूँ पुकार

अर्श[7] का मुरग बाँग कहने लग्या
सुबह का ठण्डा बाव बहने लग्या

सूरज के उजाले कूँ ज्यूँ खोज पाय
सब एक घर ते डुब्की दरिया म्याने खाय

---

१ (फ़ारसी) मगर २ (फ़ारसी) मछली ३ दीवट ४ (फ़ारसी) भोड़िया ५ चकोर ६ क़तार की क़तार ७ आठवाँ आसमान जहाँ ख़ुदा रहता है ।

रयन सब दरिया का देखत यू खलल
छुपे ठार ते शहज़ादा निकल

कहा यूँ ज़बाँ खोल याराँ सिती
अपन दर्द के दोस्त-दाराँ[1] सिती

कहा यूँ "कि अब याँ ते जाना भला
बलायाँ ते अपसें बचाना भला"

सो चुन ज्यूँ मेवा निछल धात-धात
लिए बाँद तोशा ख़ुशी अपने सात

रवाना हुए बेग मिल सब जने
चले फिर तवक्कल सूँ दरिया मने

जफ़ा हौर दुःख देखते ठार-ठार
हुए भी परेशाँ महीने चहार

किधर जावते सो न था फ़ाम कुच
किसी के न था दिल कूँ आराम कुच

क़ज़ा[2] यूँ हुआ जो कहीं बाट पाये
एका-एक हौर एक जज़ीरे में आये

रहे बाट हौर ना किये वाँ मुक़ाम
जो कुच होवने का सो होये यू तमाम

१ साथी २ इत्तफ़ाक ऐसा हुआ।

बन्दरों की क़ैद में पड़ना

अजब वो जजीरा सफ़ादार[1] था
जो शद्दाद[2] के बहिश्त के सार था

कि था वाँ अजब कुच सफ़ा जाँ तहाँ
फ़रह पाये एक-एक के रूहाँ वहाँ

जो कुच जीव मँगता सो मेवा वहाँ
झाड़ाँ पे मौजूद था जाँ-तहाँ

किते झाड़ थे वाँ जो ना उस गिनत
रँगा रँग के जिन्स की हद ना अन्त

जनावर अथे उसमें कई धात के
कितेक ख़ुश नुमा कुमरियाँ[3] ज़ात के

कितेक नूर के नूरियाँ वेनज़ीर
कितेक बुलबुलाँ रावें[4] रोशन-ज़मीर[5]

हलावें हलूँ पंख हर डाल थे
पड़े मेवे झड़-झड़ सो उपराल थे

अपस में अपे ख़ुश हो मरग़ोलते[6]
कितेक जिन्स की बोलियाँ बोलते

हर एक झाड़ तल शाहज़ादा वहाँ
लग्या फिरने याराँ सूँ हो शादमाँ

हवा हौर ठण्डी छाँव ख़ुश वाँ की देक
लगे नींद सूँ नींद लेने टुक एक

सो ऐसे मने आए चोराँ वहाँ
पिछोंडे वँदे सब के हत ज़ोर साँ

---

१ साफ़ सुथरा २ एक बादशाह का नाम, जिसने दुनिया में जन्नत बनाई थी ३ कुमरी, एक पक्षी विशेष ४ रव करना, बोलना ५ दिल की बातों को ताड़ने वाले ६ चहचहाना ।

चले मारते लेके ख़्वारी[1] संगात
हुआ दूक याराँ कूँ भारी सँगात

ब्रहर हाल इस गुल में थे भार पड़[2]
चल्या शाहज़ादा कहीं न्हास कर

१ बेइज़्ज़ती करना २ बाहर पड़; बाहर निकल ।

कफ़्तारों का क़ैदी होना

निरंकार आधार जग छाँव है
करीमाँ मेहरबान का नाँव है

भर्‍याँ हैं वहाँ औरताँ ख़ुश शकल
चल्या देखता वाँ महल दर महल

एकस थे अथ्याँ एक साहब जमाल[1]
दुनिया में न थी उनकी सूरत मिसाल

हर एक की पेटाँ में मेहराब अथा
कलेजा मुअल्लक[2] लटकता अथा

पकड़ शाहज़ादे कूँ वई बन्द कर
लेकर आइयाँ अपने अपने राजे के घर

सौ सैफुल मुलूक देखता है जो वाँ
रखे में तख़त सूर सा दरमियाँ

सो बैठे हैं वाँ नार मक़बूल[3] ख़ूब
सुरज चाँद ते ख़ूब निरमल सरूप

मुकल्लल ज़रीनाँ[4] वो पेने हैं नार
ख़ुश आवाज़ सूँ देख बोली पुकार

"कहाँ ते तूँ आया है ऐ नेक नाम
तूँ किस मुल्क का बोल तेरा मुक़ाम

कि यू ख़ूब आदम है साहब जमाल
अँगे ल्याके पूछे ग़रीबी का हाल

तफ़ह्हुस किए[5] हाल कूँ सर-बसर
न तक़सीर कीते[6] हर एक बोल पर

---

१. एकस थे... ...साहब जमाल——एक से बढ़ कर एक ख़ूब सूरत २ जिसको कोई सहारा न हो ३ ख़ूबसूरत ४ ज़री का काम किया हुआ कपड़ा ५ खोज करना ६ खोद-खोद कर पूछना ।

बजाँ हाल जी दूक का था जिता
सरासर कया खोल कर सब विता

दुखिया ग़म थे उस ही के पाई तमाम
सो वो दूख ख़ातिर में ल्याई तमाम

बज़ाँ[1] आवो कई एक नार कूँ
सो बसलाने फ़रमाई लई प्यार सूँ

मँगाई कँदोरे शहा ने जिते
रिझाने को फ़रमाई नादिर विते

कँदोरी ते फ़ारिग़ हुए पर तमाम
क़िसा उनका ख़ातिर में ल्याई तमाम

बज़ाँ वो कही नार "ऐ जग उजाल
तूँ आपस कूँ याँ ते बहुत ले सँभाल

यू सासानियाँ आतिशी ज़ात हैं
तुझे खावेंगे......................बात हैं

सुन्याँ ज्यूँ सैफुल मुलूक बात कूँ
लग्या रोवने ग़म सूँ बहु धात सूँ

सो वो नार भी यूँ कही उसके तईं
"जो रोता है ऐ दुःख भरी धात तईं

अगर तूँ मेरा दिल करे ख़ुश अताल
जतन सूँ रखूँगी तुझे जीव-निहाल"

बुलाई नज़िक हौर सिने सूँ लगाई
अदिक प्यार सूँ लब मने लब मिलाई

करे तूँ जो सोहबत अगर मुंज सँगात
छिपा तुज रखूँगी निपट प्यार सात

---

१ (फ़ारसी) उसके बाद ।

जिता कुच्च मनाई मनाने के धात
क़ुबूल्या नहीं शह उस आतिश सँगात

क्या नार कूँ यूँ दुख्या ज़ात सूँ
सुन ऐ नार फिरता हूँ किस धात सूँ

सो वो नार मिलती न दिसती कहीं
उसे ढूँढ़ता जग में फिरता हूँ मैं

बग़ैर वो मिले किससे ना होऊँ जुफ़्त[1]
नको दिल में हाँडी पका[2] नार मुफ़्त

अजब मोहनी है वो नामाँ जमाल
सो है वो चंचल दहन[3] बदीउलजमाल

मेरा ध्यान अब छोड़ दे नार तूँ
मेरा दिल नहीं किस उपर नार सूँ

सुनी नार सैफ़ुल मुलूक ते यू बात
ग़ुसे सात दौड़ाई शह पे सो हात[4]

मँगी उसकूँ खाने के तईं तुफ़्त[5] हो
कलेजा मँगी खावने मुफ़्त हो

ग़ुसे सों रखाई सो एक सातरा
रखी क़ैद सूँ क़ैद कर सातरा

रह्या नार सूँ शह अदिक बन्द में
रोये याद कर नार कूँ बन्द में

अपस में अपें ग़म करे यूँ कहे
ख़ुदा या बचा तूँ बला यू अहे

बला यू बड़ी मुज गले आ पड़ी
न फ़ुरसत है जाने की मुश्किल घड़ी

१ मिलना २ ख़याली पुलाव पकाना ३ चंचलता को दूर करनेवाली ४ हाथ चलाना
५ ग़ुस्सा हो।

जो एक रात अधी रात गुजरी अथे
मँग्या न्हासने ताई उस बन्द थे

सो मद पी हुयाँ थीं मत्याँ वो जित्याँ
सो बेसुध हो अस-पास सकल्याँ सोत्याँ

हलूँ शाहज़ादा सो निकल्या बहार
लग्या खल्क़ कू देखने ठार-ठार

मत्याँ हो पड़्याँ हैं किसे नईं ख़बर
निकल भार आया दरिया के उपर

एका एक तख़्ता दिस्या एक वहाँ
निकल कर चल्या हौर हुआ तब रवाँ

जो तख़्ते पो जा बैठिया बेग वे
चल्या बावले उस उपर बेगवे[1]

दरियाँ में जफ़ा[2] हौर दुःख देखता
सो डुबता निकलता चल्या तैरता

कहीं बाव तूफ़ान का आ लगे
कहीं ताव तूफ़ान का जा लगे

न डूबे निपट ना तिरावे उसे
सो बारा[3] चहल दिन[4] फिरावे उसे

---
१ जल्दी से २ जुल्म ३ हवा ४ चालीस दिन ।

राक्षसों के द्वीप में पहुँचना

क़ज़ा[1] सों हुआ करम करतार का
लजाया निहायत कूँ एक बार का

छः महीने पिछे एक जज़ीरा दिस्या
जज़ीरा दिखत दिल मनें यूँ हँस्या

क्या दिल मनें शाह गुरबत संगात
जज़ीरा यू दिसता है रौशन सिफ़ात[2]

मबादा[3] अछेगी बला याँ कुबल
मबादा मुझे जाय चीता निगल

चल्या फ़िक्र करता जज़ीरे कने
सो रख तख़्ता उस पर लग्या फीरने

सो फिरने लग्या ज़ौक सूँ झाड़े झाड़
सो मेवा लगा खावने 'पाड़ पाड़[4]

एकाएक राकस निकल आके भार
सो पा बास आदम का दौड़्या पुकार

पहाड़ाँ के मानिन्द दौड़े जिते
सो हाकाँ[5] ते बादल गरज कर उठे

दिख्या शाहज़ादा बला याँ कुबल
सो तख़्ता बिसर कर चल्या वईं निकल

ज़मीं पर चल्या न्हासता न्हासता
न था न्हासने बिन कहीं आस्ता[6]

जहाँ फिर देखे उस बलायाँ कूँ शाह
पहाड़ दौड़ते हैं या बादल सियाह

---

१ संयोग वश २ विशेषताएँ रखनेवाला ३ कहीं ऐसा न हो ४ (मराठी) निकाल-निकाल ५ चिखना ६ ठिकाना।

सो फिर देखता हौर अधिक न्हाटता
अधिक न्हाटता हौर सिना फाटता

सो ज्यूँ उस पवन पर उड़ा ले चल्या
हवा पर चले त्यूँ ज़मीं पर चल्या

हुआ बे खबर दूख हौर भूख सूँ
अक़ल उसमें रही नईं सूक[१] सूँ

न था किस उसे ज़ात में एक ज़रा
न था कुव्वत उस न्हासने बिन ज़रा

छे महीने पिछे न्हासता न्हासता
खड़ा एक ज़ज़ीरे कने आस्ता

कितेक जिन्स के झाड़ आये थे बार
बड़े पाड़[२] थे झाड़ सब ठार-ठार

सो मेवा लग्या चुन के खाने के तईं
छे महीने पिछें उस मिल्या कूत[३] वईं

जो कल कूत सूँ खाय कर भी चल्या
जज़ीरे के उपराल एक गढ़ मिल्या

---

१ शोक २ पहाड़, पहाड़ के जैसे ऊँचे ३ रवाना ।

सकसारों के हाथों में गिरफ्तार होना

है सुबहान तेरा करम जिस उपर
तेरे अम्र[1] का जग कूँ होवे असर

जज़ीरे के भितराल डरता घुस्या
वाँ सकसार[2] एक दौड़ उस पर धस्या

सो सैफुल मुलुक कूँ पकड़ ले चल्या
सो जिव का भरोसा वहाँ ते टल्या

कह्या दिल मने ऐ ख़ुदावन्द पाक
बलयाँ ते पाड़या है मुज तन पे धाक

सो रोता वहाँ शह्‌र में आइया
दिल अपना तमाशे सूँ बहलाइया

सो बद-शक्ल मुँह है कुते सारका
बदन उस लुड़कता सुअर सारका

सो हत पाँव उनके हैं अदम्याँ के सार
वले तन मने रास्त बोलें पुकार[3]

सँवारा गया शह्‌र है इस वज़ा
जो किस मुल्क में शह्‌र नईं इस वज़ा

बड़ा शह्‌र मामूर[4] है जिन्स ते
न थे बिन वहाँ कोई सग सार ते

जो सैफुल मुलुक कूँ जो सकसार ने
पकड़ लाइया अपने राजे कने

सो सैफुल मुलुक देकता है जो वाँ
रविश हौर तरतीब शाही रवाँ[5]

---

१ हुक्म २ आदमी का हाथ-पैर रखनेवाली और कुत्तों का मुँह रखनेवाली योनि विशेष ३ वले तन...पुकार—आवाज़ मुँह से नहीं; बल्कि शरीर से ही निकलती है ४ मरा हुआ है ५ रविश......रवाँ—उसने देखा कि वहाँ बादशाहों का रंग ढंग है ।

ले गये सामने अपने राजे के पास
खड़े रह लगे देखने आस-पास

सो राजा कह्या अपने लोगाँ के तईं
जनावर नवा आज देख्या हूँ मैं

हुआ खुश जो कोई ल्याये थे उस उपर
दिया तशरिफ़ा उन कूँ ज़रबफ्त[1] ज़र

खिला खान मोटा करो कर उसे
इशारत सूँ फ़रमाइया और किसे

हँस्या बहुत खुशहाल ज्यों फूल खिल
रखाने कूँ फ़रमाइया संग दिल

रह्या बन्द में शाहज़ादा वहाँ
सो दिन बीस म्याने एकाएक वहाँ

खुदड़े[2] जो थे राकसाँ उसके तईं
जज़ीरा हर-एक ढूँढ़ते आये वईं

सो सगसार का शाह पाया खबर
बहुत राकसाँ आये कर शहर पर

वहीं तफ्त होकर[3] उठ्या सगसार
किया लड़ने तईं मुस्तइद अपना भार[4]

लड़ाई करन सुलह संजोत सों
जो मैदान जा खड़े रोत सों

सो सगसार सब शहर के भार गये
जिते आम हौर खास सब भार गये

हलूँ शाहज़ादा जो निकल्या बहार
लग्या देखने शहर में ठार-ठार

---

१ जरीं का काम किये हुए कपड़े २ खोजनेवाले ३ क्रुद्ध ४ फ़ौज ।

नज़र नईं पड़्या कोई सगसार वाँ
निकल शहर ते बेग हुआ रवाँ

चल्या न्हासता बेग जंगले जंगल
चढ़्या एक टेकान पर जा कुबल[1]

बलन्द ठार था वो जहाँ है इता
लम्बा हौर ऊँचा जो कई हद न था

उस उपराल चढ़ चौकदन[2] देखता
धरत हौर सन्दूर एक कर रह्या

किया शुक्र करतार का वाँ बहुत
नबी-ते मँग्या फिर शफ़ाअत[3] बहुत

जो सगसार राकस भी लड़ने लगे
एकस हात ते एक पड़ने लगे

सटे राकसाँ डोंगराँ कूँ उचा
सो सकसार क़त्ल कर ज़न बचा[4]

किते राकसाँ झाड़ सूँ मारते
कित्याँ कूँ ज़मीं पर फिरा मारते

किते राकसाँ जायँ उनको निगल
कित्याँ कूँ रगड़ कर सटें खाक तल

जो सगसार अड़ाड़ा के दौड़ें[5] बहुत
लेवें नाक मुँह तोड़, धड़ कूँ बहुत

लड़ाई देख्या शह कितेक दिन तलग
जो लड़ते अथे रात, दिन होय लग

चल्या वाँ ते सैफुल मुलुक हौर अँगे
सो माशूक़ के ग़म कूँ लेकर अँगे

---

१ दुर्गम टेकरी २ चारों तरफ़ ३ दुआ ४ सटे......जन बचा—राक्षसों ने सकसारों को बुरी तरह हरा दिया और उनकी औरतों बच्चों को क़त्ल कर दिया ५ ज़ोरों के साथ दौड़ना।

अपें हौर माशूक़ का ध्यान था
न बिन ध्यान माशूक़ कुच ध्यान था

कहीं ज़ौक सूँ हो चले हर जंगल
कहीं दूक सूँ जाय जिउड़ा[1] निकल

कहीं गाय ज्यूँ भाये[2] त्यूँ हाँक मार
कहीं याद कर नार कूँ रोये ज़ार

इसी ध्यान में साल वाँ तीन चल
कटा वो जंगल ग़म ते यूँ नयन-तल

---

१ जीव २ रँभाये, गाय की तरह बोलना।

दिवालपायों[1] के हाथ में पकड़ा जाना

इलाही जो उस पाक आशिक़ उपर
मिल्या एक जज़ीरा उसे ख़ूब तर

डर्‌या फिर जज़ीरे में जाने के तईं
बलायाँ की दहशत के पाने के तईं

जो उस शहर में जा देख्या हर मकाँ
कि नईं आदमी ज़ाद का कुच निशाँ

हर एक तरफ़ रौशन हैं बाज़ार चार
सँवारे गया है सो है ठार-ठार

भरे हैं वहाँ दालपाये[2] बहुत
न हिलते न चलते से बैठे बहुत

सो लिड़ने[3] लगे दालपाये वहाँ
हलूँ आके लट-पट हुए जाँ तहाँ

गले हौर हाताँ में पावाँ सूँ पेंच
लगे मारने हात सूँ खैंच खैंच

जो माँदा किए उसको दौड़ाय कर
वहाँ ते ले गए अपने राजे के घर

सो राजे के ज्यूँ सामने आइया
देखत शाहज़ादे कूँ वो यूँ कह्या

कि यू जानवर ख़ूब है अज़्म[4] का
तमाशा देखें ल्याव है बज़्म[5] का

रखाने कूँ फ़रमाइया बन्द कर
सो एक महल में जा रखे बन्द कर

---

१ दिवाल पाया—एक योनि विशेष, जिसके हाथ पैर में हड्डियाँ नहीं होतीं, ये ज़मीन पर सरकते हुए या लुढ़कते हुए चलते हैं २ दिवालपाये ३ लुढ़कते हुए आगे बढ़ने लगे ४ जैसा हम चाहते हैं ५ सभा ।

अदिक बन्द में शह हुआ ला-इलाज
कह्या मौत का घर मुज आया है आज

सो ल्या न्यामताँ उस खिलाने लगे
सो गो मुश्क कर गुल कूँ लाने लगे

कितेक दिन इसी बन्द में पड़ रह्या
निकल जाउँ कर फिक्र एक दिन किया

जो फ़ुरसत ख़ुदा ते मँग्या शाह ने
अधी रात गई फ़िक्र करते मने

सो मद पी हुए थे मती वो जिते
जो बेसुध हो अस-पास सकली सुते[1]

उसी में चढ़्या जाके एक महल पर
सख्या वईं उड़ी[2] हौर चल्या तल उतर

कितेक उसमें पा होश दौड़े सँगात
लिड़े कई कूदें यूँ जो बाँदर के धात

वहीं न्हाट कर जा जंगल में पड़्या
एकाएक ग़ारे में आकर उड़्या

अधी रात गये न्हासते उस मने
जो यूँ ग़ार के भार आया उने

हुआ है सो यूँ सुब्ह झलकार सूँ
देख्या दालपाये लगे पीठ सूँ

चल्या था दीस न्हासता जो तलग
जो ऐसे मने रात आई विलग

छुप्या सूर भी शाब[3] ले नूर का
खड़्या आ चँदा ताब ले नूर का

१ सोये २ छलांग लगाना ३ ख़ज़ाना।

चँदा चौकदन रख़्त साँदा अथा
तनावाँ सितार्‌याँ सूँ बाँद्या अथा[1]

सुरय्या[2] शमा जोत लुड़काय कर
जगा जोत असमान पर सर बसर

कंठ्या रात सकली सो जंगल मने
तमाशा देख़्या नादिर अवकल[3] मने

चड़्या जाय कर एक ऊँचा झाड़
वहाँ ते लग्या देखने ठार-ठार

कितेक झाड़ रौशन हुए नाल कर
कितेक झाड़ फिरते हैं ज्यूँ जाल कर

कितेक झाड़ पढ़ते हैं कुरआँ[4] वहाँ
कितेक शमा दिपते अहें जाँ-तहाँ

कितेक झाड़ इलहान[5] सूँ ज़िक्र कर
दुआ कूँ उचाये हैं हाताँ मगर

दुआ में रखे पात कूँ हात कर
कँठे[6] रैन सकली इसी बात पर

सो सैफुल मुलुक रैन सकली कँठ्या
उसी में उजाला रैन का फुट्या

चन्द्र जब निकल रफ़्त बाँद्या[7] तमाम
शफ़क़ में खड़ा रह किया उस सलाम

ज़माना जो हर दाय निकली बहार
ज़मीं का बदन पार था बार दार

---

१ चँदा......बाँद्या अथा—चन्द्रमा ने चारों तरफ़ अपना सामान फैला दिया था। चाँदनी के डेरों के तनावे सितारों से बँधे हुए थे २ एक तारे का नाम ३ अजीब ४ कुरान ५ आवाज़ ६ कटी, गुज़री ७ साज़-सामान बाँधा, चाँद डूबने लगा।

सती हात की नार के हात सों
शफ़क़ खून में थे उचा हात सों

मुरग़ अर्श का हाँक मारन लग्या
परिंद्याँ सूँ अपने बिचारन लग्या

परिन्दे लगे कूकने ठार-ठार
दरिन्दे चले सैर करने कूँ भार

रैन जिउँ जनी सुबह की पूत कूँ
सो रौशन हुआ सुबह की रूत सूँ[1]

---

१ रैन जिउँ... ...रूत सूँ—रात ने सुबह के पुत्र को जैसे ही जन्म दिया; वैसे ही पशु पक्षियों की आवाज़ सुनाई पड़ने लगी।

कैसरिया शहर में पहुँचना

उस अवतार बाज़ी केरा हुक्काबाज़
करे इस रविश सात यूँ हुक्काबाज़[1]

सो सैफुल मुलुक सर्वरे आशिक़ाँ
बिला शक़ है ताजे सरे आशिक़ाँ

निपट फाँक सबते मुजर्रद हुआ[2]
बिरह पर बिरह हदते बेहद हुआ

अधिक भूक हौर प्यास ते तलमल
लग्या सैर करने कूँ जँगले जँगल

हुआ सूख जा तन सो काड़ी के सार
वले नूर उसका अथा बरक़रार

जो तनहा जिधर चल के जाता अछे
उधर जँगल जगमगाता अछे

जहाँ लग जो बागाँ दरिन्दे अथे
जहाँ लग जनावर परिन्दे अथे

बराबर उसी के सो फिरने लगे
हो बेताब इश्क़ उस सूँ गिरने लगे

जहाँ झाड़ ऊँचा अछे सायादार
उस उपराल कर उस दुःखी कूँ सवार

जंगल में जा कई फल फलाली अछे
जो कुच फल फलाली सो आली अछे

सकल जायें चुन-चुन के ल्याने के तईं
मलिकज़ादे कूँ ल्या खिलाने के तईं

---

१ उस अवतार......हुक्काबाज़—सब से बड़ा बाजीगर जो वह ख़ुदा है; वह यहाँ एक और तमाशा दिखला रहा है २ अकेला हो जाना ।

मुसल्लम हुआ हुलूक[1] सैफुल मुलूक
लग्या सूसने[2] ग़म पे ग़म दुख पे दुख

जो देख्या जंगल के चिते बाग़ कूँ
हिरन, रीछ हौर अजगराँ नाग कूँ

निपट गड़बड़ा कर हुआ घाबरा
दरेग़े[3] सिती वई पड़्या थरथरा

सो कहने लग्या "ऐ ख़ुदावन्दगार
ऐ रहमान, ऐ पाक परवरदिगार

कहाँ ते मुजे तू कहाँ लाइया
सो ला किस बलायाँ में संपड़ाइया

न याँ आदमी ज़ाद का कई निशाँ
न मुज कूँ है याँ कोई जान हौर पहचान

जिधर देकता हूँ उधर बेक़यास
जंगल के जनावर खड़े आस-पास

गुमूँ क्यों उनन सात दिन रात मैं
करूँ इस गुंग्याँ सात क्या बात मैं

मुँजे कौन आ फाड़ खाता है कि
मेरा जीव ले कौन जाता है कि

दरेग़ा[4] मेरे बख़्त हैं कैसे सख़्त
किसी कूँ दुनियाँ में न होय ऐसे बख़्त[5]

न माँ बाप थे पा सकूँ कुच जवाब
न माशूक़ थे हो सकूँ कामयाब"

हर एक वक्त इस धात रोता अछे
निढाल अपने आप होता अछे

---

१ पूर्ण रूप से हलाक़ हो जाना २ बरदाश्त करना ३ डर से ४ अफ़सोस ५ भाग्य।

न ग़मता दिखत वक़्त अपना कहीं
किया फ़िक्र एक दीस मन में वहीं

सो एक रात अधी रात गुज़री देखत
जगत नैन कूँ नींद पकड़ी देखत

जनावर लगे ऊँगने ठार-ठार
पड़े बेख़बर सब न थे कोई हुशियार

एकाएक हुआ ग़ैब थे बल उसे
चड़्या हात हिम्मत केरा कल उसे

चल्या उस अधी रात वाँ ते निकल
बड़े दग़ दग़े सात जंगले जंगल

एकेला नंगे पाँव नंगे सरीर
थे ख़ारे मुग़ीलाँ[1] उसे ज्यों हरीर[2]

कितेक दिन कूँ जूँ बाट पाया टुक एक
नज़र तल पड़्या दूर ते शहर एक

जो उस शहर का क़ैसरिया था नाँव
सफ़ा जा बजा हौर हवा ठावँ-ठावँ

बड़ा शहर नाहद न कुच अन्त उसे
कि चौंधीर लग पेशोपश पन्त उसे

जो ल्या सातों असमान इसमें छुपायँ
तो एक कोने में इसके सब छुप के जायँ

निछल चौकदन रस्ते बाज़ार चार
सो जैसे लताफ़त में गुलज़ार चार

वले आदमी ज़ाद नईं कोई वहाँ
भरे हैं वहाँ बान्दरे जाँ तन्हाँ

---

१ जंगल के काँटे २ रेशमी कपड़ा।

हुकूमत उनन का च है ठार-ठार
उनन का च चलता है वाँ कारोबार

देखे शाहज़ादे कूँ जूँ सर-बसर
ले गये अपने राजे कने क़ैद कर

जो देखता है वाँ शाहज़ादा निभा
अजायब तरह का है ऊँचा छजा

रखा है जड़त का तखत म्याने-म्यान[1]
ज़मीं वाँ की दिसती है ज्यूँ आसमान

छबीला जवाँ एक गियानी सुगड़[2]
ख़ुश उस तख़्त उपराल बैठा है चड़

सकल बान्दरे दायरा छोड़ कर
खड़े हैं अदब सात हत जोड़ कर

बुला बाँदर्‌याँ कूँ कह्या वो जवाँ
कि कुर्सी ले कर आ रखो म्याने-म्याँ

ले कर आये जा बेग कुरसी निछल
कि जोड़े अथे इस जड़त बेबदल

मलिक जादे कूँ बैसला उस उपर
लग्या पूछने हाल उस सर बसर

"कि ऐ जान, तूँ काँ ते आया है कि
कहाँ काँते किस गाँव जाता है कि

तू किसका है जाया, तेरा ठावँ कौन ?
कहाँ चाँद तेरा है असमान कौन ?

तुजे काम किस वज़ा सूँ आ खड़्या
तू क्यों इस खराबे[3] मने में आपड़्या

१ बीचों-बीच २ सुघर ३ वीरानी जगह में।

सो कह मुज कने खोल ऐ यार तूँ
हो मेहमान चन्द रोज़ इस ठार तूँ"

जो ऐसी वो शीरीज़बानी किया
मलिक ज़ादे कूँ गाल पानी किया[1]

सो एक घर ते जो हाल अपना अथा
जो कुच तलमलाना व तपना अथा

जो कुच आके डाख्या अथा बाट में
जो कुच सर घिरा था जङ्गल घाट में

सरासर कह्या खोल इस जान सूँ
लग्या पूछने उस कूँ फिर ज्ञान सूँ

"कि ऐ बख़्तवर राज तुज राज की
तेरे तख़्त की हौर तेरे ताज की

रविश हौर तरतीब कुछ हौर है
तेरे बख़्त का बाव वर ज़ोर है[2]"

सो पूछया कि "इस राज इस ठार तूँ
मरातिब यू पाया है किस धात सूँ

तुजे बाँदऱ्या सात गमता है क्यूँ[3]
तेरे मन में ये ज़ौक़ जमता है क्यूँ

तेरी ख़ुशरवी का अजब तरह है
निम्माने थे मुज नयन कूँ फ़रह है[4]

अगर मुज पे तूँ आशकारा करे
दुआ तुज मेरा रूह सारा करे"

---

१ पिघला दिया २ तेरे बख्त... ...वर जोर है—तुम्हारी भाग्य ज़ोरों पर है ३ तुजे... गमता है क्यूँ—इन बन्दरों से तुम्हारी कैसे बनती है ४ तेरी ख़ुशरवी... ...फ़रह—तुम्हारी बादशाहत हमारी आँखों को ख़ुश करनेवाली है।

कह्या तब वो राजा "कि सुन ऐ अनीस
मेरा बाप था मिस्र केरा रईस

दिया भेज मुज करने सौदागरी
ले कर आने सौदा सो दरिया वरी

एकाएक सो कश्ती फुटी मौज मार
सो तख़्ते उपर एक निकल्या बहार

वहाँ बाँदरे फ़ौज़ कर आइये
पकड़ कर मुजे वाँ ते याँ लाइये

सितम ज़ोर सों बैसला तख़्त पर
दिये पादशाही मुज उस वक़्त पर

दोराई[1] मेरी शहर में सब फिराये
मुझे आपना राज कर बैसलाये

कि इस क़ौम के बाँदर्याँ में तमाम
चल्या है रसम इस वज़ा का मुदाम

जो मरता है राजा उनन का कधीं
क़रार उनको अछता नहीं है कहीं

दिये बादशाही किसे होय तायँ[2]
न जोड़्या कने जायँ न खान खायँ

उनन के अवल के महाराज की
सो बेटी है अत शर्म हौर लाज की

गमूँ इस सिती मैं कि हम जिन्स है
वो हम सार खाकी वह हम इन्स है

लिख्या इस वज़ा था सो अँपड़्या मुजे
ख़ुदा अम्न हौर देवे राहत तुजे[3]"

१ हुकूमत २ किसी को दिये तक ३ लिख्या इस......तुजे—मेरी क़िस्मत का लिखा इस तरह पूरा हुआ। ख़ुदा तुझे चैन और शान्ति दे।

मिल एकस कों एक बात कर इस तरीक़
कँदोरे शहाने अथे जिस तरीक़

किया अम्र ल्या बाह करने शिताब
कितेक जिन्स के न्यामताँ बेहिसाब

जो ल्याकर कँदोर किये बार ख़ूब
जड़त के रखे ज़फ हर ठार ख़ूब

दोनों मिल के ख़ुश ज़ौक सूँ खान खाये
रंगेला शराब अरग़वानी[१] मँगाये

पया पै[२] लगे ऐश सूँ झेलने
हुए मुस्तइद बाँदरे खेलने

अपस में अपें ताल मंडल बजाय
विकट बाजियाँ के तमाशे दिखाय

कुलाट्याँ उछलने लगे मेल ख़ूब
कितेक खेल मुज़हिक कितेक खेल ख़ूब

हुनर भेद अपना जिता था दिखाये
बहर हाल दोनों कूँ ख़ुश कर हँसाये

कितेक दीस शहज़ादे कूँ रख वो राज
किया बाट लाने[३] कूँ एक दिन इलाज

पयापै रख इस धात दिन तीन चार
शगुफ्ता[४] किया माँदगी[५] सब उतार

समज ख़्याल उसका कह्या यूँ उसे
"कि तूँ जिव सूँ आशिक हुआ है जिसे

यहाँ कोई इस थे ख़बर दार नईं
किसी मुल्क में वो तो इज़हार नईं[६]

१ नारंगी के रंग की २ लगातार ३ रास्ता निकालना ४ खुश किया ५ थकावट
६ ज़ाहिर नहीं है।

अजब कुछ है दुनियाँ में तेरा पिरित
न देखा कोई ऐसा भी गहरा पिरित

अँपड़ते तेरे दाद फ़रियाद कूँ
सकत नईं किसी आदमी ज़ाद कूँ

तेरे मन के मकसूद बर ल्यान हार
नहीं कोई याँ बाज परवरदिगार

तवक्कल सूँ कर आपने मन कूँ शाद
मुलुक ढूँढ़ हौर पा तूँ अपनी मुराद"

कि इस धात एक बादपा[१] ऐन जात
मँगाया जड़त के ख़ुश अबरन[२] सँगात

अँगे हो अपे सरकला उस उपर
हुआ उस केरे हक़ में लक धात कर

कर इज़हार अपने जिते मेह्र ते
रवाना किया ख़ुश उसे शहर ते

कितेक बाँदरे देके उसके गात
जहाँ लग है अपना मुलुक हौर विलात

वहाँ लग उस अँपड़ाव कर भेजिया
दुआ उसके हक़ बेनिहायत किया

चले बाँदरे उसकूँ अपड़ाव ते
तमाशा हर एक ठार दिखलावते

खड़े रहे रज़ा लेके ऐलाड़[३] ख़ुश
किये अपने सरहद थे पैलाड़[४] ख़ुश

---

१ तेज़ घोड़ा २ आभरण, घोड़े का पहनावा ३ इस तरफ़ ४ दूसरी तरफ़।

क़ैसरिया से रवाना होना

चल्या शाहज़ादा ले वैताग[1] भी
उठी सुलग कर विरह की आग भी

सो फिर अपने माशूक़ के ध्यान सूँ
झगड़ता ज़मीं हौर असमान सूँ

सरासर सरीर आपना जालता
अँगारे अझूँ गर्म अधिक डालता

पन्ते-पन्त जंगले-जंगल झाड़े-झाड़
गव्याँ[2] हौर झुड्डपे-झुड्डप[3] फाड़े-फाड़[4]

उलंगता गया एक जज़ीरे कने
जो देकता है जा उस जज़ीरे मने

लगे हैं गगन ऊँचे सन्दल के झाड़
खड़े हैं हर एक ठार ख़ुश पाँव गाड़

ज़मीं सब सोने की है इस ठार की
झलकने में ज्यूँ सूर के सारकी

भरे हैं मकोडे वहाँ ठार-ठार
हती सारके आदम्याँ खान हार

भुके होके फिरते हैं चारे के तईं
सो खाने मँगे इस बिचारे के तईं

लग्या फिर वो जिव के दुरूँ[5] न्हासने
सो देख्या पंखी एक ऐसे मने

बड़ा धड़ शुतुर्मुग के सारका
बड़े शह पराँ तेज़ मिनक़ार[6] का

---

१ मुसीबत २ गवी, शेर की माँद ३ झाड़ी ४ पहाड़ ५ मन ही मन में ६ चोंच ।

किनारे पे दरिया पे बैठा है आ
पकड़ वईं लिया उसके दो पाँव जा

चल्या उसको ले मुर्ग़ इस ठार ते
उड़्या हौर हुआ ग़ैब संसार ते

उलंगता उलंगता कितेक पाड़ वो
चल्या एक सन्दूर के पैलाड़ वो

सो हैराँ हुआ शाहज़ादा तुरुत[1]
लग्या फ़िक्र करने कूँ मन में बहुत

जो वाँते सो नईं न्हास सकता था कईं
लुड़कता चल्या उसके चंगुल में वईं

इसी फ़िक्र में शाहज़ादा रह्या
मुअल्लक[2] हवा पर सों घन पर चड़्यां

बज़ाँ[3] शाहज़ादा कह्या दिल मने
नहीं याँ ख़ुदा बाज़ मुश्किल मने

लग्या रोवने दिल में सो बख़्त पर
वहीं बख़्त सख़्ती ते सख़्त्याँ च उपर

अजब खेल तेरा है करतार हक़
तू जिउ बाँचने का मुजे दे सबक़

सख्या जिउ का वो भरोसा बहुत
लग्या ध्यान अल्लाह सों आकर तुरुत

इलाही बचाता अहे बहुत धात
इता यू पड़्या आके मुश्कित अत

१ वज्दी, जिसने इस किताब को नक़ल किया हैं, उसने किताब में नोट लिखा हैं कि नीचे के नव शेर केवल एक ही प्रति में पाये जाते हैं, मालूम होता है कि ये शेर किसी दूसरे के लिखे हुए हैं और बाद में मिलाए गए २ लटका हुआ ३ उसके बाद ।

सो तदबीर के हात ते बल किया
अदिक शाहज़ादा सो तलमल[1] रह्या

चल्या वो सो घन पर वतन आपने
सो अपने वतन बीच कूँ तापने

पड़्या ऐसे जंगल मने आयकर
जो फिर कोई आ ना सके जायकर

वहाँ आपने ठार का खोज काड़
हुआ सारजा एक उँचा है झाड़

सो उस झाड़ की पेड़ दौड़ पताल
सो डाल्याँ अँपड़ ले उठ्याँ थ्याँ अभाल[2]

उतार उस उपर शाहज़ादे के तई
बच्याँ पास अपने चल्या दौड़ वई

अवल थे एक आदम जो वई मारकर
रख्या था जतन आपने ठार पर

सो टुकड़े कर उस बाँट भाने लग्या
बच्याँ ताई अपने खिलाने लग्या

देखत शाहज़ादा जो उस झाड़ तल
पड़े सो जहाँ के तहाँ हाड़ गल

एकाएक ऐसे मने एक साँप
बड़ा सारका धड़ जमीं कूँ ले ढाँप

धुलारा उँचाता[3] वहाँ आइया
बच्याँ कूँ सो खाने के तई धाइया

चड़्या झाड़ उपराल वई झाँप मार
सब उसके बच्याँ को निगल एक बार

---

१ घबड़ाना २ बादल ३ धूल उड़ाता हुआ।

लिया उस मुरग़ की मुण्डी जायकर
भसम कर सट्या तिल मने खायकर

देख्या शाहज़ादा जो इस हाल कूँ
छुटी काँपनी तन पे हर बाल कूँ

जो हैबक़ज़दा हो लगा काँपने
सो तदबीर वाँ ते किया न्हासने

एकाएक कुबल आके बाज़ी घड़ी
सो वई झाड़ उपर ते मील्या उड़ी[1]

जँगल बीच पड़ लाख दुशवार सात
लग्या न्हासने ताईं बाकी सँगात

न कुच हाल तन में न कस पाँव में
सो उठता व पड़ता हर एक ठाँव में

अदिक प्यास हौर भूक ते तलमले
चल आया हलूँ एक हरे झड़ तले

सो वाँ एक चश्मा अथा आब का
खज़िल[2] उस अँगे आब गुल्लाब का

पड़्या था वहाँ ग़ैब का एक अनार
सो रँग-रस भर्या हौर मिठा दानेदार

भुका था सो वई छील खाया उसे
रगे-रग मने जीव आया उसे

पिया नीर चश्मे मने जाय कर
किया तकिया उस झाड़ तल आय कर

पंखी एक ऐसे में मरग़ोल[3] उठा
यूँ उस झाड़ उपराल थे बोल उठा

१ एका-एक......मील्या उड़ी—एकाएक एक बड़ी मुसीबत आई और टल गई २ शर्मिन्दा
३ बोल उठा ।

"सोता है जवाँ यू जो साहब जमाल
हुआ है जो बिरहे के ग़म में निढाल

बड़ा कुच बला एक याँ आयेगा
सो इस बेगुनह जवान कूँ खाएगा

पंखी दूसरा सुन बुरा मानकर
दरेगे[1] अधिक मन मने आन कर

लग्या पूछन उसकूँ यू क्या है कना[2]
कि इस बेगुनाह का सो क्या है गुनाह

कह्या वो पंखी खोल इस धात तब
कि क़िस्सा सो इस जवान का है अजब

कि एक दिन कितेक जिन आये अथे
मिल एक ठार मजलिस भराए अथे

जो कोई था बड़ा जिन जो मजलिस मने
एकाएक उठ्या बोलकर यूँ उनें

कि है वस्तु ऐसी जो वो खाई जाय
वो खाये तो जिन्नाँ की शाही मुंज आय

सुन्याँ हूँ कि कई बाग़ है एक रुख़न[3]
है उस बाग़ का नावँ अवतार बन

वहाँ झाड़ है एक अन्नार का
लग्या है उस एक फल जो अवतार का

देवेंगे मुजे ल्याके वो फल जो कोइ
तो मेरा प्रान उसते ख़ुश नूद होइ

मजलिस में बाज़े अथे जिन जिते
सो ढूँढ़ ल्यावेंगे कर क़बूले विते

---

१ ख़तरा, डर २ कहना ३ एक ही तरफ़।

छः महीने की फुरसत[1] लिये एक रुखन
चले ढूँढ़ लेने वो अवतार बन

सो एक जिन ने उस बाग़ कूँ पाइया
वो अवतार फल जायकर लाइया

एकाएक प्यासा हो पानी के आस
पीने नीर आया जो चश्मे के पास

वले फिर के जाता वखत नाबकार
बिसर कर गया था वो अवतार अनार

उसी फल कूँ यू ज्वान खाया अहे
वले भेद इसका न पाया अहे

बिसर कर गया सो वो जिन आग हो
बसाने बला उसपे आता है वो

अगर अक्ल कुच हो गया उस मनें
है खातिम[3] सुलेमान का उस कनें

वो जिन फिरके जिस वक्त याँ आयेगा
जो अनार ढूँढ़ने के तईं धायेगा

कना यूँ ग़ज़ब सूँ उसे हाँक मार
"कि ऐ जिन कुढंगी नजिस नाबकार

वो अवतार बन था सुलेमान का
रज़ाबाज[4] उसके फल उस ठार का

तुजे तोड़ने हात किस धात आये
तू क्या काम रह-रह किया हाय-हाये

सुलेमान भेजा अहे याँ मुजे
लेकर आवो बन्द कर पिछौंडे तुजे[5]

१ इज़ाजत लेना २ बेकार ३ अंगूठी ४ बिना आज्ञा के ५ लेकर......पिछौंड़े तुजे—सुलेमान ने तुम्हारी मुश्कें कस कर लाने के लिए मुझे भेजा है।

दिया है निशान आपना मेरे हात
खड़े हो न देसूँ[१] तुजे एक सात

वो जिन ज्यूँ सुलेमान केरा निशान
देखेगा तो उड़ जायेगा वई परान

दिसेगा उसे टुट पड़े त्यूँ अकास
सो छुप जाएगा बीच पाताल न्हास[२]"

सो सैफुल मुलुक ज्यूँ सुन्याँ यू बिचार
डड़ी मारकर जा छुपा एक टार

ज्यूँ आया वो जिन दौड़ चश्में कनें
एकाएक आया निकल भार उनें

अँगूठी दिखाया उसे हाँक मार
सो हैबक़ज़दा[३] होके बेअख़्तियार

हुआ ग़ैब पाताल में जा वो जिन
सलामत छुट्या उसके हाताँ ते इन

१ देखूँ २ दिसेगा......पाताल न्हास—उसे ऐसा मालूम होगा, जैसे आसमान टूट पड़ा हो वह दौड़ कर पाताल में जा छिपेगा २ बहुत अधिक डरना।

इस्फन्द नाम के द्वीप में पहुँचना

जो राहत क़लम की ज़बाँ को छुटे
क़लम साखे़ असरार की यूँ फुटे[1]

कि रहमान अपने बन्द्याँ के उपर
दया की जो मँगता है करने नज़र

उचा आपने प्यार के हाथ सूँ
बचाता है आफ़त थे हर घात सूँ

करीमी[2] जहाँ पर करन हार वै
मशक्क़त कूँ राहत देवन हार वै

जो निकल्या वहाँ थे सो सैफुल मुलूक
पड़्या जाके हौर एक जंगल में चूक

एकेला जो आँगे हो जाने लगा
कठिन बाट कूँ चल घटाने लग्या

चड़्या जायकर एक टेकाँ उपर
देख्या दूर ते एक मैदाँ उपर

सो चौंधीर उजाला बरसता अहे
जँगल नूर सीते च बसता अहे[3]

लगा बहुत उसे यू तमाशा अजब
रह्या गुम हो आपस मने आप तब

चड़्या टेक उपर थे उतर आइया
नज़र चार अतराफ़ दौड़ाइया

सो बेमिस्ल नक्शे रंगारंग महल
सफ़ा दार एकाएक पड़्या द्दष्टि तल

---

१ जो राहत......यूँ छुटे—जब क़लम की जबान चैन और शान्ति का वर्णन करेगी तो उस समय नीचे लिखे रहस्य ज़ाहिर होंगे २ मेहरबानी ३ जंगल......बसता अहे—जंगल नूर से ही बसा हुआ दिखलाई पड़ रहा था।

जो नज़दीक आया खुशी सात जब
अपस ते अपी खुल पड़े कुफ्ल सब[1]

दुरूनी[2] चल्या ज़ौक़ पा बेशुमार
निभा देखता है जो वाँ ठार-ठार

सवाँरे अहें ग़ैब थे सब महल
बिछाने बिछाए हैं जाँ ताँ निछल

रखे हैं तख़्त हौर उसके उपर
सोता है ले मूँ ढाँप कोई बेखबर

न हिलता न चलता है इस ठार ते
न धरता खबर कूच संसार ते

न डर जीव कूँ अपने इस वक्त पर
दिया मर्ग के हात अपस सख़्त कर

---

१ अपस ते... ...कुफ़्ल सब—आप ही आप सभी रहस्य प्रकट हो गए २ अन्दर।

शाहज़ादी को पाना

चल्या धस के देख्या नज़िक जा उसे
सो नारी है मक़बूल[1] सोती दिसे

न उस सार सूरत मनें हूर कई
न वैसी तजल्ली सती सूर कई

कितेक बार बैठा नज़िक बेक़रार
मगर नींद ते होयगी कर हुशियार

सो हरगिज़ वो हुशियार होती नहीं
मुवे त्यूँ च दिसती है सोती नहीं

डरया हौर मँग्या फिर के जाने वहीं
सो देख्या पटी एक सिराने वहीं

उच्चा वो पटी देखता है जो पड़
सो बाँद्या है कोई नींद उसके उपर

सट्या फोड़ ज्यूँ टुकड़े कर वो पटी
वो मक़बूल एकाएक वहीं जाग उठी

अँगे हो किया शाहज़ादा सलाम
मुक उसका देखत ज़ौक़ पाया तमाम

सो हैरान हो बैठी वो उस घड़ी
अधर खोल ज्यूँ फूल की पंखड़ी

कहीं यूँ "कि याँ आदमी ज़ाद कूँ
न थी क़ुदरत आने, क्यों आया है तूँ[2]

सही कह कि तूँ कौन किस ठार का
खबर क्यों लिया है तूँ इस ठार का

---

१ खूबसूरत २ न थी क़ुदरत......आया है तूँ—किसी में ऐसी ताक़त न थी कि यहाँ आ सके, तू कैसे आ गया।

तेरा नावँ क्या कौन इन्सान तूँ
खबर दे मुझे गुनवती जान तूँ"

तब उस शाहज़ादा उठ्या बोल कर
हकीक़त सो अपना कह्या खोल कर

"कि ऐ नार क़िस्सा है मेरा दराज़
कहूँगा जो सुनने कूँ आसे नवाज़[1]

हुए बरस तेरह मुझे रात दिन
जो फिरता हूँ वैताग[2] सर ले कठिन

बलायाँ बहुत सूसियाँ[3] विरह क्याँ
जफ़ायाँ देख्या इश्क़ के गिरह क्याँ

हुआ इश्क़ थे हाल सब पायमाल
न जानूँ होवनहार है क्यों अताल

बदीउल जमाल एक है शहपरी
वो सूरत पे अपनी मुजे यूँ करी

कहूँ क्या तुज ऐ शाहे शक्कर लबाँ[4]
कि याँ लटपटाती है मेरी ज़बाँ

न वो मिलती है ना गुलिस्ताँ एरम
यूँ इस ताईं खोता हूँ अपना जनम

तलें धरतरी हौर उपर आसमान
दुःखों पीस जाता हूँ म्याने मियान

कि धरता हूँ सीने में दुक कड़ज़ मैं
हुआ हूँ पिरित सोंच जल भड़ज़[5] मैं

कि धरता हूँ सीने लक खार-खार
पड़े हैं कलीजे में रौज़र्न[6] हज़ार

---

१ मेहरबानी हो २ मुसीबत ३ उठाया ४ बहुत ही मीठी ज़बानवाली ५ भाड़ ६ सुराख़ ।

एकाएक अल्लाह जो ल्याया मुजे
सो इस महल में आज पाया तुजे

तेरा हाल हौर वज़ा क्या है सो बोल
छुप तूँ नको मुजते दिल खोल-खोल''

शाहज़ादी के साथ दोस्ती

वो अमृत के गुन की सगी मेहरबान
फ़िरासत[1] सूँ उसका जल्या दिल पछान

कही यूँ "कि बेटी हूँ मैं लाज की
सरांदील[2] के मुल्क के राज की

हमें दरअसल तीन बहनाँ अथ्याँ
सो एक दिन रज़ा बाप की ले वित्याँ

गयाँ बाग़ में सैर करने के तईं
लग्याँ तैरने हौज़ख़ाने में वईं

सो दरहाल वाँ एक बारा[3] उठ्या
चमन दर चमन सब धुलारा उठ्या

सो उस धूल में ते जनावर बड़ा
उचाकर[4] मुजे ले गया वईं उड़ा

हवा पर चल्या दौड़ पंख मार-मार
रख्या मुंज को ल्याकर सो इस ठार उतार

अँगे हो मेरे आ किया वईं सलाम
कह्या डर नको ऐ चंचल नेक नाम

कि आशिक़ हूँ मैं तुज उतम माह का
कि बेटा हूँ परियाँ के मैं शाह का

बड़ा भाई जो एक मुजे आज है
वो दरियाये कुलजुम[5] केरा राज है

---

१ बुद्धिमानी २ सिंहल, लंका ३ बवंडर ४ उठा कर ५ लाल समुद्र ।

इसी महल म्याने है मेरा मुक़ाम
न मेरा है यू बल्कि तेरा मुक़ाम

यू जागा जज़ीरा है इसफ़न्द का
फ़रहबख़्श[1] हौर लाख आनन्द का

रख्या यूँ लेकर आके इस ठार मुंज
किया यूँ बला में गिरफ़्तार मुंज

महीने को एक बार आता है वो
मुंजे देक फिर-फिर के जाता है वो

मैं उसका कह्या ना सुनूँ देक कर
ग़ुस्सा बेनिहायत पकड़ मुंज उपर

मंतर सूँ मेरी नींद कूँ बाँद आये
अकेली मुंज इस महल में छोड़ जाये

सो तूँ जिस पटी कूँ सख्या फोड़ कर
वंद्या था मेरी नींद इसके उपर

इसी वज़ा सूँ बर्ष बारह हुए
मेरे दीस चुपकी आवारा हुए[2]

कहूँ क्या तुजे कहने की बात नईं
कि याँ एख्तियारी मेरे हात नईं

दिल अपना तवक्कल सूँ किये हूँ गँभीर
कि नईं मुज ख़ुदा बाज कोई दस्तगीर[3]

नको जा, दो दीस अछ[4] मेरे पास तूँ
नको ल्या ले कुच दिल में व स्वास[5] तूँ

वो आसे[6] ना अजनूँ न हो घाबरा
अजहूँ दीस बाक़ी है एक सातरा

---

१ आनन्द देनेवाला २ मेरे दीस......आवारा हुए—मेरे दिन बिना किसी कारण के बेकार हुए। ३ मदद करनेवाला ४ रहो ५ डर, भय ६ उसके आने से।

दे शहज़ादे कूँ धीरक इस धात सूँ
उठी बोल फिर यूँ मिठी बात सूँ

कि इस वक्त पर मैं तुजे ऐ जवाँ
तेरी मोहिनी के जो देउँगी निशाँ

कहूँगी जो बाग़े एरम की ख़बर
तो क्या अँपड़ेगा मुजकूँ इसका समर[1]

---

१ नतीजा ।

बदीउल जमाल के बारे में खबर मिलना

वो गुनवन्त सकी[1] जो कही अपनी बात
खुशी सूँ फुगी शाहज़ादे की ज़ात[2]

अदब की रविश सात सर भुँइ पर धर
दुआ हौर सना[3] उसकूँ लई धात कर

कया यूँ कि ऐ मोहनी नेक नाम
फ़िदा तुज पो थे जीव मेरा तमाम

अगर तूँ कहेगी मुजे उसकी बात
तो देगा खुदा तुज जज़ा[4] हाते-हात

जो देगी तूँ उस मोहनी का निशाँ
करेंगे दुआ तुज ज़मीं आसमान

जो खबराँ कहेगी तूँ उस हूर के
तो उतरेंगे तुज पर तबक़ नूर के

रह्या बहुत कुच्च आवारा हो मैं
इसी ताईं फिरता हूँ बारा हो मैं

परेशान उसका हूँ मुल्के-मुलूक
भर्‌या है रगे-रग मने उसका दूक

मेरा दूक गवाँ तूँ कि है तुज सवाब
मुजे तेरी दौलत सूँ कर कामयाब

देखी आजिज़ी उसकी ज्यूँ वो तपा
सो दिल में थे वई मेह्र का जोश उठा

लगी खोल कहने कूँ सुन ऐ जवान
कि मुज पीट की थी नन्हीं एक बहन

---

१ सखी, सहेली २ खुशी सूँ.....ज़ात—शाहज़ादा बड़ा प्रसन्न हुआ ३ तारीफ़
४ बदला ।

हमन तीन बहनाँ में वो ख़ूब थी
सो बेमिस्ल आलम में महबूब थी

तन उसका निछल मकमकाता अछे
अंबर मुश्क़ का बास आता अछे

हँसी सात गुलरेज़[1] ज्यूँ बाग़ थी
कलेजाँ पे हूराँ के न्यूँ दाग़ थी

सो एक दिन ले संगात हमना कूँ माई
ख़ुशी सात एक बाग़ में लेकर आई

कितेक दीस वाँ शादमानी किये[2]
अदिक जश्न वाँ ख़ुस रवानी किए

एकाएक औरत एक इस ठार पर
हरे झाड़ पर थे उतर आय कर

अँगे हो मेरी माँ कूँ कीती सलाम
उठी बोल इस धात हो हम कलाम

कि परियाँ के राजा की औरत हूँ मैं
देखन आई हूँ तेरी बेटी के तईं

सकल शह पर्‌याँ में मेरा नावँ है
मेरा गुलिस्ताने एरम ठाँव है

जो है मुंज कने एक बेटी नन्हीं
सो है मेरे नैन की रोशनी

रख्या नावँ उसका बदीउल जमाल
है उस सात मेरा मुहब्बत कमाल

बहुत दिन थे अछती हूँ इस ठार में
अदिक ख़ुश किये हूँ यू गुलज़ार मैं

---

१ फूल झड़ना २ आनन्द मनाना।

तुजे देक मैं ज़ौक़ पर ज़ौक़ पाई
अछो क़ायम यू आज थे आशनाई

यू बेटी सो तेरी है बेटी मेरी
यूं बेटी सो मेरी यू बेटी तेरी

पिला प्यार से दूद तेरा उसे
कि मैं देउँगी दूद मेरा उसे

कर इस वज़ा सूँ बात एकस कूँ एक
रहे दो जने मिल अपस एकों एक

लगा जीव वो यूँ मेरी माई सात
करन आवे महिने कूँ एक बार बात

बड़ी होयगी वो चंचल आज कूँ
अछेगी सूरज थे निछल आज कूँ

अजब शह परी है वो साहब जमाल
कहीं जग में होसे न इसका मिसाल

मैं अपने नगर बीच अछती जो आज
तो करती हर एक वज़ा तेरा इलाज

कहती हूँ हौर एक बात सुन ऐ अज़ीज़
अगर तुज सकत है तो दे मुज तमीज़

सो शहज़ादा सुनकर हुआ यूँ ख़ुशहाल
कह्या सुन ऐ रौशन तूँ साहब जमाल

कि मैं अर्ज़ करने भी मँगता हूँ तुज
अगर ख़ुश जबाँ खोल फ़रमाये मुज

ख़ुदा मुश्किल आसाँ करन हार है
निराधारियाँ कूँ वो आधार है

कही मोहिनी बोल क्या है सो मुज
कहूँगी मैं उस बात का जाब तुज

कहा "जब वो देव आवे इस ठार पर
सो तूँ पूछ ले उसके जीव का खबर

मेरा जीव तुज हात में है यहाँ
तेरा जीव मालूम नईं मुज कहाँ

यू खूबीं खबर उसतें ले मुज कना
तो मैं कर सटूँ उसकूँ तिल में फ़ना"

यू सुन मोहनी कई शकर लब कूँ खोल
लिये हूँ खबर उसते कहती हूँ खोल

कि इस दीस मुजकूँ रख्या सो परा
लग्या मुजसूँ बाताँ करन बहुतेरा

कह्या यूँ कि तुज बिन नहीं कोई मुंज
तेरा इश्क काफ़ी है जग दुई मुंज

बहुत है मेरा जीव तेरे उपर
वले नईं तेरा जीव मेरे उपर

मैं इस बात कूँ ज्वाब दी यूँ फिरा
कि मुंज पर अगर जीव होता तेरा

तो अलबत्ता अपना कता राज़ मुंज
देता अपने बातिन थे आवाज़ मुंज

तेरे हात में है मेरा जीव तो याँ
वले कह मुजे है तेरा जीव कहाँ

अगर आदम्याँ थे पर्याँ कूँ हयात
अछे ज्यास्त तो क्या हुआ नईं निहात

दो दिन की दुनियाँ कूँ न कर एतबार
कि जीना हमारा है दो दिन उधार

हैं आगे पिछे जान हारे हमीं
समज लेवें आपस में बारे हमीं

सुन्याँ मुंज ज़बाँ थे वो यू बात ज्यूँ
उठ्या बोल कर फेर मुज सात यूँ

कि है सच्च तेरा जीव मेरे हात में
वले नईं मेरा जीव तेरे हात में

मैं ऐ मोहनी तुजते अब क्या छुपाऊँ
कता हूँ मेरा जीव रहता सो ठाउँ

कि है एक सन्दूक़ शीशे केरा
सो उसके दुरूनी[1] अहे जीव मेरा

वो सन्दूक़ सो है दरिया के भितर
अँगोटी[2] सुलेमान की कोइ अगर

दरिया के नज़िक जाके दिखलायेगा
निकल वो संगाती च उपर आयेगा

बज़ाँ वाँ थे ऐ मोहनी मेहरबान
मेरी ज़िन्दगानी सरी कर पछान[3]

१ भीतर २ अंगूठी ३ मेरी जिन्दगानी सरी... ...पछान—यह समझ ले कि मेरी जिन्दगी खत्म हो गई।

दैत्य का मारा जाना

सुन्याँ शाहज़ादा जो इस बात कूँ
कह्या खुश हो उस पद्मिनी ज़ात कूँ

कि "ऐ मोहनी पाक दामान की
अँगूठी तो हज़रत सुलेमान की

मेरे पास हाज़िर है दब[1] में अताल
तूँ क्यों मुजकूँ सँभालती सो सँभाल"

सुलेमान की उस अँगूठी कूँ देक
हुए शाद बहुत ही च एकस ते एक

ज़माना जो आख़िर हुआ मेहवाँ
सो दोनों को हिम्मत दिया आसमाँ

पकड़ हात बाटसारू हुए[2]
मिल अपने दरद दुक के दारू हुए[3]

एकस कूँ एकन जल्द हो पाँव सार
शिताबी सती आये दरिया किनार[4]

दिखाये दरिया कूँ अँगूठी निछल
सो दर हाल सन्दूक़ आया निकल

जूँ एक बारगी पाय दोनों जने
उचाकर ले कर आये दोनों जने

वो सन्दूक़ ज्यूँ देखिए खोल कर
जनावर अथा एक उसके भितर

सटे उस जनावर की मुंडी[5] मरोड़
किये चूर सन्दूक़ को तोड़-फोड़

---

१ कमर में २ रास्ता तय करने लगे ३ मिल अपने......दारू हुए—वे दोनों मिल कर एक दूसरे का दुःख दर्द दूर करने लगे ४ एकस......दरिया किनार—एक दूसरे की वजह से दोनों तेज़ चले और जल्द ही दरिया के किनारे पहुँच गए ५ सर।

सो दर हाल पैदा हुआ एक गुबार
बरने लगा मेहों लहू बेशुमार

पहाड़ सारका सर एक उपराल थे
पड़या सो हल्या धरत पाताल थे

दिया झड़ बर्या जीव अपना तुरुत
सो उसके मरग थे हुए खुश बहुत[1]

खुदा इस बलाते किया ज्यूँ खलास
सो चलने कूँ वाँ ते किये फ़िक्र खास

दोनों वईं नन्हीं एक हौड़ी किये
जवाहिर कंकर इसमें कुच भर लिए

कर अल्लाह का शुक्र वाँ बेशुमार
हुए खुश दोनों मिलके होड़ी सवार

क़ज़ा पर नज़र रख तवक्कल सतीं
दरिया पर चढ़े मौज़ के बल सतीं

चल्या बाव ले बेग हौड़ी कूँ काड़
अजायब कितेक देखते झाड़-पाड़

छः महीने तलक दुःख जफ़ा देक-देक
उलंगते अजायब जज़ीरे कितेक

न थी सुद किधर मौज क्यों आवते
न था फ़ाम यूँ कुच किधर जावते

हो माँदे बहुत एक जज़ीरे में आये
कितेक दीस रह वहाँ अमन पाये

---

१ दिया झड़......बहुत—उसने अपनी ज़िन्दगी फ़ौरन ख़त्म कर दी। उसकी मौत से ये दोनों बहुत प्रसन्न हुए।

ताजुल मुलूक से भेंट करना

ज्यूँ एक़बाल का दर खुला ग़ैब थे
चड़या दुक के मुक पर कल्ला ग़ैब थे[1]

खुश उस ठार रोज़ी फ़राग़त हुआ
परेशान ख़ातिर कूँ राहत हुआ

सो एक दिन निकल शाहज़ादा वहाँ
हलूँ सैर करने लग्या जाँ तहाँ

सो आदम कितेक वाँ पड़े दरख़्त तल
एकाएक खुशी आई मन में उबल

सो नज़दीक जा सबकूँ कीता सलाम
कहे मिल अलैकस सलाम[2] उस तमाम

वजाहत उपर उसके रक आँक कई
मिल एक ठार बैठे सो नाफाँक वई[3]

फ़िरासत में देक उसकूँ आली वक़ार
लगे भेजने मरहबा बेशुमार[4]

हुए एक जेहत सात ज्यूँ हम कलाम
सो बोल्या उनन धर दुक अपना तमाम

जो एक बारगी लोग उस ठार के
सुने क़िस्से इसके हौर उस नार के

सो लक धात सूँ दिल में दुक आन ले
किते वज़ा सेतीं बुरा मान ले

---

१ ज्यूँ एक़बाल......ग़ैब थे—जैसे ही भाग्य ने साथ दिया वैसे ही दुःखों के मुँह पर चाँटा पड़ गया २ सलामालेकुम ३ वजाहत......वई—उसकी हालत को देख कर सभी लोग वहाँ एक साथ बैठे ४ फ़िरासत......बेशुमार—उसकी अधिक बुद्धिमानी को देख कर सब लाग उसकी प्रशंसा करने लगे।

कहे यूँ कि "वो जगमगाते शमे
समझते हैं कि बज़्म के सो हमें

है बेटी हमन राज के भाई की
जनी माई जीती है उस जाई की[1]

सरांदील में बादशाहीं संगात
है उसका जिता बाप हाली हयात

चचा उस नन्हीं का सो एकी च है
वो वासित कते सो नगर बीच है

नेखा नावँ[2] उसका है ताजुल-मुलूक
अजब कुछ है उसका मुरौवत सुलूक

हमें सब रैयत हैं उसकी तमाम
यहाँ ते उसीं का है आगें मुक़ाम"

ज्यूँ ऐसी खबर खल्क़ ते पाइया
सो दौड़ उस सहेली कने आइया

कहा खोल दर हाल अहवाल उसे
खबर दे किया बहुत ख़ुशहाल उसे

फ़राग़त के मिल दोनों हौड़ी पे चड़
चले वाँ ते राहत की दरिया में पड़

चले शहरे वासित क़दन ज़ौक सूँ
लगे बाट चलने कूँ अत शौक़ सूँ

कहीं बाट मंजिल में आलस न कर
शिताबी सेतीं अँपड़ें जाव उस नगर[3]

कितेक पिछें शहर वासित कूँ पाय
बहर हाल उसकी हवेली में आय

---

१ जनी माई... ...उस जाई की—उस लड़की को उत्पन्न करनेवाली माँ अभी जीती है
२ अच्छा नाम ३ शिताबी......उस नगर—बहुत शीघ्र उस नगर में पहुँच गए।

जो नज़दीक उस शहर के खास बाग़
अथा सो रहे वाँ लगे दिक चिराग़

रयन जाग रब्बी के फ़रमान सूँ
जो आया निकल सूर असमान सूँ

सो उस शहर का बेबदल शहरेयार[1]
नेकोकार ताजुल-मुलूक नाम दार

इसी बाग़ में खुसरवी दाब सों
करन सैर आया बड़े लाब सूँ[3]

सो नागह नज़र उसकी इस ठार पर
पड़ी शाहज़ादे के दीदार पर

सो नैनों कूँ उसके लगा सुबुक[4] बहुत
बुला उस निभाने लग्या मुक बहुत[5]

बड़ा बख़्तवर कोई है कर पछान
नज़िक बैसला उस कह्या "ऐ जवान

कहो काँ ते आया है ऐ ज्वान तूँ
सो मँगता है जाने कूँ किस ठावँ तूँ

क्यों आना हुवा याँ तेरा बोल मुंज
जो कुछ है तेरा माजरा खोल मुंज"

जो इस धात का उसते पाया सुलूक
लग्या बोलने हाल सैफुल-मुलूक

"कि ऐ शाह, ग़मग़ीन हो संसार ते
मैं आया हूँ याँ मिस्र के शार[6] ते

---

१ (फ़ारसी) बादशाह २ अच्छा काम करनेवाला ३ इसी बाग़ में......लाब सूँ—उस बगीचे में ताजुल मुलूक बादशाहों की शान शौकत से सैर करने को आया ४ अच्छा ५ बुला......मुक—उसको बुलाया और उसके चेहरे को ग़ौर से देखने लगा ६ शहर से।

मेरा क़िस्सा है सख़्त दूरो दराज
लगेगा कहने बार[1] ऐ शाहबाज़

कि लए दिन ते फिरता हूँ ग़ुरबत मने
जनम सब गँवाया हूँ शिद्दत[2] मनें

कि होसे न मुज सार दुःखियारा कहीं
न मुज सार वैताग[3] मार्‌या कहीं

बहुत रंज देख्या हूँ मैं ठार-ठार
नहीं है मेरे दूक कूँ कूच शुमार

न मेरी जफ़ा रंज कूँ है शुमार
न सीने कूँ ठण्डक न दिल कूँ क़रार

मेरा दर्द कोई ना सुने तो भला
सुने तो बिला शक उठे तलमला

जो खातिर में ल्यावें मेरा रंज कोइ
तो उसका सीना फाट ज्यूँ फूट[4] होइ

खबर जिसकूँ होवे मेरे वैताग ते
तो जल राख होये दुक की आग ते

ग़रीबी मेरी खोल कहने मुजे
अदिक शर्म आती है क्या करूँ तुजे"

सुन्या यूँ जो ताजुल-मुलूक शह नवल
दरेगों[5] सूँ मन में ते आये उबल

कि बोल्या ज़बाँ खोल "सुन ऐ जवान
नको डर कि अल्ला है मेहरबान

---

१ भार लगेगा, तकलीफ़ होगी २ मुसीबत ३ दुःख ४ एक विशेष प्रकार की ककड़ी, जो पक जाने पर फट जाती है ५ रंज और ग़म से।

कि ग़मनाक हूँ मैं भी लई साल ते[1]
खबर कुच नहीं मुज मेरे हाल ते

भतीजी मेरी एक साहब जमाल
गँवाई गई सो हुए बारह साल

दुक इसका करूँ मुझकूँ छाती नहीं
कि अजनूँ वो कई पाई जाती नहीं

एकाएक गुम हो गई बाग़ ते
कि मरता हूँ मैं निशदिन इस दाग़ ते

मुई है कि जीती नहीं कुछ खबर
बड़ा दुःख है यू मुज कलेजे भितर"

जो यू बात फिर इस परेशान कूँ
लग्या तीर हो दौड़ जा कान कूँ

सो जलती दुरूनी[2] सूँ जल आह, मार
उलेंड्या अँख्याँ में ते दुख बेशुमार

कह्या "दुख न कर ऐ सुखी राज तूँ
खुशी कर यू दुख छोड़ दे आज तूँ

कि तेरी भतीजी कूँ ल्याया हूँ मैं
कुबल ठार[3] ते उसकूँ पाया हूँ मैं

सो क्यों उसके लेखे सगा भाई हो
बचाया हूँ सौ जान ते माई हो[4]

तुजे आज ते ज़ौक है लाख लाख
वले मैं सोहूँ ग़म ते नित चाक चाक

---

१ कई साल से (लई का प्रयोग मराठी में 'कई' के अर्थ में होता है) २ जलता हुआ दिल ३ बहुत ही अगम्य स्थान ४ सो क्यों उसके......माई हो—एक सगे भाई और माँ की तरह मैंने पूरी कोशिश से उसे बचाया है।

जिता कुछ है नाज़िल दुःख आफ़ाक़ पर
जम्या है वो दुख मेरे सीने भितर[1]

अज़ल ते यू आया है बाँटा मेरा
कि पंज्याँ है काँट्याँ सूँ फाँटा मेरा"

दरद दुक सूँ इस वज़ा गुज़रान बाद
मिल एकस कूँ एक हात म्याने ले हात

चले इश्तियाक़ी[2] सूँ दोनों जने
वहीं आये उस पाक दामन कने

देख्या ज्यूँ भतीजी कूँ आपीं चचा
सो पुतली कर अँख्याँ की लेता उचा

गले लाग अड़ड़ा के रोने लग्या
फ़िदा उसके उपराल होने लग्या

दिल उसका बहुत धात सों हात ले
कलेजे के टुकड़े कूँ संगात ले

लेकर आइया घर में ताज़ीम[3] सात
गया शहर में लेके तकरीम सात

घर आया सो हुई शादमानी बड़ी
किया शहर में मेज़बानी बड़ी

नवाज्या अदिक शाहज़ादे के तईं
रख्या जीव कर दूख ज़ादे के तईं

दिया भेज क़ासिद कूँ वई भाई पास
मेहरबान उसकी जनी माई पास

---

१ जिता......सीने भितर—आसमान से जितनी मुसीबतें संसार में आई हैं, वे सब मानों मेरे ही लिए थीं २ शौक़ से ३ इज़्ज़त के साथ।

हुमाये सआदत असर खोल पंख
उड़या ज्यूँ सरांदील की धर निशंक[1]

सरांदील का बादशाह बख़्तवर
सुन्या अपनी बेटी केरा ज्यूँ खबर

इता कुच हुआ खुश जो बोल्या न जाए
मग़र ग़ैब ते लाक गर—कोट आए[2]

लगी झड़ने अम्बर ते रहमत की फुई
जलनहार सीने कूँ ठंडक हुई

---

१. हुमादे......निशंक—वह दूत सिंहलद्वीप की ओर क्या गया मानो हुमाँ पंछी अपना पंख खोल कर गया। हुमाँ के सम्बन्ध में विश्वास है कि जिसके ऊपर उसकी छाया पड़ती है, वह बादशाह हो जाता है २ इता कुच......गढ़-कोट आये—सिंहलद्वीप का बादशाह इतना प्रसन्न था मानों उसे लाखों किले प्राप्त हो गये हों। प्रसन्नता के मारे उससे कुछ बोला नहीं जाता था।

शाहज़ादी के घर आना

भया[1] वस्ल[2] का बाव चौंधीर ते
सूका बाग़ मन का खुल्या सीर ते[3]

हुआ फ़रह रोज़ी जनी माई कूँ
तमाम उसके बहनाँ कूँ हौर भाई कूँ

क़बीले कूँ सब आबरूई चड़ी
हुई सब सरांदील कूँ शादी बड़ी

अजीज़ अर्जुमन्द अपनी बेटी के तईं
बुला भेजने का किया फिक्र वईं

बुला भेजने उस उतम जाई कूँ
किया मुस्तइद उस केरे भाई कूँ

दे संगात लश्कर के दल बेहिसाब
बड़े दबदबे सात भेज्या शिताब

जो मुस्ताक़ हो भाई ल्याने चल्या
सगी भान[4] के तईं बुलाने चल्या

चचा के नगर बीच ज्यूँ आइया
सो देक उस चचा जीव कर पाइया

हज़ार आरज़ू सात दोनों मिले
ख़ुशी के कल्याँ हर तरफ़ ते खिले

बोल्या घर कूँ ल्या सो मिले भाई भान
एकस कूँ एकस दे लिए जीव दान

जो कुच दुःख अथा आपन दिल मने
सटे काड़ सीन्याँ में ते तिल मनें

---

१ हवा चली २ मेल-मिलाप ३ नये सिरे से ४ बहन।

लग्या दिल कूँ हम[1] भान हम भाई की
जो फिर कर जने पेट ते माई की

गम एक सातरा लाक इशरत[2] सँगात
हुआ ले चचा हौर चचानी के हात

निकल वाँ ते संगात ले भान कूँ
चल्या मिल के सैफुल मुलूक जान सूँ

पंते-पंत तीनों कन्थे[3] खोलते
गँमाते वक़त हौर किस्से बोलते

सरांदील के आए ज्यूँ वो नज़ीक
उमस[4] पर जना बाप खुश हो अदीक

निकल घर ते लाक इन्तज़ारी सती
सो दौड़्या वहीं बेक़रारी सती

जिगर गोशे कूँ अपने ज्यूँ पाइया
छुतर कर अपस उसके सर छाइया

सिने सूँ लगा उस परी चेहर कूँ
उंडेलन लग्या मेह्र पर मेह्र कूँ

बड़े दब्दबे सात ल्याया उसे
सो फुल नीर सूँ मुक धुलाया उसे

ज्यूँ आया गया सो रतन हात में
नवा जीव आया त्यूँ हुआ ज़ात में

मिल्याँ दिल सूँ सैफुल मुलूक जान सूँ
हुवा आसमाँ उस जली भान कूँ

१ (फ़ारसी) भी २ आनन्द ३ कथा, आप बीती ४ उत्साहित हो।

हक़ीक़त कूँ उसके अपड़ खूब आप
दिया धीरज इस ज्यूँ देवें माई-आप[1]

रख्या उस हतेली के फोड़े नमन
हो दरमान[2] उसका किया दुःख भंजन

करम उसके हक़ हद ते पैलाड़ कर
सट्या गर्द एक धर थे सब झाड़ कर[3]

अजीजाँ में सब दे बड़ाई उसे
इनायत किया पेशवाई उसे

१ हकीक़त......देवें माई बाप—सैफुल मुलूक की हालत जान कर उसने उसे धीरज बँधाया जैसे माँ-बाप अपनी सन्तान को देते हैं २ दवा दारू करना ३ करम......सब झाड़ कर—उसने सैफुल मुलूक पर बड़ी मेहरबानी की और इस तरह सैफुल मुलूक के दुःख दर्द मिट गए।

साअद का मिलना

कहानी कहन हार इस धात की
चलाता है खुश बात हर बात की

कि एक दीस सैफुल-मुलूक शहसवार
निकल आइया भार[1] खेलन शिकार

एकाएक बाज़ार में एक जवाँ
नज़र तल पड़या ज़ार हौर नातवाँ[2]

मुसल्लम है दिलगीर[3] हौर बेक़रार
वजाहत[4] मने ऐन साअद के सार

किया याद साअद कूँ उस देक कर
अंझू लाइया दूक के नयन भर

अपस में अपे भाइया सरद उसास
किया आपने मन में ग़म बेक़यास

कह्या अपने लोगाँ कूँ "जा उसकूँ लाव
अपे आये लग; घर ले जा बैसलाव"

उसी धात जा उस बुला लाइये
ले जा एक जगे पे बसलाइये

कि ज्यूँ उस मुबारक सवारी सूँ फीर
ज्यूँ आया शिताबी सूँ अपने मंदीर[5]

किया याद आते च उस ज्वान कूँ
बुलाया नज़िक उस परेशान कूँ

शफ़क्क़त[6] जो उसकी ग़रीबी पे आई
कह्या कौन है तूँ सो मुज बोल भाई

---

१ बाहर २ दुबला पतला और कमज़ोर ३ गम ज़दा ४ ऊपर देखने से ५ मंदिर, महल
६ मेहरबानी ।

सो वईं वो परेशान जल आह मार
उठ्या बोल कर यूँ कि "ऐ काम गार

कहूँगा अगर मैं मेरे दर्द कूँ
तो ताक़त न रहसे किसी मर्द कूँ

भर्‌या सीना पूर इस दुःख सँगात
कहूँ मैं तुझे खोल किस मुख सँगात

मेरा यार एक शाहज़ादा अथा
वो मिलता तो मुज दुख न होता इता

मैं उसकी जुदाई ते लई हूँ हलाक
जल उसके बदल में तिल-तिल कूँ राक

न जानूँ कि वो सूर किस ठार है
मुज उस बाज आलम सब अंधकार है

वो या दूक सो है याके इक़बाल सूँ
ना जानूँ वो अछता है किस हाल सूँ

है फ़रज़न्द वो मिस्र सुल्तान का
हूँ फ़रज़न्द मैं उसके परधान का

नेका नावँ उसका है सैफुल-मुलूक
हूँ मैं बेख़बर उसके तईं झूक-झूक[1]

मेरा नावँ साअद वले बख़्त[2] नईं
करूँ क्या कि वो यार इस वक्त नईं

मैं अपना मुलुक सट हुए तेरह साल
न किस कूँ मेरे अवदसे[3] का मलाल

एकेला हूँ इस शहर में मैं ग़रीब
न कोई मुज अक़ारिब[4] न कोई याँ हबीब[5]

१ परेशान हो होकर २ भाग्य ३ अपदशा, बुरी दशा ४ क़रीब के लोग ४ दोस्त ।

कि फिरता हूँ नित याँ दुकानें दूकान
न पिउने को पानी न खाने कूँ खान"

जो अपनी ग़रीबी वो बोल्या तमाम
सो वो शाहज़ादा उतम नेक नाम

गलाया दुल्ना सुना ताबल्या[1]
गले ला उसे आँख में आब ल्या

कह्या यूँ कि "ऐ यार अब छोड़ दूक
तेरा यार सो मैं हूँ सैफुल-मुलूक

हमारे नसीबाँ मने ज्यूँ ख़ुदा
लिखा था सो अँपड़ाइया वों ख़ुदा

हमें सर जफ़ा दे फेंकाया सो वो
सलामत सूँ फिर ला मिलाया सो वो

फिकाने के काम हौर मिलाने के काम
ख़ुदा बाज़ भी नईं किसे हौर काम

यू जीव उसकी क़ुदरत पे क़ुरबान है
कि साहब बड़ा वो मेहरबान है"

मिले देक एक जीव के दूइ यार
हुवा ख़ुश सरांदील का शहरेयार

जो साअद आवारा हो दुक दर्द में
डुब्या था जो ग़ुरबत[2] केरे गर्द में

सो हम्माम में गर्म ले जा उसे
किये ख़ुश धुला आँग हलका उसे

निछल ख़ूब किसवत[3] शहानी पिनाय[4]
रँगारंग मजलिस नूरानी भराय

---

१ गलाया......सुना ताबल्या—उसने मन ही मन साअद को गले लगाया और बड़ी शान्ति के उसकी बात को सुना २ मुसाफ़िरी ३ (फ़ारसी) कपड़े ४ पहना कर।

मँगा नुकुल[1] मद मस्त आराम सूँ
दोनों यार बैस आपने फ़ाम सूँ

पियाले लगे झेलने ज़ौक़ सूँ
क़िस्से ल्याके म्याने सटे शौक़ सूँ

नवल जान सैफुल-मुलूक जग उजाल
बजिद होके[2] साअद कूँ लाग्या दुंबाल[3]

कि मुजते बिछड़ तूँ फिर्‌या किस वज़ा
खड़्या आ तेरे सर उपर क्यूँ कज़ा

छुपा तूँ नको मुजते तक़दीर कूँ
जो कुच है सो कह खोल मुज धीर तूँ

गुनी यार साअद देक उसका ख़्याल
लग्या भार भाने कूँ दिल का उबाल[4]

ग़रीबी के बाताँ लग्या बोलने
कँथा अवदसे का लग्या खोलने

"कि ऐ शाहज़ादे जधाँ ते जो मैं
चल्या काँक कर[5] तेरी सोहबत सों वईं

फुट्या जहाज़ हुक्मे ख़ुदाई हुआ
तदाँ ते[6] तुजे मुज जुदाई हुआ

सो बेसुध हो तूफ़ान के बाब सूँ
पड़्या एक जज़ीरे में जा ताव सूँ

कितेक बार कूँ देखता हूँ जो वाँ
सो चौंधीर छाया है ज़ोरों धुवाँ

---

१ शराब पीते समय खाने के लिए इस्तेमाल की जानेवाली चीजें २ हठ करना ३ पीछे पड़ गया ४ लग्यदि......ल का उबाल—अपने दिल के उबाल को बाहर निकालने लग ५ अलग हो कर ६ उस समय से ।

हवायाँ हो उड़ते हैं वाँ साँप सब
लिये हैं जज़ीरे कूँ वाँ ढाँप सब

ना ग्रासमान दीसता न कईं धरतरी
छुटी सीस ते पाँव लग थरथरी

गगन सार ऊँचे कितेक डोंगरा[1]
पड़े उसपे मुसकारते ग्रजगराँ

एता कुच वहाँ देखिया मैं ग्रज़ाब
जो नईं इस ग्रज़ाबाँ[2] कूँ हद हौर हिसाब

पड़्या जा बलायाँ के भौंरे मने
पड़्या जा के लई-लई[3] जज़ीरे मने

बहुत दिन बहुत ठार फ़ाक़े देख्या
कह्या जाय ना ऐसे बाक़े देख्या

बसर दिन हुवा ग्राके इस शहर में
मिले शुक्र बारे हमें हौर तुमें

वले कुच ग़नीमत मुजे ग्राज है
गदा मैं तेरा तूँ मेरा राज है[4]

वले उस परीज़ाद का खोज कईं
तूँ इस हद तलग ग्रजनूँ पाया कि नईं

कहीं बी गुलिस्ताने एरम का निशाँ
किया तुझ कूँ सपड़्याँ कि नईं ऐ जवाँ"

बज़ाँ वो उतम जान सुमिरत गँभीर
कह्या खोल इस धात साग्रद की धीर

कि "मुज तुज बनाया सो परवरदिगार
मुज उम्मीद का एक सो ल्याया है बार[5]

नवीं कुच ख़ुशी पाइयाँ जायेगी
वो दो दिन कूँ इस शहर में ग्रायेगी"

---

१ क़िले २ ग्रजीबोग़रीब ३ बहुत से ४ गदा मैं......राज है—मैं तेरा फ़क़ीर हूँ तू मेरा बादशाह है ५ मेरी उम्मीद के दरख़्त में फल लग रहे हैं।

बदीउल जमाल का सरांदील आना

सम्रादत के ज्यूँ दीस अँगे आइये
बखत रौशनाई सूँ झलकाइये[1]

सुलक्खनवंती धनि बदी उल जमाल
एकाएक एक दिन खयाले खयाल

निपट दिल रुबाई के तन्नाज़ सूँ
लटकती अपस में अपें नाज़ सूँ

सरांदील के राज के घर कूँ आई
सो गुम हुई सो इस शाहज़ादी कूँ पाई

सगी भान[2] कर जानती थी अवल
बड़ी कर उसे मानती थी अवल

बड़ी दर्द मंदी सूँ ग़म खार हुई
एकट दिल सूँ मिल जा उसूँ पार हुई

कही "ऐ संगातन[3] इते दीस तूँ
अथी किस वज़ा हौर किस भेस सूँ

निकल उस बलाकन ते किस धात आई
छुटक उसके हाथाँ ते किस वज़ा पाई

सरासर मुझे कह जो टुक अम्न पाऊँ
दुःखी दिल कूँ मेरे सुखी कर बसाऊँ"

सो वो शाहज़ादी उठी बोल यूँ
हक़ीक़त सो अपना कही खोल यूँ

कि "ऐ मोहनी मन की साहब जमाल
जो तेरा मुहब्बत हैं मुझसूँ कमाल

---

१ सम्रादत......झलकाइये—जैसे ही अच्छे दिन आगे आये, वैसे ही भाग्य चमक उठा
२ बहन ३ सखी।

सदा यू मुहब्बत सो क़ायम अछो
झमकता तेरा हुस्न दायम[1] अछो

जो मैं हात में उस बला के हुलग[2]
गिरफ्तार होके जो थी आज लग

एकाएक उस ठार परवरदिगार
नज़र जो करम की किया एक बार

सो फ़रियाद-रस[3] मेरी फ़रियाद कूँ
दिया भेज एक आदमी ज़ात कूँ

सो आ भार काड़्या मुज उस ठार ते
हूँ शर्मिन्दी मैं उसके उपकार ते

एता कुच किया मुजपे एहसान वो
एता कुच दिया मुजकूँ जीवदान वो

जो तिल उसकी उतराई ना होने पाउँ[4]
कि जग में किया वो बड़ा नेक नाउँ"

सुन इस बात कूँ कई बदी उल जमाल
कि "आदम कूँ आने न था. वाँ मजाल

सो किस धात उस ठार वो आइया
न थी बाट सो बाट क्यों पाइया

अजायब यू लगता है इस ठार मुज
कना खोलकर तूँ यू गुफ्तार मुज"

कही शाहज़ादी कि "ऐ मोहनी
बड़ी बात है यू नहीं कुच नन्हीं

---

१ (अरबी) हमेशा २ जो मैं हात......हुलग—मुसीबत के हाथों में पड़ी हुई जो परेशान थी ३ ख़ुदा ४ जो तिल......पाउँ—मैं उसका बदला थोड़ा सा भी न देने पाऊँगी ।

क्या मुजते जासे[1] न याँ इस वज़ा
कहूँगी कनेका[2] अहे जिस वज़ा

दोनों मिल के चल एक गुलशन में जायँ
दो बाताँ करें वक्त अपना गमायँ

कि हर बात में इश्क़ का राज़ है
सुन इस राज़ कूँ तू कि तुज साज़ है[3]"

कर इस धात सेती खबरदार उसे
ले जाने मँगी बीच गुलज़ार उसे

जो वाँ एक फ़रहबख़्श[4] गुलजार अथा
सफ़ादार अथा हौर हवादार अथा

उसी ठार कर शाहज़ादा मुक़ाम
गवनहार था ज़ौक़ सूँ सुबह शाम

जनी माई कूँ ले वई अपनी दुबाल
चली वाँ अपे हौर बदी उल जमाल

सो चमन चमन गश्त करने लग्याँ
कल्याँ चून चून गोद भरने लग्याँ

कहूँ वाँके चमनाँ कूँ मैं क्यों चमन
कि था हर चमन साफ़ एक-एक गगन[5]

भर अमरत सूँ चमनाँ के म्यान तमाम
जड़त के अथे हौज़-ख़ाने तमाम[6]

बने-बन बरक[7] लहलहाते अथे
कल्याँ पर कल्याँ बार आते अथे

१ जाये २ कहने का ३ तुज साज है; तुम्हारे ही लायक़ है। तुम्हीं से वह कहा जा सकता है ४ आनन्द-प्रद ५ आसमान ६ भर अमरत......तमाम—उस बाग़ में जो हौज़ बने हुए थे, उन पर हीरे-जवाहरात जड़े हुए थे और वे अमृत से भरे हुए थे ७ वृक्ष।

पवन झोले खा फूल की डाल हल
सो पड़ते अथे फूल हर झाड़ तल

मगर आ अंबर के चितारे तमाम
चमन में बिछाए थे तारे तमाम[1]

अथे बुन्द शबनम के यूँ पात में
रतन खास खूबाँ के ज्यूँ हात में

इलाही के हो ज़िक्र में मस्त हाल
पंखी गुल उचाते थे खुश डाल-डाल

वो आशिक़ सो माशूक़ के ध्यान सूँ
मता हो[2] अपस में खुश इलहान सूँ[3]

जम्याँ ख़्याल इस धात गाता अथा
जो हर रूख कूँ हाल आता अथा

पंखी गुम हुए थे वो इलहान सुन
वहता नीर बहता न था; तान सुन

सुनी वो गला ज्यूँ बदीउलजमाल
गली उस गले के उपर रख खयाल[4]

"कही याँ यू किसका है नादिर गला
किया है मेरी रूह कूँ मुब्तला

गला यू न होय कुच बला है गंभीर
कि पानी किया गाल[5] मेरा शरीर

रूमें रूम मुज ज़ौक़ सारा हुवा
यही रूह कूँ मेरे चारा हुवा"

---

१ मगर......तारे तमाम—बाग़ में जो नीचे फूल गिरे हुए थे, वे ऐसे मालूम होते थे मानों आसमान में तारे बिछे हुए हैं २ मस्त हो ३ अच्छी आवाज़ से ४ सुनी......रख खयाल—बदीउलजमाल ने जैसे ही उस आवाज़ को सुना, वह उस पर न्यौछावर हो गई ५ गला कर।

कही शाहज़ादी की माँ तब उसे
"यू नादिर गला उस किसी का दिसे

जिनें मेरी-बेटी कू ल्याया अहे
दे जीव-दान सर ते बँचाया अहे

जो देखेगी तू उसकूँ दिखलाऊँगी
नज़िक उसके डेरे के ले जाऊँगी"

सो वई आसरे ते वो चन्दर बदन
देखन आई सैफुल मुलूक के कदन

जो देखी निभा खूब उसका जमाल
दिवानी हो दर-हाल हुई वई निढाल

पड़ी उसके आ इश्क़ के दाम में
वले टुक रखी थी अपस फ़ाम में[1]

दिल उसका लग्या तलमलन[2] तन मनें
किया ठार इश्क उस केरे मन-मनें

लगा जीव बातिन में उस सात वई
चले सैर करते हलूँ टौर कई

वले शाहज़ादे कूँ उन आई सो
दरस देख दिल आपसों लाई सो

न थी कुछ खबर मस्त था अपने ठार
अपस में अपें खेंचता इन्तज़ार

ज्यूँ उस सात वो चुलबुली दिल लगाई
सो वो शाहज़ादी उसी वक्त पाई

बुला वई नज़िक उस परीज़ात कूँ
उतम दिल रुबा सर्वआज़ाद[3] कूँ

---

१ वले......अपस फ़ाम—लेकिन उसने इन तमाम भावों को अपने ही हद तक रखा
२ तल मलाने लगा, बेचैन होने लगा ३ (फारसी) माशूक़ ।

कही "याद है एक हिकायत मुजे
सुनेगी अगर तूँ तो कहूँगी तुजे

सुनी हूँ कि कोई मिस्र में बेनज़ीर
है आसिम गुनी सो नवल शह गँभीर

सबी कुच ख़ुदा उसकूँ बख़्शा अथा
वले उसके तईं कोई फ़रज़न्द न था

तवज्जह वल्याँ सात धरता अथा
बहुत ख़ैर आलम में करता अथा

कितेक दिन पिछेंते ख़ुदा उस उपर
नज़र कर जो फ़रज़न्द दिया बख़्तवर

सुक अपना पराया देखत वो सुख्या
उसे नावँ सैफुल-मुलूक कर रख्या[1]

जो था उस कने एक दाना वज़ीर
हुआ उसको फ़रज़न्द एक बेनज़ीर

वो साअद कर उसका रख्या नावँ सो
जो अँपड़े बुजुर्गी कूँ एक ठावँ वो[2]

कितेक दीस कूँ वो जो स्याने हुए
हर एक इल्म में ख़ूब दाने हुए

सो दोनों पे वो ख़ुसरव गुन बज़ाँ[3]
हज़ाराँ शफ़क्क़त सों हो मेहरबाँ

बुला भेज ख़िलअत दे ज़रबख़्त एक
दिया सो अथी सूरत उसमें एक नेक

---

१. सुक... ...कर रख्या—अपने और पराये लोगों को सुखी देख कर उस सुखी बादशाह ने अपने बेटे का नाम सैफुल-मुलूक रखा २. जो अँपड़े...... ठाँव—एक दिन आगे चल कर साअद बड़प्पन प्राप्त करे।

कि वो ऐन तेरी च सूरत अथी
वो तुज शहपरीं की च मूरत अथी

देखत शाहज़ादा वो सूरत वहीं
सो आशिक़ हुआ बेज़रूरत वहीं

चढ़या ज्यूँ उसे इश्क एक बार सर
ले संगीन वैताग[1] का भार सर

जुदा होयकर अपने घर बार ते
निपट तोड़ ले जीव संसार ते

अपे हौर साअद सिना सख़्त कर
बिरह सूँ कलेजे कूँ सद लख़्त कर[2]

जहाँ दर जहाँ फीरता-फीरता
दर्या बीच पड़ डूबता तीरता

न चँदना समझता न सूरज की आँच
अदिक बेख़बर हो बलायाँ ते बाँच[3]

तुजे ढूँढ़ लेता कहाँ ते कहाँ
हलाकी सेती आइया है यहाँ

किया यूँ उसे इश्क तेरा शिताल[4]
नज़र सूँ तेरी बख़्त उसके उताल

वो आशिक सच्चा है तेरा झूट नईं
ज़र इसके तो इश्क में टूट नईं

जिनें जीव दिया उस इलाही की सौं
लग्या जीव बाँद्या है वो दिल तू सों

कि दिखलाऊँगी कर तुजे एक नज़र
मैं आते बरॉ[5] आई हूँ क़ौल कर

---

१ मुसीबत २ सौ टुकड़े करना ३ न चँदना... ...बाँच—न चाँद की चाँदनी से वे आकृष्ट होते न सूरज की गर्मी से परेशान ४ मजबूर ५ आते समय।

खुदा जानता है उसे क़ौल ते
फ़राग़त सूँ हुई फ़ारिग़ इस हौल ते

दिला हर सनद[1] मूख एक बार उसे
बिना आधार है दे तूँ आधार उसे

मेरा हौर मेरी भाई का रख रैवाज
मेहरबान हो हर तरीक़[2] उस पे आज

यही अर्ज़ मेरा बड़ा आज है
अगर नईं तो मुझकूँ बड़ा लाज है"

वो चंदर बदन गुन भरी शान की
वो निर्मल रतन हुस्न के खान की

खुश इस बात सेती उठी बोल कर
दिये जवाब ऐसी ज़बाँ खोल कर

कि "ऐ भागवन्ती सँगातन मेरी
मेहरबान दुःख सुख की सातन मेरी

जो तूँ मुजपे इज़हार यू राज़ की
सरअफ़राज़ की मुज सरफ़राज़ की[3]

वले मैं परी हौर वो सो बशर[4]
पड़ी क्योंकि दोनों में लई है अन्तर[5]

एकाएक यू अन्तर सँटू फाड़ क्यों
पड़ूँ भार पर्दें कूँ मैं फाड़ क्यों

अगर यू सुनेंगे मेरे माई बाप
गलेंगे हया सूँ वो आपस में आप

---

१ हर प्रकार से २ हर तरह ३ सर अफ़राज......की—तूँ ने मुझे बड़ी इज्ज़त दी कि तुमने मेरे सामने एक राज की बात कही ४ (अरबी) आदमी ५ पड़ी......अन्तर—दोनों में अन्तर बहुत है। हम दोनों एक कैसे हो सकते हैं।

मेरा हाल रहसे न कुच ठार थे
गुज़रसे न वो मेरे आज़ार से[1]

दुजे बार कूँ भेज देसे न भी
मेरा नावँ रोसूँ सूँ लेसें न भी[2]

न को हो तूँ इस बात के पै मने
कि हरगिज़ न आसूँ तेरे कहे मने"

वो ज़ाहिर तो यूँ एतराज़ी अथी
वले दिल सूँ बातिन[3] में राज़ी अथी

समज अक्ल सूँ ख़ूब इसका ख़याल
सो माँ हौर बेटी लगे फिर दुबाल

"कि शहपरी काड़ सट दग़ादग़ा
न को अपने आशिक़ कूँ दे तूँ दग़ा

न को सर्द पड़ लाज ते गर्म हो
कि है फूल ते नर्म तूँ नर्म हो

हमन बाज़ कोई तुजकूँ हमराज नईं
न करसें हमें फ़ाश यू राज़ कईं

ले जायेंगी तुज ऐसे ख़िलवत के ठार[4]
जो कोई ना अछे बाज परवरदिगार

दिखा एक नज़र टूक दीदार उसे
बिना धार है वो दे आधार उसे"

---

१ मेरा हाल... ...आजार—मेरी कोई हालत बाक़ी न रह जायेगी और कहीं मेरे माँ-बाप मेरे इस दुःख के कारण गुजर न जायँ २ दुजे......लेसें न भी—मेरे माँ-बाप दूसरी बार यहाँ आने न देंगे और गुस्से से मेरा नाम भी न लेंगे ३ दिल ही दिल में ४ एकान्त स्थान।

बहर हाल फुसला के राज़ी कियाँ
लगा इश्क उस न फिर तें ताज़ी कियाँ[1]

हुई देख आशिक़ की वो मुब्तला
नहीं जानत्याँ त्यूँ च कीता कला[2]

१ लगा......ताज़ी कियाँ—उसके प्रेम को फिर नये सिरे से ताज़ा किया २ हुई......कीता कला—बदीउल जमाल, सैफुल-मुलूक को देख कर उस पर आशिक़ हो गई। साथ ही माँ बेटी ने ऐसा ज़ाहिर किया जैसे उन्हें इस सम्बन्ध में कुछ मालूम ही नहीं है।

बद्रीउल जमाल से मिलना

जिन उस बाग़ की बाग़बानी करे
यूँ उस बाग़ की गुल फ़िशानी करे[1]

कि ज्यूँ वो छबीली चंचल गुलेज़ार
क़रार आपना छोड़ हुई बेक़रार

उताली हो आशिक़ के दीदार की
सटी लाज हुई यारनी यार की

एकेली नज़िक जा अधी रात कूँ
उचा उस सँगातन उतम ज़ात कूँ

कही यूँ कि "मैं तो तेरे बोल पर
जो थी गाँठ दिल में सटी खोल कर

गवाँऊँ इते दिन की क्यों आशनाई
कि बज गई है आलम में सब यू शनाई

फिरूँ क्यों न मैं आज तुज बात में
कि सँपड़ी हूँ याँ खुश तेरे हात में

जो देखूँ उसे एक नज़र आज मैं
कि हूँ उसके दर्शन की मुहताज़ मैं

न जाने नमन कोई, मिल जायें चल
उसे दूर ते देख फिर आयें चल

कि तूँ हो शिताली है जब ते मुजे
नहीं ज़रा आराम तब ते मुजे[2]

यू गत[3] क्या छुपाऊँ तुज अंगे अताल
कि मैं हुई देक बेसुद मैं उसका जमाल

---

१ जिन......गुल फ़िशानी करे—जो इस कहानी को सुना रहा है, वह अब उस कहानी को इस प्रकार कह रहा है, जैसे उसके मुँह से फूल झड़ रहे हों २ कि तूँ......मुजे—जब से तुमने मुझे मजबूर किया है, मुझे ज़रा भी चैन नहीं है ३ यह दशा ।

न जानूँ उसे किस घड़ी मैं निभाई[1]
नहीं नींद अंख्याँ कूँ तेरी दोहाई

तूसों मिल मैं गरचे बैठी हूँ याँ
वले दिल मेरा सैर करता है वाँ"

लगी उसके दुंबाल पड़ हात पावँ
चली ले उसे ढूँढ़ती ठावँ-ठावँ

जो आशिक के डेरे के नज़दीक आई
खबर होय ना त्यों उसे ख़ुश निभाई

सो बैठा देखी मस्त उस ठार उसे
चड़्या है मदन का सो ख़ुश लहार उसे[2]

तजल्ला उपर मुख बरसता है ख़ुश
लियाँ अखियाँ नाज़ों हँसता है ख़ुश

लगे हैं शमे चौकदन नूर के
झमकते हैं रुखसार[3] ज्यूँ सूर के

अपन मन में झलता अथा मस्त ख़्याल
सो ढलकी है पगड़ी खुल्या है जमाल

खुले हैं सफ़ा के किवाड़ाँ तमाम
देवें जलवा डेरे के बाड़ाँ तमाम[4]

खुले हैं रँगा-रंग चमन आस-पास
सो महकता है महकारवाँ बेकयास

डुब्या है सभी बाग़ ख़ुश बास में
सो दौड़्या है महकार आकास में

---

१ देखा २ चड़्या है.....लहार उसे—उसके ऊपर काम का नशा चढ़ा हुआ है ३ गाल ४ खुले है......तमाम—ख़ूब सूरती के तमाम दरवाज़े खुले हुए हैं; वह ख़ूबसूरत है और चारों तरफ़ उसकी कान्ति फैली हुई है।

नज़र जो पड़्या यू तमाशा मोहाल
सो उस चुलबुली का हुआ हौर खयाल

देखत यू तमाशा बदीउल जमाल
हो हैरान अपस कूँ न सकसी सँभाल

मती होके वाँ यार के बास ते
पड़ी थी जो फूलाँ के ज्यूँ रास ते[1]

न थी कुछ खबर उसके तन की उसे
ज़मीं सेज थी उस चमन की उसे

खड़ी थी सो वईं सर्द भाकर उसास
पड़ी जा चमन में हो फूलाँ की रास

जो सैफुल-मुलूक आशिके बख़्तवर
मदन मद की मस्ती ते पाया खबर

एकाएक सहरगाह[2] बे अख़्तियार
दुरूनी ते डेरे के निकल्या बहार

चल्या सैर करने कूँ चमने-चमन
सो वो शाह परी नार चँदर बदन

पड़ी थी सो देख्या नज़िक जा उसे
बदीउल जमाल है कि समज्या उसे

अगरचे न देख्या अथा उस अवल
वले उसकी बेमिस्ल सूरत निछल

चुबीं उसकी नैनाँ में बे अख़्तियार
पड़्या वईं ज़मीं के उपर बेक़रार

जो दीदार का शौक़ उबल्या अदिक
दरस देखने तईं जो आया नज़िक

---

१ मती......ज्यूँ रास ते—बदीउल जमाल सैफुल-मुलूक के शरीर की खुशबू से मस्त हो कर वहाँ फूलों के ढेर के समान बिना हिले डुले पड़ी थी २ सबेरे के समय।

अजब नूर केरा अथा मुख पे ताब
कि कुरबान उस मुख पे लक आफ़ताब

भरया नूर उसका अथा पूर यूँ
उबलते थे असमाँ के सन्दूर ज्यूँ[1]

मनौवर[2] हुये थे मकानाँ तमाम
अर्श हौर कुर्सी के थाँवाँ तमाम

समन पद भरी है अदिक नाज़ तन
सहेली कमल सूँ है नाज़ुक बदन

सो रुख़सार रौशन अमोलक हिलाल
सो है नावँ जिसका बदीउल जमाल[3]

कोने तूँ बहुत मेहतरी नार है
शकर हौर नमक का जो अंबार है

ज़मी आरसी नमने ता क़ाफ सब
झलकते थे इस धात हो साफ़ सब[4]

जो दीसते अथे लोग पाताल के
कि ज्यूँ मोतियाँ ढाल बीच थाल के

देख्या ज्यूँ चंदर उस मुड़ी काड़ कर
सट्या पैरहन असमान के फाड़ कर[5]

सितारे देख उसका निछल नूर सब
लिये हात शर्मिन्दा हो चूर सब

---

१ भरया नूर......सन्दूर ज्यूँ—उसका सौन्दर्य चारों ओर फैला हुआ था। ऐसा मालूम होता था मानों आसमान से सौन्दर्य का समुद्र उबल रहा हो २ रौशन ३ सो रुख़सर......जमाल—उसके गाल पहली तारीख़ के चन्द्रमा के समान रौशन थे ४ ज़मी......साफ़ सब—बदीउल जमाल के नूर से काफ़ पहाड़ तक की सारी ज़मान दर्पण के समान झलकती थी ५ देख्या......असमान के फाड़ कर—चंद्रमा ने ज्यों ही बदीउल जमाल को सर निकाल कर देखा, उसे अपने से भी खूबसूरत पा कर, उसने आसमान के अपने लिबास को फाड़ कर फेंक दिया।

कल्याँ सब चमन के देख उस भान कूँ
कियाँ चाक अपने गिरहबान[1] कूँ

ज़िते सरो बाँ के डुलन हार थे
फ़िदा उस के क़द पर वो सारे अथे

देख उसके नयन बन के नर्गिस तमाम
हो बेहोश लड़ते थे खिस-खिस तमाम

देखत उसके पेचाँ भरे कुण्डलाँ
सब आये थे गल बरज़मीं[2] संबुलाँ[3]

पवन उस गुल अन्दाम की खास बास
भँवर होके फिरता अछे आस पास

दिवाने हो झाड़ाँ के पाताँ तमाम
दुवा कूँ उचाये थे हाताँ तमाम

कि वो नार अवतार कुच हूर थी
न कुच हूर वो ऐन सन्दूर थी

सुती[4] देखकर उसकूँ आशिक़ गँभीर
लग्या रोवने उसपे चौफीर फीर

नज़ाराँ की पै में हुवा जौक़ सात
लग्या वारने इश्क़ के शौक़ सात

दो दीदाँ के अंझुवाँ सूँ मशग़ूल कर
छिनकने लग्या शबनम उस फूल पर

जो वो शहपरी बास आदम की पाई
एकाएक उठी नाज़ सूँ दी जमाई[5]

---

१ ऊपर के वस्त्र में सीने पर का वह हिस्सा जिसमें बटन लगता है। गिरह शब्द फ़ारसी के 'ग्रे' का अपभ्रंश है, जो संस्कृत के 'ग्रीवा' से मिलता है और उसी अर्थ में है २ ज़मीन पर ३ एक विशेष प्रकार की घास, जो घुंघुराले बालों के समान होती है ४ सोई हुई ५ उसने जम्हाई ली।

निभा देखती है जो अँख्याँ पसार
नज़िक आके बैठा है वो दोस्त दार

घूँघट में छुपा मुख वहीं नाज़ सूँ
हलूँ खोल अधर नर्म आवाज़ सूँ

कही "यूँ तो वाजिब नहीं है तुजे
जो नज़दीक आकर निभावे मुजे

मैं औरत शरम की हूँ हौर मर्द तूँ
न मैं तुजकूँ जानूँ न तूँ मुंजकूँ

पनज[1] में तूँ आदम है हौर मैं परी
नहीं महरम आदम सेती कई परी

सबब क्या अथा आने इस रात कूँ
कना मुझकूँ तईं खोल यू बात तूँ"

वफ़ादार वो आशिक़े नामदार
जो माशूक़ थे पाइया यूँ अधार

सो ख़ुश बेनिहायत हो पाया उमस
रगे-रगे में दौड़्या नवा रंग-रस

ज़बाँ खोल बाताँ लग्या बोलने
रतन जीव के राज के रोलने[2]

"कि ऐ बेबदल मोहनी जग उजाल
जो है नावँ तेरा बदीउल जमाल

तेरा नावँ पर थे हूँ बलहार मैं
सटूँ जीव कूँ तुज उपर वार मैं

नज़र कर मेरी धीर जो अम्र पाउँ
देखूँ दीद पर दीद टुक दुःख गवाउँ

---

१ पैदाइश में २ रतन जीव के......रोलने—दिल के भेदों को बतलाने लगा।

कि धरता हूँ सीने में दुःख कड़ज़[1] मैं
हुआ हूँ पिरित अंग में जल भड़ज़[2] मैं

इता कुच भरया है मेरे मन में सोज़
जो सुलगी उसूँ लाक भड़के हर रोज़

अभूँ मुझ नयन थे जो ढलते अहें
तेरे इश्क के दाट[3] उबलते अहें

तेरे लिए च फिरता हूँ मैं रात दीस
लिया हूँ तेरे लिए च वैताग भेस[4]

यकीं जान मैं आशिके पाक हूँ
तेरे इश्क का पाक बेबाक हूँ

तेरे लिए किता रंज देख्या हूँ मैं
जो देख्या नहीं कोई दुनियाँ में कईं

न यू कुच आया है मुंज धीर थे
कि नाज़िल हुआ है यू तक़दीर थे

तेरे वस्ल[5] का देक मुंज मन कूँ आस
दिया है खुदा भेज मुंज तेरे पास

नको देक अपस थे बेगाना मुजे
भला है जो अपना कवाना[6] मुजे"

बचन बोल वो आशिक़ इस धात सूँ
हुवा उस पे क़ुरबान सब ज़ात सूँ

चतुर चुलबुली धन बदीउल जमाल
छुपा मन में रख यू मुहब्बत कमाल

१ अधिक २ भाड़ में जलनेवाला ३ (मराठी) बहुत अधिकता से ४ ऐसा वेश या ढंग, जो मुसीबतों से भरा हुआ है ५ मिलना ६ कहवाना ।

उबलते पिरित कूँ सो मन में जिरो[1]
बहाने सेतीं यूँ उठी बोल वो

कि "ऐ शाहज़ादे गुनी बख़्तवर
अपस मन के सौरात[2] पर रख नज़र

तूँ मुज सात तो इश्क लाया न देक
तू सूँ इश्क क्यों ल्याऊँ मैं देक-देक

अगर तुजसूँ निस्बत कुच अछती मुजे
मैं अपना कर इर वज़ा पाती तुजे

एकाएक तेरी बात कूँ क्यों पत्याऊँ
एकाएक तुज सात क्यों मन लगाऊँ

फिरया बहुत मुल्क तूँ टूट कर
मुबादा[3] तेरा दिल अछे भूट पर

सुनीं हूँ बशर[4] में नहीं कुच वफ़ा
तू सूँ जीव ल्याये तो क्या है नफ़ा

तू जा याँते सँभाल ले आप कूँ
कि डरती हूँ मैं अपने इन बाप कूँ

अगर कोई देखेंगे याँ मेरे लोग
तो आज़ार अँपड़ायेंगे[5] दोनों कूँ ठोंक

सलामत सूँ मुश्किल है फिर बाँचना
समज ले तूँ आक़िल है तुज क्या कना"

चुप अज़मावने कूँ कती थी वली
दुरूँ[6] में उसे थी अदिक तलमली

लगा रोने सैफुल-मुलूक सुन यू बात
निकल तन थे गई त्यूँ हुवा उस हयात[7]

---

१ दबा कर; यह शब्द फ़ारसी के ज़ेर करदन, धातु से बना है २ ख्वाहिश ३ (फ़ारसी) कहीं ऐसा न हो ४ आदमी ५ मुसीबत में डालेंगे ६ मन में ७ निकल......उस हयात—उसकी हालत ऐसी हो गई, मानों उसके शरीर से प्राण निकल गये।

गोता खाइया वई मुंडी ढाल कर
सट्या विरह अगिन सूँ अपस जाल कर

हुवा सर थे संगीन दुक उसपे यूँ
रखे पाड़ कूँ लाके काड़ी पे ज्यूँ[1]

रह्या जीव होटा मनें आ उसे
हो बेसुद अक़ल सर चढ़ी जा उसे

देक ये हाल मोहन बदीउल जमाल
हो मन में मुसल्लम परेशान हाल

पछानी कि यू कुच तो बाज़ी नहीं
हक़ीक़ी पिरित है मजाज़ी[2] नहीं

उच्चाई नज़िक जा उसे हात सूँ
गले लागती जीव के सौरात सूँ

देती लक वज़ा सात जीव दान उसे
सो तहक़ीक़ कर पाई ईमान उसे

मुहब्बत जो जागा किया दिल मनें
रखी पाँव यारी के मंज़िल मनें

पलो सात अँजू उसके पोंचन लगी
भरोसा दे धीरज सों बोलन लगी

"कि ऐ मेरे मन के संगाती अताल
न कर दूक तूँ हौर नको हो निढाल

तूँ आशिक़ मेरा कर सची पाई मैं
यकीं तुज सूँ ईमान जीव ल्याई मैं

---

१ हुवा सर......काड़ी पे ज्यूँ—फिर नये सिरे से उसे बहुत अधिक दुःख हुआ। उसके शरीर के लिए वह दुःख काड़ी पर पहाड़ के जैसा था २ झूठा।

वले क्या करूँ नईं मुजे अख़्तियार
पर्याँ मुज मुवक्किल[1] हैं कई लक हज़ार

न तदबीर है कुच जो हीला करूँ
एकाएक तुसूँ क्यों वसीला करूँ

मेरी एक दादी सो है एक ठाँव
शहरबानो उसका अहे नेक नावँ

जो सीमीपटन शहर है एक गँभीर
वो करती है वाँ ख़ुसखी बे नज़ीर

है सारों कूँ उसका बड़ा एतबार
कि है सब क़बीले की वो नामदार

वले जाँ तलक शहर की बाट है
वहाँ लग अगिन काच एक घाट है

सकत है जो बारा[2] जहाँ फिर सके
वले नईं यू कुदरत वहाँ फिर सके

कि दरिया अगिन की उबलती हैं वाँ
ज़मीं गर्म ताँबा हो जलती है वाँ[3]

कही त्यूँ करेगा जो ऐ जान तूँ
किये त्यूँ है लक मुजपे एहसान तूँ

भला है जो वाँलग[4] अपे जाये तूँ
कि हाल आपना मुद्दुवा[5] पाये तूँ

कि अँपड़ेगी वो तेरे अहवाल तईं
कुबूलेगी वो तेरे अक़वाल तईं

कि वो गुन भरी बख़्तवर नेक नाम
करेगी तेरा काम हर क्यों तमाम

---

१ मेरी रखवाली के लिए मुक़र्रर हैं २ हवा ३ जमीं गर्म......जलती है वाँ—वहाँ की जमीन आग में जल कर ताँबे की तरह लाल है ४ वहाँ तक ५ इच्छा ।

कि धरती है वो दोस्त[1] इंसान कूँ
करेगी बहुत प्यार तुज जान कूँ

जो तेरी ज़बाँ थे वो रौशन ज़मीर
सुनेगी तेरा किस्सा यू दिल पिज़ीर[2]

तो हर क्यों[3] करेगी तुजे सरफ़राज़
कि शाहबाज़ाँ में तूँ शाहबाज़

मेरी माई हौर बाप कूँ मँग ले
मिला एक करेगी मुजे हौर तुजे

कि धरती है कुदरत वो असबाब का
हो ख़ुशहाल तूँ वक्त है लाब[4] का

वले तुज अकेला केरा नईं है काम
जो ढूँढ कर सके काड़ उसका मुक़ाम

सलामत सों अपड़ाय तुज मीत कूँ
देऊँगी सँगात एक इफ़रीत[5] कूँ

ना आज़ार होय त्यूँ तेरे बाल कूँ
वहाँ भेज देऊँगी तुज लाल कूँ[6]

जो कुच ग़म है दिल में सो तूँ काड़ सट
गरद दर्द का मुख पो थे झाड़ सट

तरे तईं वो शाहज़ादी हौर उसकी माई
बहुत कुच सिफ़ारिश किया मुजकूँ आइ

किते वज़ा सों कर सिफ़ारिश तेरा
पड़ी थीं गले अंत लेने मेरा

---

१ दोस्त रखती है २ दिल को पिघलाने वाला ३ हर तरह से ४ लाभ ५ जिन्न, देवों की एक योनि विशेष ६ ना आज़ार......लाल कूँ—वहाँ तुझे इस प्रकार भेज दूँगी कि तेरा बाल भी बाँका न होगा।

वले कुच खातिर में ना लाई मैं
तग़ाफ़ुल[1] में सुन कर अपस भाई मैं

अभी तूँ नको बोल कुच उनके धीर
खज़िल[2] कर नको गाल मेरा सरीर"

कया शाहज़ादा "मेरा क्या मजाल
जो ठेलूँ तेरी बात ऐ जग उजाल

तेरा अम्र मुज सर पे ज्यूँ ताज है
मुजे तुज तरफ़ थे रेवाज[3] आज है"

बचन घट करे यूँ हुए एक दिल
सुबह लग गयें बाग़ में दुई मिल

उजाला हुवा जग में ज्यूँ सुबह का
रहे ते अपन ठार अनजान ज़ा

१ (अरबी) लापरवाही २ (अरबी) शरमिन्दा ३ इज्ज़त ।

बदीउल जमाल का आना

अलामत सूँ नेक अख़्तरी का ज़ुहूर
किया ज्यूँ जहाँ में जहाँ ताब सूर[1]

सो उसकी सँगातन सों मिल उसकी माई
भितर उस परीज़ात के डेरे आई

दुआ कर कही यूँ कि "ऐ गुलेज़ार
अजब आज का दीस है कामगार

ग़नीमत है यू फ़ुरसत आराम कर
तूँ कल शर्त की त्यूँ च अब काम कर[2]

कही शर्त कल की बजा ल्याव नाँ
तेरा दइस उस आज दिखलाव नाँ[3]

नको ठेल दे तूँ मेरी बात अताल
मेरा दूद पी है सो कर तूँ हलाल

जो बेटी मेरी भान तेरी अहे
तूँ उस थे सगी मेरी बेटी अहे

कलेजा कते सो मेरा तूँ है आज
सच ईमान मुज जीव केरा तूँ है आज

तूँ आज उसी दुःखी यार कूँ याद कर
दिखा दरस तेरा उसे शाद कर

जुदाई तो नहीं कुच हमन तीन में
तूँ एक नाम कर ले दुनियाँ दीन में

---

१ अलागत… …सूर—अच्छी क़िस्मत का तारा इस तरह चमकने लगा, जिस तरह सूर्य सारे संसार को प्रकाशित कर देता है २ तूँ……अब काम कर—कल तुमने जो शर्तें बांधीं, उनके अनुसार काम करो ३ कहीं शर्त……दिखलाव नाँ—तुमने जो शर्त कल की थी उसको पूरा करो अपना दर्शन सैफुल-मुलूक को दो।

कहूँगी तुजे तो बदीउल जमाल
जो उस बे-नवा[1] कूँ करेगी निहाल

मिन्नत मेरी खातिर में ल्या हर सनद
कि रहेगा तेरा नावँ अज़ल[2] ता अबद[3]

ज्यूँ इस बात पर थे छुटी गुदगुली
सो राज़ी हुई वो चंचल चुलबुली

मुहब्बत मने देक उसका खयाल
कुबुली वो कये त्यूँ बदीउल जमाल

जमा कर खुशी मन के सौरात की
किये गर्म मजलिस खुश उस रात की

कुदूरत[4] सों ज्यों आरसी पाक हो
असर सात सर सों तरबनाक[5] हो

सो चारों मिले खुश हो वई एक ठार
सो बैठे लताफ़त सों मजलिस सँवार

अदिक गर्म सोहबत सो खुश सात हुई
टल्या दीस बाताँ में सो रात हुई

डुब्या सूर; महताब[6] आया निकल
बरसने लग्या साफ़ चंदना निछल

सितारे झमकने लगे ठार-ठार
छुपा जाके ज़ुल्मात[7] में अंधकार

उजाला हुआ साफ़ यूँ चौकदन
ज़मीं कूँ मगर लाये थे घस चन्दन[8]

---

१ ग़रीब २ (अरबी) सृष्टि का प्रथम दिन ३ (अरबी) सृष्टि का अन्तिम दिन, क़यामत का दिन ४ गम और गुस्सा ५ (फारसी) खुश ६ चन्द्रमा ७ वह स्थान जहाँ हमेशा अँधेरा रहता है ८ उजाला......घस चन्दन—चारों तरफ चाँदनी फैली हुई थी। ऐसा प्रतीत होता था मानों किसी ने ज़मीन पर चन्दन घिस कर लगा दिया हो।

सफ़ादार इस बज़्म के नूर थे
झमकते अथे शमाँ ख़ुश दूर थे

हर एक ठार पर शमाँ की रौशनाई
जकाजोत सो चौकधन जगमगाई

मँगाये निछुल मस्त रंगी शराब
सुरायाँ मरे पाछ[1] क्याँ बे-हिसाब

फिराने लगे प्याले याक़ूत[2] के
सटे म्याने बादाम ल्या कूत के

वो गुनवन्त शहज़ादी हौर उसकि माई
अधी रात लग वक्त अपना गँवाई

रज़ा ले चल्याँ वाँ ते अपने मंधीर[3]
हुई याँ ख़ुशी ज्यास्त दोनों कूँ फीर

असर भेद मन में हुए मस्त ख़्याल
वो सैफुल मुलूक हौर बदीउल जमाल

जो देखन लगे ख़ूब एकस कूँ एक
अँख्याँ में रहे ख़ूब एकस कूँ एक

कि थे एक ते एक साहब जमाल
मती हो मुहब्बत के वो जग उजाल

हलूँ हात में हात लेने लगे
चुमें लग मुहब्बत सों देने लगे

मदन दो तरफ़ थे जो आया उबल
हुए महूव आपस में आपीं पिघल

हुए सुद[4] गवाँ बेख़बर दो जनें
सुते मिल के वई एक बिछाने मनें

१ हरे रंग का एक बेशक़ीमती पत्थर २ लाल रंग का हीरा ३ मंदिर, महल
४ सुधि, होश।

व लेकिन उनन में न था कुच ख़्याल
कि थे पाक दामन में दोनों कमाल

जो कोई पाक आशिक़ है बावल नहीं
वो संगीन है कुच उतावल नहीं

यक़ीं जान तूँ इश्क जाँ पाक है
तलब नफ्स का उस अँगे खाक है[१]

सुबह जो रयन[२] में थे पैदा हुआ
जो मशरिक़ कदन थे हुवैदा हुआ[३]

छुपा चाँद जा सूर की ताब थे
एकाएक उठे जाग वो खाब थे

चले अपने ख़ीमाँ में झट फाँक[४] हो
रहे दोनों दो धीर थे दो आँख हो

सो सैफुल-मुलूक रात के ज़ौक़ सात
कह लेने लग्या इस वज़ा शौक़ सात

कि क्या कुच मुबारक थी रात आज की
मगर हूर आई थी मेराज[५] की

अजब फ़ैज़ पाया मैं उस रात में
कि माशूक़ आया था मुज हात में

मुजे इश्क का मस्त अँपड़्या शराब
सोता था मेरे गोद में माहताब

यही ज़ौक़ जीता हूँ लग बस मुजे
यही रंग बस है यही रस मुजे

चड़्या तन कूँ कस दिल कूँ उमस हुआ
बड़ा जस हुआ मुंज बड़ा जस हुआ

---

१ यकी जान......खाक है—जहाँ पवित्र प्रेम है, वहाँ प्रेमी शारीरिक प्रेम को तुच्छ समझते हैं २ रैन, रात ३ प्रकट होना ४ अलग हो ५ स्वर्ग।

सैफुल-मुलूक का सीमीपटन जाना

जो उस बावरी का परीज़ात कूँ
लग्या बाव उस सर्वेआज़ाद[1] कूँ

चड़ी इश्क के ख़ुश हँडोले मने
पड़ी जा मुहब्बत के भूले मने

हुई ज्यूँ कि लैला सो उस लाल की
भँवर होके उस फूल की डाल की

परेशान जी में लगी फीरने
लगी बिरह दरिया मनें तीरने

ग़ोते बेसुदी[2] हो जो खाने लगी
सो हैरत में पड़ रंग फिराने लगी

दीवानी हुई सुध सटी ज़ात की[3]
लगी ख़ूब सोहबत असर रात की

जो पाई खबर फिर कितेक बार कूँ
खबरदार हुई ज्यूँ सुबह ठार कूँ

सगी अपनी दादी कूँ तब याद कर
रखी नाम ले नाँमाँ[4] बुनियाद कर[5]

करी ख़ुश इबारत सूँ तहरीर यूँ
लिखी इश्क ताज़ा की तक़रीर यूँ

जो हर बोल पर वो पिगल नीर होय
पिगल नीर हो आपने धीर होय

लिखीं हर सतर सो सतर सेह्‌[6] की
उस उपराल वई मोहर की मेह्‌[7] की

---

१ (फारसी) आशिक़ २ बेसुध ३ दीवानी......ज़ात की—वह प्रेम में पागल हो अपने आप को भूल गई ४ पत्र ५ प्रारंभ करना ६ जादू ७ प्रेम ।

निछल गुन भरी शह परी बेमिसाल
सुलक्खन[1] चतुर धन बदीउलजमाल

अदब की रविश सूँ सरा[2] बेहिसाब
लिखी अपने हाताँ सूँ दादी कूँ ज्वाब

बुला कर कही एक इफ़रीद[3] कूँ
मेरा मीत है एक इस मीत कूँ

ले जा काड़ सीमीपटन लग शिताब
मिला मेरी दादी सूँ हौर ल्या जवाब

कह उस शहर बानूँ कूँ मेरा सलाम
जो कुच मुद्दुवा[4] है सो उसका तमाम

ले कर आवले अपने खातिर मनें
कि आया है वो आस कर तुज कनें

वो फरमाई थी त्यूँ च इफ़रीद सो
मलिक ज़ादे कर आइया दौड़ वो

कहा ऐ जगाजोत नूरी निहाल
मुजे भेज दी है बदीउल जमाल

तुजे अपनी दादी कन अँपड़ाव कर
खबर अँपड़या सो तुरत ल्याव कर

चला तूँ मेरे सात एक तिल मनें
तुज अपड़ाउँगा उसको दादी कने

नज़र राख सैफुल-मुलूक बरक़ज़ा[5]
सरांदील के शह से लेता रज़ा

वो साअद कते सो नन्हें माइ थे
वो शहज़ादी हौर उस केरी माई थे

---

१ सुलक्षण, अच्छे लक्षणोंवाली २ सराह, तारीफ़ कर ३ प्रेतों की एक योनि विशेष
४ इच्छा ५ तक़दीर पर भरोसा करना ।

दुवा मँग ले इफ़रीद पीट पर
चड़या जो कह्या वो अँख्याँ मूच कर

जो सैफुल-मुलूक ज्यूँ अँख्याँ मूचिया[1]
वो इफ़रीद वई वाँ ते हमला किया

उड़ाया कबूतर कर उस जान कूँ
चल्या हौर लग्या जाके असमान कूँ

उलंग आग का गर्म सन्दूर घाट
पकड़ रास सीमीपटन धीर बाट

ज्यूँ शहर केरे नज़िक आइया
अँख्याँ शाहज़ादे कूँ खोलो कह्या

उतारया जो इस शहर में जा उसे
अजायब दीस्या वाँ तमाशा उसे

देख्या ज्यूँ अख्याँ खोल सैफुल-मुलूक
सो लागे अजब वाँ के बरबस्त[2] लोग

परयाँ का जो ग़ौग़ा[3] है दर हर मकाँ
नहीं आदमी ज़ात का कई निशाँ

ज़मीं वाँ की दीसती है जोती तमाम
कि कंकर न थे वाँ थे मोती तमाम

सकल कोट चौगिर्द भंगार[4] का
बरसता है वाँ नूर करतार का

मुरस्सा[5] के चौंधीर थे भाँर्चे[6] उसे
रखे हैं अज़ल[7] थे मगर माँज उसे

बँदे है छजा उसपे अलमाश[8] का
मंडप उस पे ताने हैं आकाश का

१ आँख बन्द किया २ चीजें ३ शोर-गुल ४ भीषण शब्द ५ (फ़ारसी) जड़ाऊ, जिस पर बेशक़ीमती पत्थर जड़े हुए हों ६ कलश ७ शुरू से ८ बेशक़ीमती पत्थर।

सोने की है चौंधीर ऊँची दीवार
जड़त के कंगूरे उपर ठार-ठार

लग्या है बड़ा बाग़ उस आस-पास
संदल, ऊद, अगर के बैरक बेक़यास

हर एक ठार अमृत की तासीर के
वहते हैं निछल काल्वे[1] नीर के

दिये हैं हर एक ठार डेरे बलन्द
तनावाँ मुरस्सा के मेखाँ कूँ बन्द

न था शहर आलम में इस धात कईं
हुआ देक शाहज़ादा हैरान वईं

लग्या फ़िक्र करने जो उस ठार पर
कि खीमाँ शहर बानूँ का है किधर

दिया उसकूँ इफ़रीद ज्यूँ आ निशान
सो नज़दीक शाहजादा आया पछान

अखंड पाच[2] का देख्या एक तख़्त
उस उपराल वो मावली[3] नेक बख़्त

शगुफ़्ता[4] हो बैठी है खुश दाब सों
खड़याँ हैं परयाँ सब मिल आदाब सों

मुकम्मल है किसवत मनें नूर की
तजल्ली दिंपे मुख उपर सूर की

वो आशिक़ चलन हार इफ़रीद सात
खड़या सामने जा रविश रीत सात

अँगे हो किया शाहज़ादा सलाम
सो देती अलैकी[5] फिर वो नेक नाम

---

१ नहरें २ हरे रंग का बेश क़ीमती पत्थर ३ माता; बूढ़ी औरत ४ खुश हो कर ५ सलाम का जवाब देना।

कही तूँ सलामाँ न करता मुंजे
तो करती बिला उज्र टुकड़े तुजे

कि देवाँ व परियाँ कूँ इस ठार पर
सकत नईं हैं आने की यूँ बेजिगर

अथा सख़्त तेरा कलेजा बड़ा
जो आकर मेरे सामने तूँ खड़ा

सो यूँ आ कहा शाहज़ादा उसूँ
कि मुंज ते हुआ है गुनह बख़्श तू

बदीउल जमाल उस लिखी सो जवाब
दिया हात में जाके उसके शिताब

पड़ी सरबसर ज्वाब वो खोल ज्यूँ
रुख उसकी तरफ़ कर उठी बोल यूँ

देखी हर्फ़ दरहर्फ़ मशगूल हो
सो खातिर[१] में अपने खिली फूल हो

वो मतलब उसे ख़ुश मुवाफ़िक़ लग्या
यू आशिक़ वो माशूक़ लायक लग्या

देक उसके कथन मेहरबानी में आई
नज़िक बैसला हम ज़बानी में आई

शकल सूरत उसकी निभाने लगी
अदिक फ़रह पर फ़रह पाने लगी[२]

कि तूँ कौन है हौर किधर का अहे
जो इश्क इस सहेली सों धरता अहे

तेरी ज़ात आदम दिसे वो परी
तू सूँ जुफ्त[३] क्यों होवे वो गुन भरी

१ दिल में २ अधिक ख़ुशी पाना ३ मिलना ॥

कि है वो चंचल पद्मिनी आतिशी
तुज आतिश सूँ गमने कूँ क्यों हुई खुशी

क्यों उस नार से हो सके जुफ़्त तूँ
कि देख्या अहे यू मगर मुफ़्त तूँ[1]

मेरी जान कूँ बहुत मुश्किल दिसे
कना क्यों वो तुज एक तन, एक दिल दिसे

सुनी हूँ परयाँ थे मुजे याद है
बड़ा बेवफ़ा आदमी ज़ाद है

वफ़ा आदमी ज़ाद में कुच नहीं
जहाँ कुच वफ़ा नईं वहाँ सच नईं

मैं किस धात कर ल्याऊँ[2] तेरा मुराद
कि मुंज दिल कूँ लगता नहीं एतमाद"

सुन्याँ शाहज़ादा जो इस बात कूँ
उठ्या बोल उस वक़्त इस धात सूँ

अगिन इश्क की फीर इस बात ते
उठी सुलग कर उस जले ज़ात ते

कि "ऐ बख़्तवर भाई गुन ज्ञान की
तूँ सन्दूर[3] सचली है इरफ़ान[4] की

अछो उम्र दुनियाँ में तेरा दराज़
कि तूँ फ़िल हक़ीक़त है आदम-नवाज़

जो कुच तूँ कही सो मुजे सच कही
चले सुन कता हूँ तुजे मैं सबी

लग्या है मेरा दिल उसूँ सुबह शाम
भरी है मेरी ज़ात में वो तमाम

---

१ कि देख्या......मुफ़्त तूँ—बदीउल जमाल को तूने बेकार ही देखा है २ पूरी करूँ
३ समुद्र ४ ज्ञान।

अगर पूछती है तो मुँज बाले-बाल
बदीउल जमाल है बदीउल जमाल

मैं उस नार का पाक आशिक़ हूँ कर
बजा है ढँढोरा नव आकाश पर

उतम ज़ात वो नार आतिश नेहाद
ठंडी मुज लगी आब थे बी ज़ियाद

न कुच मुंज में हौर उस मनें फ़र्क़ है
यू तन उसकी पीरित मनें ग़र्क़ है

बजा है मेरा हाँक मुलुके मुलूक
मदन कामता मैं हूँ सैफुल-मुलूक

मैं वो आदमी हूँ जो सब थे अवल
दिउँ जीव उस शहपरी के बदल

जम उस मोहनी का वफ़ादार हूँ
सदा जीव सूँ उसका खरीदार हूँ

बहूत दूख देख्या हूँ मैं उसके तईं
जंगल घाट कोई नईं न देख्या सो मैं

फिरयाँ डोंगराँ डोंगराँ[1] दूर के
किया दौड़ लई गश्त सन्दूर के

कि उसके बदल में जफ़ा[2] सीस ले
जिया जालिया[3] हौर सिना पीस ले

फिरया सर ले मैं दुःख के डोंगराँ
किया तल उपर सात मैं सन्दुराँ

बहुल मारकाँ पेच[4] के देखिया
तमाशे तमाशे जगह देखिया

---

१ घाटियाँ २ मुसीबत ३ जी को जलाया ४ मुसीबतों से लड़ाई।

मेरे दर्द दुख कूँ निहायत नहीं
मेरे अवदशे कूँ जो ग़ायत[1] नहीं

तू ही यूँ सुनेगी मेरा दर्द अगर
अजब क्या जो जावे सिना तर्ख़[2] कर

ग़रीबी मेरी कुच बिसरने की नईं
एकाएक मेरी वेग सरने की नईं"

बचन बोलता हौर रोता अथा
भरा रंग तग़य्यीर[3] होता अथा

जो याद आई वो धन सो हो चर्ख़ वईं
हुआ बेख़बर फिर सिना तर्ख़ वईं

देखी शहर बानू कि सख़्ती च यू
हुआ है गुम उसके पिरित बीच यू

समझ ली उसे आशिक़े पाक कर
हुवा है बिरह खर्ग[4] थे चाक कर

कही जो भला उसके हक़ पर अताल
जो वाक़िफ़ हो उसको करूँ मैं निहाल

नज़िक आपने प्यार सूँ वईं बुलाई
बहुत मान दे तख़्त पर बैसलाई

कही "ग़म नको कर तूँ ख़ुशहाल अछ
खिल्या ताज़ा ज्यूँ फूल का डाल अछ

कि हर क्यों करूँगी तेरा काम मैं
दिलाऊँगी तुज वो दिल आराम मैं

खिलाऊँगी गुंचा तेरे आस का
दिपाऊँगी तारा तुज आकाश का

---

१ हिसाब २ तड़कना, फटना ३ बदलता था ४ खड्ग, तलवार।

लगाऊँगी मरहम तेरी रीश[1] कूँ
मिलाऊँगी तुज सूँ तेरे खीश[2] कूँ"

जनी माँ हो फ़रज़न्द पाई उसे
दे इस धात तक़्वा[3] जिलाई उसे

बाज़िद उसकी हुई कारसाज़ी मने
चित उसकी रखी सरफ़राज़ी मने

तलब सारे देवाँ कूँ कर एक बार
जमा करने फ़रमाई सब एक ठार

तमाम अपने लश्कर हशम[4] भार सूँ
मिल इस तलमलाते जलनहार सूँ

हवा के उपर दो तरफ़ बान[5] सफ़[6]
चली वई गुलिस्ताँ एरम की तरफ़

नज़िक गुलिस्ताने एरम के ज्यूँ आई
सो एक ठार शहज़ादे कूँ बैसलाई

चली शहर में आप ख़ुशहाल सूँ
मिली जाके फ़रज़न्द शहबाल सूँ

१ ज़ख्म २ अपना ३ ताक़त ४ लश्कर ५ बाँध ६ क़तार ।

देवों के द्वारा पकड़ा जाना

जहाँ जानियाँ[1] जिस निगहबान है
न उसकी कधीं ज़ात कूँ ज़ियान[2] है

अजब कुच समाया है इस ठार का
अजब खेल कुच याँ है करतार का

कि जिस ठावँ वो आशिक़े नेक नावँ
अकेला रह्या जो अथा कर मुक़ाम

सो वो ठाँव अवतार कुच ठार था
जनत के गुलिस्तान के सार था

खिले थे कितेक जिन्स के फूल वाँ
बू के बिन न थी नावँ कूँ धूल वाँ

डुबे थे चमन सरबसर फूल में
किते जिन्स की बास हर फूल में

पवन बाज वाँ कोई माली न था
किसी फूल थे बिन वो खाली न था

कहीं राई चम्पा कहीं सेंवती
कहीं मोंगरा हौर कहीं रेवती

कहीं यासमन हौर मदनबान कई
कहीं ताजे सुर्ख़ हौर रैहान कई

कहीं लाल हौर कहीं रँगीले गुलाल
कहीं फूल सद्‌बर्ग के बेमिसाल

कितेक इस मनें फूल कीते कल्याँ
देखें ता नयन कूँ उठें गुदगुल्याँ

---

१ ख़ुदा, संसार के जीवन का स्वामी २ हानि।

कहीं तख़्ते अंगूर के बेबदल
कहीं अंजीर वो अनार शीरीं निछल

कहीं सेव हौर कई अनन्नास ख़ूब
कितेक जिन्स के मेवे ख़ुश बास ख़ूब

कई अख़रोट बादाम पिस्ते नफ़ीस
कई जौज़ चिलग़ोज़ दिसते नफ़ीस

ख़ुश ऐसे अचंबे गुलिस्तान में
लगया सैर करने अपन ध्यान में

ठंडी कुच हवा वाँ की ज्यूँ उसकूँ भाई
सो एक भाड़ तल ख़ुश उसे नींद आई

कज़ारा[1] वो इसफ़न्द केरा परा
जो उस शाहज़ादी कूँ लेके उड़ा

रखा जो अथा क़ैद कर बन्द सूँ
जो नींद उसकी बाँद्या अथा दन्द सूँ

दुःखी उस परे का बड़ा भाई हो
मुसल्लम सुक आराम थे हात धो

तलब कर परयाँ कूँ सो कई लक हज़ार
किया सबको ताकीद यूँ बेशुमार

कि "मारया जो है भाई कूँ मेरे कोई
सो वो आदमी बाज दूसरा न होई

ढूँढो जाके मशरिक़ ते मग़रिब तलग
करो तल उपर मुल्क एक धर ते जग

तफ़हहुस[2] सिते हर सनद पावो उसे
मेरे पास जीता पकड़ ल्यावो उसे

१ संयोग-वश। २ (अरबी) खोज।

चल्याँ वई परयाँ ढूँढ लेत्याँ उसे
सो फिरने लग्याँ पूछत्याँ हर किसे

उनन में थे कितेक परयाँ पाइयाँ
मलिकज़ादे के हक़ पे वो धाइयाँ

एकाएक आयाँ उसी बन मनें
सोता उसकूँ पायाँ उसी बन मनें

नज़िक आ तमाम उसकूँ कीता हुशियार
कह्या कौन है तूँ तेरा कौन ठार

न था उस बिचारे के तईं फ़ाम कुच
एकाएक खड़्या सर पे आ काम कुच

समज यूँ पछान्याँ[2] कि सब यू परयाँ
इसी ठार क्याँ होयेंगी सुन्दरयाँ

जो कुच था क़िसा आपना सरबसर
कह्या इस परयाँ धीर ना जानकर

वहीं वो परयाँ उस उपर टूट पड़याँ
हवा के उपर ले उसे वई उड़याँ

चल्याँ गुलिस्तानेएरम ते उलंग
पिछौंड़े बन्दयाँ ज़ोर वर ज़ोर तंग

पड़ी उसके गरदन पे ज्यूँ यू बला
न सह सक जफ़ा तलमला-तलमला

कह्या शाहज़ादा यू क्या हाल है
यू क्या क़ह्र है जो मुज उपराल है

दियाँ ज्वाब सब वो परियाँ यूँ उसे
"तूँ सँपड़याँ सितम पूछता है किसे[3]

---

१ (अरबी) खोज २ पहचाना, समझा ३ तूँ सँपड़्या......पूछता है किसे—तुमने ज़ुल्म किया है, अब हम से क्या पूछते हो ?

परा[1] जो मुवा है तेरे हात सूँ
लग्या है फिकर उस केरे भाई कूँ

वो दरियाये कुलज़ुम केरा राज है
शहाँ में बड़ा सो वही आज है

हमीं उसके फ़रमान बरदार सब
तुजे ढूँढते थे हर एक ठार सब

ले जाते हैं तुजकूँ उसी पास अताल
न जाने तेरा किस वज़ा होवे हाल

बहरहाल उस ले गयाँ राज-पास
सो देक राज उसे तुन्द[2] हो बेक़यास

वो मातमज़दा ज्यूँ उसे देखिया
सो टुकड़े करो कर इशारत किया

कहा वेग जल्लाद कूँ मार उसे
वो जल्लाद ना मार, कर प्यार उसे

कहा उस शहंशाह कूँ इस घात जा
कि इस मारना खूब नईं इस वज़ा

सो रखें ज्यूँ उसके तईं बन्द कर
जो झुर-झुर अज़ाबाँ थे यू जाय मर

इसे मारना खूब नईं एक बार
अज़ाबाँ[3] सूँ रखना उसे एक ठार

जो झुर-झुर[4] अपस में अपें सुबह शाम
देव छोड़ दिक्क़त सूँ जिउड़ा तमाम

अगर मारते हैं तो एकी च बार
वहीं जीव देकर सो मरता है ठार

१ परी का पुरुष वाची शब्द २ (फ़ारसी) गुस्सा ३ तकलीफ़ ४ दुःख से सूख-सूख कर।

कहे त्यूँ बन्द उस सज़ावार
वले क्या रज़ा शह की इस ठार है

जो जल्लाद थे शह सुना यू बचन
सो फ़रमाइया त्यू न करने जतन

रख्या शाहज़ादे कूँ ज्यूँ बन्द में
भरया दूक बन्दे-बन्द के पैबन्द में

बड़ा दर्द उस आशिक़े पाक कूँ
हुवा बन्द में उस दरदनाक कूँ

लग्या रोवने हौर सिना फाड़ ले
सकत नईं जो वाँते अपस काड़ ले

घसे बख़्त फिर इस पे दन्दे के सार[1]
सो मरने के कारन हुवा एख़्तियार

खुदा बाज भी उस न था कोई नज़िक
करे याद उस शहपरी कूँ अदिक

दुःखों ते अपस में हुवा यूँ मलूक[2]
न था आदमी का कुच उसमें उसूल

पड्या दूर ज्यूँ आपने खीस[3] ते
सो ताज़ा किया रीश[4] कूं नीश[5] ते

न कुच फ़हम इसमें न कुच ज्ञान था
उसे कूत[6] माशूक़ का ध्यान था

जो वो मावली गुन भरी बेनज़ीर
सुलक्खनवती शहरबानूं गँभीर

सो उस पाक आशिक़ जलन हर कूँ
गिरफ्तार हौर तलमलनहार कूँ

---

१ दुश्मन की तरह २ दुःखी ३ अपने लोग ४ जख्म ५ नश्तर ६ खुराक ।

रखे ठार पर है च कर जान ले
ख़ुशी बेनिहायत अपस आन ले

मिली जाके ज्यूँ अपने फ़रज़न्द कूँ
निछल नूर दीदे ख़िरदमन्द[1] कूँ

हुआ माँ कूँ देक शाह यूँ शादमाँ
जो गुल-गुल हो कीता दुआ आसमाँ

उतर बात में वो ठंडी पेट की[2]
कहीं हाल उस जान के नेट[3] की

सो कुर्सी उपर बैसला बात कूँ
किये शाद शहबाल की ज़ात कूँ

कही हाल सैफुल-मुलूक का तमाम
सुनाई किस्सा उसके दुक का तमाम

सो शहबाल वो सात[4] उस तिल मने
मुहब्बत पकड़ आपने दिल मने

कहा अपनी माँ कूँ कहाँ है वो ज्वान
देखन उसकूँ तपता है मेरा प्रान

कही शहरबानू मैं उस ज्वान कूँ
सो आते वखत सात ले आई हूँ

फ़लाने चमन में रखी हूँ उसे
एकाएक डरी ल्याने तुज कन उसे

कि आदम हो वो आदमी सो कहीं
कि वज़ा हमनाँ सँपड़ता नहीं

मुबादा[5] करेगा तूँ उसको हलाक
बहुत एक मेरे दिल मनें था यू धाक

१ (फ़ारसी) अक्लमन्द २ (मुहाविरा) बाल बच्चोंवाली ३ दोस्त; प्रिय ४ साअत (अरबी) समय ५ कहीं ऐसा न हो ।

सो दर हाल शह-पाल शह बख़्तवर
परयाँ कूँ दिया भेज उस ल्याव कर

बुला भेजिया भेज कीतेक परी
सो जा उस गुलिस्तान में गुन-भरी

जो उतर्या अथा शाहज़ादा जहाँ
वहाँ जायकर देखि आये वहाँ

देख ढूँढ़ चमने-चमन ठारे-ठार
न पाये कहीं सो लग्या ख़ार-ख़ार

कह्याँ शाह शहपाल को जायकर
कि वो जान दीसता नईं उस ठार पर

फ़िकर-ज़ाद हो फिर के आते बरों[1]
कह्या एक परा सामने होके वाँ

कि देख्याँ हूँ मैं ख़ूब उस जान कूँ
निछल हुस्न के उस उतम भान कूँ

परी एक जमाअत की जाती अथी
हवा पर उड़ा उस ले जाती अथी

शगुफ़्ता[2] न था सख़्त दिलगीर[3] अथा
वले मैं न पूछ्या सो तक़सीर[4] अथा

सुन इस धात उस ज्वान के हाल कूँ
कहे आयकर त्यूँ च शहपाल[5] कूँ

सो शहबाल बिन शाह रुख़ ज्यूँ यू बात
सुन्याँ सो लग्या तलमलन धात-धात

जो था शाह खुशहाल ज्यूँ फूल खिल
सट्या सोच आपीं हुवा वईं खजिल[6]

---

१ आते वक़्त २ खुश ३ परेशान ४ ग़ल्ती ५ बादशाह का नाम ६ शर्मिन्दा होना।

कमर शहर बानू की पैटी वईं
परेशानगी- दिल में बैठी वईं

जो इस हाल ते धन बदीउलजमाल
खबर पाई सो सुद गवाँ हुई निढाल

पड़ी भुइँ उपर जो न था ताब उसे
सो छिड़क्याँ पर्‌याँ मुख गुल्लाब उसे

कितेक बार कूँ फिर जो टुक होश पाई
सो उठकर हलूँ अपनी दादी कन आई

कहीं "ऐ सगी क्या करूँ मैं अताल
कि दिसता है उस बाज जीना मुहाल

मेरा जीव था सो वही पीउ था
कि उस पीउ पर लई मेरा जीव था

उस वाँ एकट छोड़ के आई तूँ
संगात अपने की ना उसे लाई तूँ

कती किस वज़ा काम तूँ हाय हाय
कि याँ नईं रखी फ़ाम तूँ हाय हाय

करी काम अम्मा[1] न पूरा करी
धतूरा दे मुज़कूँ दीवाना करी

दीवानी हूँ मैं वो दीवाना कहाँ
वो दानिशवरी[2] का है दाना कहाँ

किधर गई वो रौशन ज़मीरी तेरी
यू किस घात की दस्तगीरी तेरी

अधर लग मेरे ल्याके अमृत कूँ
फिर आकर लेकर गई तूँ इस रीत कूँ

---

१ अक्ल मन्दी २ (फ़ारसी) लेकिन ।

अगर होसे तो फिर तुजसे होना यू काम
नहीं तो मेरा काम है याँ तमाम"

जीऊँ इस धात वो चुलबुली बोल उठी
च छुपे राज़ कूँ आपने खोल उठी

सो लक धात दिलगीर वो मावली
हुई वई पिछल नीर वो मावली

चली आपने पूत शहबाल कन
जकाजोत वो खुसरवी लाल कन

कही "ऐ मेरे मन के बन के निहाल
कि यू काम तुजसूँ है निस्बत अताल

एकाएक जो याँते हुवा ग़ैब[1] वो
सो तुज शाह कूँ है वड़ा ऐब वो

तेरे मुल्क में ते है कुदरत किसे
जो यूँ काढ़ चोरी ले जावें उसे

हर एक धात सूँ कर तू पैदा उसे
तफ़हहुस[2] सती हर सनद पा उसे

कि आशिक़ है उसकी बदीउल जमाल
मबादा होवे उसके तईं पायमाल

मगर शाह दरियारे कुलज़ुम के लोग
अदावत सूँ सो राखते हैं यू रोग

कि इसके जीवें मार कर भाई कूँ
सरांदील के राज की जाई कूँ

एकेला अपे काढ़ ल्याया अथा
सो माँ बाप सूँ ल्या मिलाया अथा

---

१ ग़ायब २ खोज ।

उसे मक्र[1] सूँ दन्द कर वो दन्दी
किया आज तुजते मुजे शर्मिन्दी

तूँ फ़रज़न्द है गर मेरे पेट का
तूँ याँ नेट कर वक़्त है नेट का[2]

मेहरवान हो उस दरदमन्द पर
तूँ अपनाच कर जान फ़रज़न्द कर

कर इस वक़्त पर उसकी हक़्क़यावरी[3]
दिखा आज जग में तेरी दावरी[4]

मेरे मन कूँ सन्तोष सूँ पूर कर
यू शर्मिन्दगी मुजते तूँ दूर कर

कि नादान बाली बदीउलजमाल
तेरा जीव है हौर तेरा मुल्को माल

उन अपसें जो होना कती होएँगी
वहीं पीउ होना कती[5] होएँगी

जहाँ थे खड़्या आज यू काम यूँ
तूँ कह, ता तुजे होय आराम क्यूँ

लगा इश्क़ उस जान का फिर उसे
मुसल्लम दीवाना करे छ्ल[6] उसे

अँगे सर पे जीव तोड़ ले आपना
वो कँवला[7] सीना फोड़ ले आपना

दुनियाँ वीच यूँ बोल रह जायेगा
खलक़ कूच का कूच कह जायेगा

---

१ धोखा २ तूँ याँ नेट कर......नेट का—यहाँ दोस्त का काम कर, क्यों कि दोस्ती को प्रकट करने का समय है ३ सच्ची मदद ४ बादशाहत ५ कहती ६ छल, धोखा देना ७ कोमल ।

कर इस टार पर सई तूँ आपको
तुरुत उस बिचारे कूँ माँ बाप हो"

सो शहबाल शह फ़तह के खर्ग का[1]
दिलावर निपट बाग के वर्ग का[2]

फ़तह के दमामे पे लकड़ी कूँ टोंक
चल्या लाट का थाट संगात लोक[3]

ग़ुसाला हो शमशीर कूँ हात ले
सरब दल कूँ सब अपने संगात ले

सिलह[4] हौर संजोत सूँ सरबसर
परयाँ हौर देवाँ कूँ मुस्तैद कर

एकाएक जागे पे ते[5] ज्यूँ हिल्या
ज्यूँ असमान बादल के दल सूँ चल्या

मबादा नबी कर ज़मीं भार सूँ
हवा पर रह्या अपने भार सूँ

जो देखे दिल उस शाह के कोट के
सो बिचके[6] मलक[7] अर्श के गोट के

देखत सिलह संजोत का लकलकाट
गया सूर केरा सिना फाट-फाट

एकाएक नज़र ज्यूँ पड़ा यू हुजूम
हुए बावरे खलबला सब नुजूम

उठ्या ग़ुल जहाँ का तहाँ बेक़यास
गई यू खबर शाह क़ुलज़ुम के पास

१ विजयिनी तलवार रखनेवाला बादशाह २ बाघ के समान बहदुर ३ चल्या......लोक—अपने साथ बहुत से लोगों को ले कर बड़े रोब-दाब से चला ४ हथियार ५ जगह पर से ६ डर गए ७ फ़रिश्ते ।

कि "शहबाल बिन शाह रुख बादशाह
दिलावर जहाँगीर अंजुम सिपाह[1]

तेरी सब विलायत[2] कूँ पामाल कर
वो आता है तेरे उपर जाल कर"

सुन्या शाह कुलज़ुम जो इस बात कूँ
दिया भेज हाजिब[3] कूँ इस धात सूँ

कि "आना तुम्हारा हुआ क्या सबब
मेरे मन कूँ लगता है बहुती च अजब

किसी कूँ न था आज लग यू मजाल
जो मुज मुल्क उपराल कर आये चाल

खुलासा जो कुच है सो कह खोल कर
शिताबी सेती भेज देव बोल कर

कि ख़ूबी नहीं कुच तुम्हें आये सो
शबा शब[4] यू अलग़ार[5] कर धाये सो"

खबर इस वज़ा की ले हाजिब शिताब
जो हाजिब अथा लेवने कूँ जवाब

सो शहबाल शह खुसरवे बेनज़ीर
दिया ज्वाब हाजिब कूँ यूँ कर गंभीर

कि "तुम जो गुलिस्ताँ एरम से जिसे
पकड़ ल्याये हैं भेज देवो उसे

जो वो आदमी है मेरे प्यार का
नहीं कोई दुनियाँ में उस सार का

मुरौव्वत सूँ देवेंगे तो जाऊँगा
बगर नईं तो तुपनाँ पे चल आऊँगा

---

१ जिसकी फ़ौज की संख्या सितारों के समान अगणित हो २ शहर ३ दूत ४ रातों रात
५ अचानक हमला कर ।

वई एक धरते दरियाये कुलज़ुम कूँ जाल[1]
करूँगा तुमन सब के तई पायमाल

दिये बाज उसे याँ ते हलसूँ न मैं
कि गाड़्याँ हूँ रन थाँब[2] टलसूँ न मैं"

वो हाजिब जब इस धात पाया जवाब
कह्या आपने शह कूँ यूँ जा शिताब

"रख्या है जिस तूँ निपट बन्द सूँ
उसी आदमी ज़ात के दन्द सूँ

अदिक गर्म हो तुजपे आया अहे
उसे भेज देव कर कवाया अहे

अगर नईं तो मँगता है लड़ने तुसूँ
सरब दल सूँ अपने झगड़ने तुसूँ

बहुत लश्कर आया है उसके दुंबाल
एकाएक उसे याँ ते जाना मुहाल"

सुन इस बात कूँ शाह कुलज़ुम वहीं
ना ल्या ताब फिर होके बरहम[3] वहीं

कह्या "जाके इतबार[4] यूँ बोल उसे
कि आया है तूँ ढूँढ़ लेता जिसे

सलामत सूँ वो नईं है इस ठार पर
कि लई दिन हुए उस जीव मार कर

तूँ अपने सरब दल सूँ जा याँ ते भाग
नहीं तो तुजे मैं करूँगा हलाक

न हो उसके पै छोड़ दे यू खियाल
ज्यूँ आया है त्यूँ जा तूँ यातें सँभाल

---

१ जला कर २ रण स्तम्भ; युद्ध के मैदान में गाड़े जानेवाले स्तम्भ ३ गुस्से में आना।
४ इस बार।

न कर तेज़ अपस इस शिताबी सती
न हो तुंद जा एक रिकाबी[1] सती

छराला न हो छोड़ दे शान्द तूँ
अदावत न ले मुंज ते बाँद तूँ

नको खोल फ़ितने के मूँदे किवाड़[2]
नको तूँ सितम मुँजकूँ भार[3] काड़

कि हूँ आफ़ते रोज़गार आज मैं
जो निकलूँ सरब दल सूँ भार आज मैं

तो एक धीर ते वईं ख़राबी करूँ
दन्दे के उपर फ़तहयाबी करूँ"

गुसे सात इस धात कह भेज वईं
हुआ मुस्तईद बेग लड़ने के तईं

१ घोड़े पर चढ़ एकबारगी वापस जाना २ लड़ाई झगड़े के बन्द दरवाजे खोलना, लड़ाई शुरू करना ३ बाहर।

सैफ़ुल-मुल्क का क़ैद से छूटना

कहन हार यूँ क़िस्सये हरब[1] खोल
कहे उस वज़ा सूँ ज़बाँ चर्ब खोल

कि शहबाल बिन शाह रुख़ बेनज़ीर
जो हाजिब ते कड़वे सुन्या बोल फीर

निपट ज़हर सूँ तल्ख़ कर धात कूँ
लिया पेंच ज्यूँ अज़दहा ज़ात कूँ[2]

हुवा तुन्द हौर तेज़ अदिक आग ते
ग़ुसाला होकर अज़दहा बाग ते

उचाया शतत का अलम[3] इस वज़ा
जो हैराँ हुआ ख़ल्क़ आया कर कज़ा

उचा दल पे दल खुश छुपा रास्ता
किया हर तरफ़ ते सफ़[4] आरास्ता

हुए जमा जंगी हज़ाराँ तमाम
क़वीदस्त[5] खूँख़ार शेराँ तमाम

एक-एक जान एक कोट ले बुर्ज़ ज्यूँ
लिए हात में क़ितने के गुर्ज़ ज्यूँ

किये रुख़ दन्दे पर जो हर ठार ते
ज़मीं बैस गई थी इसी भार ते

ग़ज़ब नाक हो ज्यूँ अँगे दल हुए
कलेजे पहाड़ाँ के फट जल हुए

तुराटी नफ़ीरयाँ सूँ ज्यूँ बुरग़माँ[6]
हुआ घाबरा जो के पड़ आसमाँ

---

१ लड़ाई २ निपट जहर... ...जात कूँ—दूत की बातें उसे जहर की तरह कड़वी लगीं और वह अजगर साँप की तरह बल खाने लगा ३ झण्डा ४ क़तार ५ ताक़तवर ६ एक खास तरह का बाजा जिसकी आवाज बड़ी तेज़ होती है।

सिलह पोश पौलाद के कोट ज्यूँ[1]
बड़ा शोर सन्दूर की लोट ज्यूँ

उताले हो आफ़त भरे अज़्म[2] सूँ
खड़े आके मैदान में रज़्म[3] सूँ

भया बाव ज्यूँ क़हर का शोर सात
शतत की अगिन सुलग उठी ज़ोर सात

उठ्या गुल जहाँ का तहाँ मार-मार
क़यामत ज़मीं पर हुई आशकार

झलक देक बीजल्याँ सी तलवार के
उड़े फ़ाख़्ते सख़्त संसार के[4]

जो दो राज दो धरते बरहम हुए
गगन सातों हैबत ते दरहम हुए

गुसे का जो बारा उठ्या ज़ोर सों
पड़्या उसके लश्कर पे जा क़ह्र सों

सट्या उसके लश्कर कूँ जाँ-ताँ बखेर
लग्या तोड़ने तोल सों घेर-घेर

जो दौड़ उसके सफ़ पर दिलेराँ पड़े
तो बकरयाँ उपर जाके शेरां पड़े

सटे खास हौर आम कूँ काट-काट
जो किस कूँ न समझा अथा बाट-घाट

दिलेराँ जो शहबाल के पाये बल
सो फ़ौज़ाँ कूँ एक धरते उसके ख़ुदल

१ सिलह...... पौलाद के कोट ज्यूँ—हथियार बन्द सिपाही फ़ौलाद के क़िलों के समान दिखलाई पड़ते थे २ इरादा ३ लड़ाई ४ उड़े......संसार के—दुनियाँ के होश उड़ गए ।

सटे घड़पोते[1] यूँ मुड़्याँ काट-काट
न थी बाट जाने किसे वाँते न्हाट[2]

जो दरिया लहू हो उबलने लग्या
गगन उसपे किश्ती हो चलने लग्या

सराँ तैरते लहू के सन्दूर ते
जो दिसते अथे बुड़-बुड़े दूर ते

धड़ाँ सब निपट मौज के लोट मार
थे डुबते निकलते निहंगाँ[3] के सार

बलायाँ के बानाँ कूँ ज्यूँ आग लाई
ज़मीं हौर ज़माने कूँ वैताग[4] लाई

ग़जब पर ग़ज़ब का जो बारा हुआ
सो ऐसा बड़ा कुच धुलारा हुआ

दुनियाँ ग़ैब हुई उस धुलारे मनें
गँवाता गया दीस अँधारे मनें

लिया गर्द जा ढाँप असमान कूँ
धुवाँ साँप हो निगल्या भान कूँ

सो दरियाये कुलुज़ुम कूँ हैबत छुटी
ज़मीं के तले गाय अड़ड़ा उठी

बड़ा रंग पड़्या सख़्त रगड़ा हुआ
कहें नईं सो नादिर यू झगड़ा हुआ

हो देवाँ के हाताँ के बरहम तमाम
गया औंट दरियाय कुलुज़ुम तमाम

फ़तह पाय शहबाल के लोग सब
किये चूर शमशीर सूँ ठोंक सब

---

१ धड़ पर से २ भागना ३ मगरमच्छ ४ मुसीबत।

चढ़े पीठ हौर जा खदेड़े वहीं
सो हल्क़ा[1] हो चौंधीर बेड़े[2] वहीं

जो क़ुदरत के बल सो अधिक फ़तह पाये
पकड़ शाहे क़ुलज़ुम कूँ दरहाल ल्याये

नज़र उसपे शहबाल की ज्यूँ पड़ी
सो अरवाह[3] उस राज की ज्यूँ उड़ी

बुलाकर नज़िक उस उठ्या बोल यों
कि "ऐ बेकटर नाजवाँ मर्द क्यों

तू उस जान कूँ मार ज़ाये किया
सो देक-देक जीव उसका क्यों कर लिया

कि अवतार था जग में वो नेक नाम
बफ़ादार अथा आदमियाँ में तमाम

तुजे छोड़ हरगिज़ न देसूँ अताल
करूँगा मिला धूल में पायमाल

कि सँपड़या है[4] तूँ आज मुज हात में
तूँ सच्च बोल झूटा न हो बात में

उसे क्या किया मार कर काँ सट्या
एकाएक गुसा उसपे तुज क्यों छुट्या

रंजान्याँ अज़ाबाँ देक इस घात सों
दिखाया तूँ किस धात के घात सों

जो मुंजकूँ याद आता अहे
तो सीना मेरा फाट जाता अहे

गले पड़ लग्या यूँ मुसल्लम दुम्बाल
सो वो राज है त्यूँ कहा खोल हाल

---

१ चारों ओर से घेरा डालना २ पकड़ लिए ३ रूह का बहुवचन, प्राण ४ हाथ में पड़ा है।

कि "वो जान तेरा जो मीता अहे
मुवा नईं कि अजनूँ वो जीता अहे

इसी के बदल में मँगाया अथा
जो भाई को मेरे वो मार्‌या अथा

गुसा था सो बन्द[1] में; रख्या मैं न मार
सलामत सूँ है वो जतन एक ठार

जो तुजते रज़ा टुक अगर पाऊँ मैं
तो ल्या उसकूँ दरहाल दिखलाऊँ मैं

वले तुज शह कूँ रवा[2] यूँ न था
एक आदम के तईं मुज दुखाना न था

मेरे सब परी हौर देवाँ कूँ मार
किया नेस्त-नाबूद वई एक बार

हटीला[3] हो मेरे उपर हट पकड़
किया शहर हौर मुल्क मेरा उजड़"

जो यू बात खातिर में आया उसे
गले उज्र-ख़ाही सों लाया उसे

कहा यूँ "कज़ा आ घिर्‌या नागहाँ[4]
नहीं मारने दम सकत किस यहाँ

उबल कर गया दो तरफ़ ते उबाल
न कर फ़िक्र दिल तूँ हरगिज़ अताल

बुला भेज उस मेरे मन-मीत कूँ
मुहब्बत सों कर ताज़ा फिर रीत कूँ

जो तूँ हौर हमें सर ते फिर शाद होयँ
अज़ीज़ी में भायाँ केरे नाद होयँ

---

१ क़ैद में २ उचित ३ हठीला ४ अकस्मात्।

एकाएक खुले बख़्त के ज्यूँ किवाड़
सो ल्याए उसे बन्द मियाने ते काड़

देख्या ज्यूँ वो दीदार शहबाल का
खिल्या सरते वईं फूल ज्यूँ डाल का

पड़्या आयके शाह के चरन पर
कह्या यूँ कि ऐ खुसरवे बहरोबर[१]

बड़े बख़्त मेरे देख्या आज तुज
फुगी[२] बाजुआँ लग ख़ुशी आज मुज

गया सब मेरा ग़म तेरे धीर थे
कि जीव दे बचाय मुजे सीर थे

जो एखलास[३] मेरा दीस्या तुज कूँ खास
किया ख़ुश मुजे बन्द में ते खलास''

हुआ ज़ौक़ इसी बात ते उस ज़ियाद
सो पाया उसे फ़रज़न्द के नाद[४]

उचा लेके छाती कूँ लाया वहीं
कि अवतार कुच है कि पाया वहीं

फ़ज़ीलत में अज़मा के देखन लग्या
जो कुच पूछिया सो वो बोलन लग्या

हर एक बात पर उसकी हैराँ हुआ
खिला सिर ते ताज़ा गुलिस्ताँ हुआ

किते लक ख़ुश्याँ दिल मने आन कर
कितेक दीस उस शाह कूँ बहु मान कर

दे उसका मुल्क उस रवाना किया
अपें आपना मुल्क जाना किया

---

१ समुद्र और पृथ्वी २ फूलना, ख़ुशी से फूलना, अत्यधिक प्रसन्न होना ३ (फ़ारसी) मुहब्बत ४ लड़के की तरह।

उठ्या फ़तह के ज्यूँ दमामे कूँ ठोंक
हुए शाद तिरलोक म्याने के लोक

फ़लक रख़्श[1] हो रान तल आइया
ज़माना ले ग़ाशा[2] अंगे धाइया[3]

चल्या आपने शहर में नेट सों
ले सैफुल मुलुक लाल कूँ पेट सों

बलन्द अर्श लग यू अवाज़ा हुआ
ज़मीं आसमाँ सिर ते ताज़ा हुआ

ख़लक़ सब गुलिस्ताँ एरम का तमाम
हो ख़ुशहाल पाया अनन्द ख़ास वो आम

बदीउल जमाल आपने मन मनें
खिली ज्यूँ कली फूल की बन मनें

उतम शहर बानू गुनी हक़ गुज़ार
रुमा-रूम[4] पाई ख़ुशी बेशुमार

कती लक वज़ा ज़ौक़ के हाल सूँ
दुआ अपने फ़रज़न्द शहबाल कूँ

कही यूँ कि "ऐ शाहे आफ़ाक़गीर[5]
फ़िदा हर घड़ी तुजपे मेरा सरीर

जो कँवली सहेली बदीउल जमाल
है पुतली तेरे नैन की जग उजाल"

किते धात सूँ बेनिहायत सराई
सों वई ख़ास्तगारी की बाताँ चलाई

---

१ (फ़ारसी) घोड़ा २ क़ालीन ३ फ़लक......अंगे धाइया—आसमान घोड़ा बन कर उसकी रान के नीचे आ गया और ज़माना उसके सामने क़ालीन बिछाने लगा। यह विश्वास है कि मनुष्य का भाग्य आसमान की गर्दिश के अनुसार बनता है। भाग्य शहबाल के अधिकार में था और ज़माना उसके साथ था—यह तात्पर्य है ४ रोवाँ-रोवाँ ५ आलमगीर।

कही "ऐ तजल्ली मेरे नैन के
कि आराम मुज जीव माँ वैन के

जो बेटी है तेरी बदीउल जमाल
सो सैफुल मुलूक सूँ मिला तूँ अताल

वो सैफुल-मुलूक जान रौशन ज़मीर
समद ज्ञान का आशिके बेनज़ीर

वो एकस कूँ एक दोनों आशिक़ हैं पाक
सो बातिन[1] में हैं इश्क़ सों चाक-चाक

उनों दोनों एक होवना साज है
दुनियाँ दीन[2] में यू बड़ा काज है"

सो शहबाल माँ ते सुन्या यू जो बात
कुबुल्या वहीं लाक खुशियाँ सँगात

१ (अरबी) दिल से २ लोक और परलोक।

बदीउलजमाल से शादी

मदद फ़ैज़ ज्यूँ आसमानी हुआ
ज़मीं हौर ज़माना नूरानी हुआ

सआदत के ताज़ी मिले[1] एक ठार
सो परगट ज़ौक़ केरा बहार

खुशी के खिले फूल फाँटे तमाम
किये शुक्र जीबाँ हो काँटे तमाम

मलक[2] फ़ाल देख[3] अर्श पर गुल उचाये
फ़रह पा वहीं मेज़बानी गिनाये

खबर यू तुरत जग में जाने लग्या
ज़मीं का निकल गंज आने लग्या

खबर पाये दरिया के मोती तमाम
रतन खान म्याने के ज्योती तमाम

तरी हौर खुशकी ते पड़ भार सब
सो शहबाल के आये दरबार सब

हर एक चर्ख तल सर्फ़ होने लगे
तजल्याँ में घल-घल पिरोने लगे

नगर सब गुलिस्ताँ एरम का तमाम
हुआ साफ़ ज्यूँ जाम जम का तमाम

परे हौर पर्‍याँ जग के सारे मिले
भराये मजालिस बिले दर बिले[4]

पर्‍याँ बुलबुल्याँ कास मा साज़ सों
लग्याँ नाचने मिल के यूँ नाज़ सों

---

१ भाग्य के घोड़े मिले, अच्छा समय आया २ फ़रिश्ते ३ आगे की अच्छी हालत देखना
४ प्रत्येक मकान में।

पंखे पंख़ जड़त के सदर जगमगाट
लग्या होवने चौकदन तमतमा?

पर्‌याँ बेबदल थ्याँ सो धायाँ तमाम
जवाहिर के कास[1] भायाँ तमाम

दहन[2] तंग तर माँग बारीकतर
शवेक़द्र[3] ते बाज़ तारीक़ तर[4]

हुई मस्त मजलिस ख़ुश आवाज़ सों
दिवानी कियाँ पातराँ नाज़[5] सों

डुमुक्न्याँ मिल्याँ डोमिन्याँ लोलियाँ
शकर शहद शीरीं ते मिट बोलियाँ

एकस एक ते एक तरुन्याँ अहें
सो करतार क्याँ मोर हिरन्याँ अहें

सो पुरपेच ज़ुल्फाँ कूँ देक गाल पर
कुंडल घाल बैठा भुजंग माल पर[6]

पड़े बाल काले सो जाँ-ताँ तले
सो ज्यूँ नाग लिड़ते हैं पावाँ त?

न जानूँ कहाँ कोड़ मंतर सिक्याँ
पद्‌म पावँ नाकस के जंतर सिक्याँ[7]

लग्याँ नाचने तईं जो सद्‌रे सद्‌र[8]
तिरकने[9] लग्याँ ख़ुश जिधर का उधर

---

१ ढेर २ (फ़ारसी) मुँह ३ रमजान की सत्ताईसवीं रात, जो बहुत ही अंधेरी होती है
४ दहन तंग......बारीक़ तर—रमजान की सत्ताईसवीं रात जितनी काली होती है, उससे भी अधिक, उन परियों के बाल काले थे। उनके मुँह छोटे और माँग बहुत बारीक थी
५ बहुत ही अधिक नज़ाकत ६ सो पुरपेच......माल पर—उनके गालों पर ज़ुल्फ़ ऐसे लटके हुए थे, जैसे खज़ाने पर साँप कुण्डल मार कर बैठा हो ७ पदम पाँव......सिक्याँ—उनके कमल के समान सुन्दर पैर, दूसरों को बेसुध करनेवाले जंतर के समान हैं
८ जगह जगह ९ थिरकना।

जो गत ले उठे मंडले फिर तमाम
सटे होश जागे पोते घर तमाम

मंदिल[१] काड़ मंदिल बजाने लगे
कित्याँ गिर पड़ क्याँ सो गाने लगे

जन्तर काड़ सोज़ाँ उचाये हलूँ
सों मजलिस कूँ मस्ती में ल्याये हलूँ

जो खोलन लगे नग़में हर ठार तें
हल्याँ सुन चतुर पुतल्याँ ठार तें

कित्याँ जो अथें तान पर तान क्याँ
रहें डाल पंख सूर असमान क्याँ[२]

सज़ावार शाही कूँ यू साज़वार
हुनरमन्द जो सारे हौर राज़दार

देक उस बज़्म खुश सुहावा वो नूर
लगे भेजने मरहबा चाँद सूर

जो मजलिस कूँ खाना खिलाने पे आये
सफ़ा खुश कँदोर्याँ[३] सो ल्या ल्या बिछाये

कँदोर्याँ शहाने सो लग जिन्स क्याँ
रंगा-रंग शीरिन्याँ[४] हर एक जिन्स क्याँ

रखे शीरिन्याँ लाय कर ठार-ठार
गगन ऊँचे रासाँ[५] व कई उस शुमार

जो फूल नीर सूँ हात सबके धुलाये
कँदोरे खिलाने ले जा बैसलाये

---

१ मंजीर; बाजा विशेष, दूसरा मंदिल, मन्द गति, इस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है २ सो रहें डाल......क्याँ—उनके पंख सूरज की तरह चमकीले थे ३ दस्तर खान ४ मिठाइयाँ ५ राशि, ढेर।

रंगारंग लक जिन्स क्याँ न्यामताँ
जो हर एक न्यामत में कई लज्जताँ

सो असमान बादल कूँ संगात ले
चन्द्र सूर के जाम दो हात ले

कमर बाँद ख़ुश हो अपें आबदार
नज़र सारी मजलिस पर रख ठार ठार

जल अमृत ल्या-ल्या पिलाने लग्या
पिला प्यास भर-भर चलाने लग्या[1]

ख़लायक़[2] विले दर विले ख़ास वो आम
कंदोरी ते फ़ारिग़ हुए ख़ुश तमाम

जड़त के तबक़ हर एक असमान थे
भर उस म्याने तगटे पट्याँ पान थे

अंबर हौर ख़ुशबू कदम फूल माल
फिराने लगे जान साहब जमाल

जहाँ लग अथ्याँ जग में फुल बाड़ियाँ
जहाँ लग जो गंभीर पनवाड़ियाँ[3]

सो यूँ खर्च तल शह के आये वहीं
जो एक पान हौर फूल उबरया नहीं

मुनौवर[4] किये अंजुमन कूँ तमाम
ज़बरजद[5] के शीशे ज़मरूद के जाम

मदन मस्त साक़ी छबीली जवाँ
अदिक छन्द भरी ख़ुश रँगीली जवाँ

---

१ सो आसमान ... ... लग्या—आसमान पानी पिलानेवाले के रूप में सूरज और चंद्रमा के दो प्याले हाथ में ले कर, अमृत का पानी सबको पिलाने लगा २ लोग ३ पान पैदा होने की जगह ४ रौशन किये ५ जमरूद एक बेश क़ीमती पत्थर ।

मदन मद पियाले भरा साज़ सों
खड़े आके मजलिस मनें नाज़ सों

फिराने लगे दौर पर दौर ख़ुश
किये सारी मजलिस केरा तौर ख़ुश

अजब वो रंगी मद असर दार था
मता बास ते उसके संसार था

नुकुल[1] नाज़ का ल्या चकाने लगे
सो एक घर ते सबकूँ रिझाने लगे

फियाले जवाहिर के फिरने लगे
मती होके जानाँ सो गिरने लगे

सो पड़ते थे जाँ मद के बुन्द टूट कर
ज़मीं नाचती थी वहाँ ऊठ कर

हुए थे मती कोई न थे हुशियार
जो कोई पीवे वो क्यों रह हुशियार

किये बख़्श सारयाँ कूँ एक धीर ते
हुए शाद सब इस जहाँगीर ते

इलाही जो माशूक़ आशिक़ उपर
करम कर मिलाता है एक तिल भितर

१ शराब के साथ खाई जानेवाली चीज़ें।

जलवा[1]

तजल्ली सों जलवे की ज्यों रात आई
सो वई ग़ैब ते फ़ैज़[2] लक धात पाई

जो शबक़द्र कूँ भी न था फ़ैज़ इता
सरा ना सकूँ मैं सराऊँ जिता

मुरादाँ जो धरते थे जग दिल मने
सो पाए उसी रात एक तिल मने

नज़र हुई इनायत की सुब्हान ते
उतरने लगी रहमत असमान ते

निछल रूप क्याँ चुलबुल्याँ शह परयाँ
उतम ज़ात उतम ज्ञान क्याँ गुन भरयाँ

बदीउलजमाल अचपली[3] नार कूँ
डुबायाँ ज़रीने में झलकार सूँ

जो जलवा दिलाने होयाँ मुस्तइद
महल जलवे कारन कियाँ मुस्तइद

जवाहिर के मँड़वे सों छाया तमाम
मुरस्सा[4] के परदे वँदायाँ तमाम

हर एक महल सूफ़याँ मने रंग-रंग
जड़त के रखे ल्याके छपर पलंग

मिल्याँ ख़ुश हो मायाँ वो बायाँ तमाम
शौ[5] आरूस[6] के पास आयाँ तमाम

दुनियाँ उस घड़ी जाँ हुए सीर तें
खुले बख़्त गोत्याँ[7] के एक धीर ते

---

१ शादी के समय का एक विशेष रस्म, जिसमें दूल्हा और दूल्हन एक दूसरे को देखते हैं २ फ़ायदा हासिल करना ३ चुलबुली ४ हीरे जवाहिरात जड़ा हुआ ५ (फ़ारसी) दूल्हा ६ (उरूस, अरबी) दूल्हन ७ (गोत, का बहुवचन) संबधी और परिवार के लोग।

उतम डोमन्याँ मिल पलाने लग्याँ[1]
सोहेले शहाने सों गाने लग्याँ

नवल जान सैफुल-मुलूक बख़्तवर
उमस सात आ बैठिया तख़्त पर

बनी हौर बने[2] लोक पलाने लगे
शौ-आरूस के तईं सराने लगे

सआदत के साअत हुवैदा हुआ
सो क़ाज़ी मसीहा हो पैदा हुआ[3]

लिया शौ केरा हात अपन हात में
ख़ुशी सों पढ़्या अक़्द[4] इस सात में

दुआ सर किया ज्यूँ ख़ुश आईन सूँ
मलायक किये ख़त्म आमीन सूँ

मिले शह के चौंधीर सब गोतियाँ
लगे वारने शौ उपर मोतियाँ

चले जल्वे के महल में शौ को ले
किवाड़ाँ सो इक़बाल केरे खुले

खड़ी मुश्तरी[5] नाज़ का साज़ कर
सुरज जगमगाता सो असमान पर

मुशाता[6] हो ज़ोहरा[7] उतर आई वेग
चमक नूर का ल्याके झमकाई वेग

निछल नूर का ल्याके परदा बँदाये
शौ-आरूस दोनों को ल्या बैसलाये

---

१ गाने लगीं २ दूल्हा और दूल्हन ३ सआदत......पैदा हुआ—निकाह पढ़ने वाला क़ाज़ी अच्छे समय पर मानों मसीहा के रूप में आया, जिसने सैफुल मुलूक और बदीउल जमाल को जिन्दगी दी। मसीहा के सम्बन्ध में प्रसिद्ध है कि वे मुर्दों को जिलाया करते थे। ४ (अरबी) निकाह पढ़ना ५ एक तारा विशेष ६ दुलहिन को सँवारने वाली औरत ७ एक तारा विशेष, जो बड़ा चमकीला होता है।

जो परदे में ते हात हिलने लगे
सो लक धात फूलाँ उछलने लगे

मगर ग़ैब ते जुगने दो नूर के
मिल उड़ते अथे खोल पंख सूर के

दे जलवा मुशाता जो निर्वाल[1] हुई
सो भोगी नवल शह की-वाँ चाल हुई

नबी पर हज़ाराँ दुरूद[2] भेज वई[3]
चल्या ले के आरूस कूँ सेज वई

देख्या नूर का उस निछल नूर ते
ज़ियादा अथे नूर के पूर ते

जो जलवे ते फ़ारिग़ हुई खल्क सब
चला शौ ले आरूस कूँ सेज तब

देख्या मुख ज्यूँ शौ ने आरूस का
खिल्या सिर ते ज्यूँ फूल फ़िरदौस[4] का

चड़ी खूब महबूब देक हात में
रिझाने लग्या बात कर बात में

सट्या हात ज्यूँ उसपे तन्नाज़ सूँ
लगी शर्म कर लाजने नाज़ सूँ

सो छाती कूँ छाती लगा हाल सात
हुआ लटपट उस नूर की डाल सात

रल्याँ में निपट छन्द सों लाइया
जो बन हुव्वये नूर दो पाइया

---

१ अलग होना २ एक अरबी का वाक्य विशेष, जिसमें पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद पर रहमत होने की दुआ की गई है ३ नबी पर......भेज वई—हज़रत मुहम्मद पर रहमत होने के लिए हज़ारों बार 'दुरूद' पढ़ कर ४ जन्नत ।

झटापट लगी होवने दूइ में
डुबे सीस ते पग तलक खूइ[1] में

इधर मद पिलाकर किया मस्त उसे
हुई मस्त देक वई किया दस्त उसे

जकाजोक मोती पड़्या देक धात
बिन्द्या खुश उसी वक्त अलमाश सात

निछल खूब याकूत के बेशुमार
यू उस ढाल मोती ते निकल्या बहार

जो अलमाश था सो रह्या लाल हो
लग्या ढलने वो लाल तव ढाल हो

कि ज़ाहिर हुआ लाल की बेल यूँ
मिल्याँ सब सहेल्याँ हुयाँ खुश ज्यूँ

ज़ियादा खुशी हुई यूँ माई कूँ
अदिक भी खुशी हुई उस भाई कूँ

फिर आकर गिनाये खुशी, सीर ते
किये ख़िल्लअताँ सब कूँ एक धीर ते

हुए ख़ल्क ताज़े सो ज्यूँ नौबहार
कि फूल हौर पाताँ कूँ आया है बार

कि ना हौर परी शहर के सब बुलाय
हर एक जिन्स के न्यामताँ सब खिलाय

कि शौ ने खुशी सिर ते ताज़ी किया
कि उस बार सूँ फिर के बाज़ी किया

लग्या बास नाज़ुक जो उस फूल का
खिल्या रंग उस खूब मक़बूल का

---

१ पसीना।

हलूँ भी उतरने लगी नाज़ में
सों छन्द-बन्द करने लगी न्याज़ में

रिझाने लगी शौ कूँ ख़ुश नैन खोल
फुलाने लगी यों मिठे बोल बोल

कभी शौ को कर मस्त हमशान हो
कभी गोद में लेट अनजान हो

कभी लग सीने शह नवल जान के
अधर सों अँपड़ दे बीड्याँ पान के

कभी शह गले हात कंठमाल भाय
कभी शौक़ सूँ गुदगुल्याँ कर हँसाय

कभी भोग-संग्राम ख़ुश हाल होय
सो क़ुरबाँ कधीं शह के उपराल होय

दोनों में कुबल इश्क बाज़ी लगी
वो बाज़ी मिठी हक़ के ताज़ी लगी

हुआ जग में मशहूर हर ठावँ यू
बसे लग दुन्याँ में रह्या नावँ यू

शगुफ्ता हो शहबाल शह नेक नाम
उमस पा खुलाया ख़ज़ाने तमाम

भबायाँ धगाँ जग के सुद जाय त्यूँ
लग्या बाँटने माल मन भाये त्यूँ

किसे नौरतन होर किसे मोतियाँ
किसे हतकड़क होर पदक जोतियाँ

किसी कूँ जड़त के उतम कण्ठ माल
किसी कूँ जड़त की पटी जग उजाल

किसे ज़ात तेज़ी, किसे मस्त हस्त
किसे ख़ूब तोहफ़े, किसे ख़ूब बस्त

किया दान बेमिस्ल एक धीर ते
किया खिलअताँ सबकूँ यूँ सीर ते

कि मेहमान सबकूँ किया सरफ़राज़
किया खुश किते लक वज़ाँ सो नवाज़[१]

रज़ा ले जो मेहमान दाराँ चले
दुआ शाह कूँ कर हज़ाराँ चले

इता कूच शह ते सकल दान पाय
जो घर हैर इमारत सों नेकी उचाय

डुबी थी सोने में ज़मीं जाँ-तहाँ
कि ऐसा सखी बे-बदल है कहाँ

सिंगार उस फुकी बज़्म कूँ देनहार
देवे ज़िनत इस धात सूँ ठार-ठार

जो गंभीर शहबाल दाना नरीक[२]
कितेक दिन शौ आरूस कूँ रख नज़ीक

मँग्या भेजने उसके माँ-बाप पास
दिया खूब बस्ताँ,[३] जो थे अपने पास

चन्द्र सूर से दुरजकाँ[४] कई हज़ार
जवाहिर भरे सन्दूका बेशुमार

कितेक जिन्स के खूब बाँदी गुलाम
कितेक पातुराँ जिल्द[५] नादिर तमाम

मुकल्लल जड़त की अँमारी गँभीर
कराया तुरुत मुस्तइद बेनज़ीर

दुआ पर दुआ कर गले लाय कर
शौ आरूस कूँ उसमें बसलाय कर

---

१ देना २ लाजवाब ३ वस्तु, चीजें ४ जवाहिर ५ बहुत कोमल शरीर रखने वाले।

तजम्मुल[1] सती खुसरवी रीत के[2]
चड़ा पीट उपराल इफरीद के

बड़े गुलगुले सूँ खाना किया
अजब काम जग में यू दाना किया

नज़र में दिस्या सारे आलम कूँ यूँ
सुलेमान[3] शौ; आरूस बिलक़ीस ज्यूँ

जो अँपड़े सरांदील के राज पास
महाराज गंभीर सरताज पास

सो आ सामने खुसरवी दाब सूँ
मिल्या ज्यूँ कि अफ़ताब महताब सूँ

बड़ी शान सों लाइया शहर में
हुआ आशकारा[4] यूँ चौंधीर में

मिला शाहज़ादी सूँ आ भाई वो
देखत भाई कूँ खुश गले लाई वो

हरम में क़बीले कूँ शह के तमाम
सो कह भेजिया बन्दगी हौर सलाम

नेके यार साअद वफ़ादार सों
मिल्या खुश सिने लाइया प्यार सों

खुश एक घर ते सारयाँ कूँ शादी हुई
वो शादी बड़ी कैकुबादी[5] हुई

कितेक दिन वहाँ मांदगी दूर कर
सिना ज़ौक़ लई समद सो पूर कर

समज खूब साअद दुखियारे के घात
चलाया हलूँ खास्तगारी की बात[6]

१ (अरबी) शान, शौकत २ बादशाही ढंग के ३ इस्लाम के पैगम्बर, उनकी धर्म पत्नी का नाम बिलकीस था ४ प्रकट होना ५ बरकत देनेवाली ६ शादी की बात चलाना ।

सो वो जगपती राजा राज़ी हुआ
जो कुच दग़दग़ा था सो माज़ी हुआ[1]

समज फ़ाल ज्यूँ ग़ैर के काम सूँ
पड़या खूब साअद के आ नाम सूँ

किया खुश हो शह मेज़बानी शुरू
बधावा बड़ा खुसखानी शुरू

जो धम-धम दमामे बजाने लगे
ग़माँ सब निकल भार जाने लगे

नफ़ीर्याँ की आवाज़ सुन ठार-ठार
निकल दौलताँ ग़ैब ते आये भार

सदर पर सदर[2] शाह के बख़्त ते
उतर आये असमान के तख़्त ते

जो ज़ोहरा भी हौर मुश्तरी[3] गान हार
किये गर्म मजलिस कूँ आ ठार-ठार

जो जाँ लग गलावन्त थे वाँ भरे
तमाम आपने तायफ़ाँ[4] सों खड़े

उचाने लगे इस वज़ा तमतमाट
जो तिरलोक का वाँ भरया आके हाट

झनकने लगी ज़ाफ़रानी सुरा[5]
खरा ज़ाफ़राँ हौर सन्दूर आ

मलक खुश चन्द्र के वो गुलदान ते
लगे मैलने फूल असमान ते[6]

जो फ़िरदौस का बाव अत्तार था
महलाँ में शह के गमनहार था

---

१ सभी शक दूर हो गए २ बड़े-बड़े ३ संगीत की देवियाँ ४ गानेवालों का गिरोह ५ शराब
६ मलक......असमान ते—फ़रिश्ते चाँद के गुलदस्ते से फूल बरसाने लगे।

भरया बास ख़ुशबूई का ठार-ठार
सरांदील सारा हुआ नौबहार

सो ख़ुश हो ज़माना जो साअद हुआ
सराफ़राज़ उस शहते साअद हुआ

घड़ी देक ख़ुशी का समाया वहीं
कज़ा[1] दौड़ काज़ी हो आया वहीं

सआदत की साअत में खुशहाल यूँ
पड़या फूल का अ़क़्द[2] उस डाल सूँ

मिले ज्यूँ वो शाहज़ादी हौर यू जवान
हुआ शाद सैफुल-मुलूक का प्रान

निहायत कूँ अँपड़े देक उनका जवाँ
कितेक दिन दोनों भाई कूँ राज वाँ

समेट माल धन वाँ ते ले बेहिसाब
चले मिस्र के मुल्क कूँ फिर शिताब

जो आसिम नवल शह दुःखी झूक-झूक
हुआ था जो काड़ी नमन सूक-सूक

एकाएक ख़ुशी हौर आनन्द की
सुन्याँ ज्यूँ ख़बर अपने फ़रज़न्द की

फुग्या हौर आया रगे रग प्रान
बुढा ढोंग था सो हुवा फिर जवान

वहीं ग़म के हुजरे ते निकल्या बहार
ले अरकाने दौलत[3] कूँ सब एक बार

गया सामने हौर मिल्या पूत कूँ
गले ला किया पूत कूँ गुल तिसूँ

---

१. हुक्म २ (अरबी) निकाह ३ राज्य के बड़े-बड़े आफ़िसर ।

खुश्याँ सों बुला शहर में लाइया
दे बहमान ईमान कर पाइया

दिया आपनी बादशाही उसे
सलामाँ किये सब सिपाही उसे

लग्या करने सैफुल-मुलूक राज खुश
हुए अर्श कुर्सी वा मेराज खुश

खुदा उसके मन की दिया ज्यूँ मुराद
देवे हर तलबगार का वों मुराद

कहाँ आसमाँ हौर कहाँ धरतरी
कहाँ आदमी हौर कहाँ शहपरी

कहाँ लाल सैफुल-मुलूक जग उजाल
कहाँ मोहिनी धन बदीउलजमाल

कहाँ जान साअद किते बेनज़ीर
कहाँ वो उतम शाहज़ादी गंभीर

खुदा यूँ मिलाने जो आता अहे
सो इस धात सों ला मिलाता आहे

लिख इस धात सों दास्ताँ बेनज़ीर
रिसाला लताफ़त भरया दिलपज़ीर[1]

जो लिखने न सक दो रसन[2] का कलम
सो मादाँ हो पड़ता अथा दम बदम

निम्हाँ दिल के अख्याँ सों देखें मने
तो हर एक बैत इस सफ़ीने मने

जगाजोत महबूब है क़बदार
मेरे फिक्र परदे थें निकली बहार

१ दो रसना, जिह्वा रखनेवाला, क़लम ।

देवे यूँ जो जलवा उरूसी[1] मनें
जो सिद तारे अंबर के जोती मने

मलायक सो बालाये चर्खेबरीं
कहें इस सफ़ाने कूँ देक आफ़रीं

रतन पारके बेबदल मुश्तरी[2]
मेरे जौहराँ का हुआ मुश्तरी

कि मेरे चतुर शह नवल लाल थें
बलन्द उसके गम्भीर इक़बाल थें

न कईं ऐसे जौहर हैं झलकार के
न किस खान में होयँ संसार के

कि निकले हैं नादिर हो जौहर मेरे
जिता मोल उसका सराऊ, सरे

दिखे यू जवाहिर जगाजोत ज्यूँ
सितारे फुगी हो रहे बहुत ज्यूँ

हर एकस कूँ है कुर्ब[3] धन माल का
मुजे कुर्ब इस जौहराँ लाल का

कि चोराँ ते उस माल कूँ है दग़ा
वले इस जवाहिर कूँ नईं दग़ादग़ा

कि हाली[4] वो खर्चे तो ख़ाली होवे
वले यू कधीं कूँ न ख़ाली होवे

जो सुल्तान अब्दुल्ला इन्साफ़ कर
मेरे जौहराँ पोते दिल साफ़ कर

देवे दाद मेरा बहुत मान पाऊँ
उमस दूर थे ता गिरेबान पाऊँ

---

१ दुलहन २ ख़रीददार ३ क़रीब होना, मुहब्बत होना ४ तुरन्त ।

कि यू शाह मेरा खरीदार होय
तो ताज़ा मेरा तबये गुलज़ार होय

कि ग़मगीं हूँ मैं सख़्त संसार ते
धरूँ दग़दग़े लाक इस आज़ार ते

परेशानगी में जम्याँ ख़्याल मैं
ले आया हूँ एसे रतन ढाल मैं

जो भोगी नवल शाह सेती फ़रह पाऊँ
सो इस थे रतन खास ढूँढ़-ढूँढ़ ल्याऊँ

अगरचे हूँ शह के बन्द्याँ मैं हक़ीर
वले शेर के फ़न में हूँ बेनज़ीर

कि मुँह खोल यूँ मैं कहूँ क्या अपें
गवाही देवें शेर अपें ना छुपें

बहरहाल यू नज़्म इलहाम सूँ
किया मैं नवल शाह के नाम सूँ

बरस एक हज़ार पंज तीस में[1]
किया खत्म यू नज़्म दिन्न तीस में

जो आरिफ़ हुजूदाँ नज़ाकत शिनास
सफ़ा उस थे हासिल करें बेक़यास

पढ़्याँ कूँ तो सब आवे यू काम कूँ
देवे ज़ौक़ अदिक खास हौर आम कूँ

लिखन हारा यू लाब पर लाब पाय
सदा सुर्खुरूई केरा आब पाय

१ बरबस एक... ...पंजतीस में—दस सौ पैंतीस में।

मुबारक अछो शाह कूँ यू मुदाम
बहक्के मुहम्मद अलैहिस्सलाम

मुबारक घड़ी में किया मैं तमाम
मुहब्बत नबी पर हज़ाराँ सलाम



शब्द-सूची

अ

अक़ताब=एक विशेष प्रकार के सन्त
अक़लीन=देश
अक़ारिब=क़रीब के लोग, दोस्त-मित्र
अक़्द में लाना=शादी करना
अंगुश्तरी=अँगूठी
अंगोटी=अँगूठी
अछ=रहो
अज़ल=शुरू से
अजायब लगना=अजीब लगना, आश्चर्य होना
अज़ाबाँ=तक़लीफ़
अंजुम सिपाह=जिसके सिपाहियों की संख्या तारों के समान अगणित हो
अरजुमन्द=लायक़
अज़्म=अभिलषित
अंट लेना=छीन लेना
अड़ड़ा के दौड़ना=ज़ोरों के साथ दौड़ना
अत=अति, बहुत
अद्ल=इन्साफ़
अन्द गन्द=नामो निशान
अपसता=अपने से
अँपड़ना=(मराठी) मिलना
अबाबक़=इस्लाम के पहले खलीफ़ा
अम्र करना=हुक्म देना
अम्मा=(फ़ारसी) लेकिन
अब्द=सृष्टि का अन्तिम दिन, क़यामत का दिन
अभरन=आभरण, आभूषण
अभालाँ=अभाल का बहुवचन, बादल
अरश=आठवाँ आसमान, ख़ुदा का स्थान
अरवाह=रूह का बहुवचन, प्राण
अलम=झंडा
अलग़ार=अचानक हमला करना
अलमाश=एक विशेष प्रकार का बेश-क़ीमती पत्थर
अलैकी देना=सलाम का जवाब देना
अवदशा=अपदशा, बुरी दशा
अवकल=अजीब
असहाब=साहब का बहुवचन
अहवल=(अरबी) जिस से एक ही चीज़ दो नज़र आती हो

आ

आक़िबत=नतीजा, परिणाम
आज़ार अँपड़ाना=मुसीबत में डालना
आतिश=आग
आतेबराँ=आते समय
आफ़रीं=दुनिया को पैदा करनेवाला
आरिफ़=समझदार
आशकार होना=प्रकट होना
आस=आशा
आस्ता=ठिकाना
आँगे=आगे, सामने
आँझू=आँसू

इ

इतबार=इतवार
इफ़रीत=जिन्न, एक योनि विशेष
इरफ़ान=ज्ञान
इलहान=आवाज़
इशरत=आनन्द
इशारत करना=इशारा करना, बतलाना
इश्तियाक़ी=शौक़

उ

उचाना=उठाना

उमस पाना=उत्साहित होना
उलंगना=लाँघना, छलांग मारना
उस्तवार=मज़बूत

ए

एक घर=एक दम
एकस=एक
एक रुख़न=एक ही तरफ़

ऐ

ऐलाड़=इस तरफ़, नज़दीक

क

कज़ारा=संयोग वश
कज़ा होना=इत्तफ़ाक़ होना
कड़ज=अधिक
कलीम=मूसा पैग़म्बर का दूसरा नाम
कस्ब=प्राप्त किया हुआ
कबूदी=नीले रंग का
कब्क=चकोर
कदन=तरफ़
कना=कहना
कनीज़ा=सेविकाएँ
कन्दराहट करना=नफ़रत करना
करीमी=मेहरबानी
क़दीर=समर्थ, ख़ुदा
क़माश=एक बेश क़ीमती कपड़ा
क़वीदस्त=ताक़त वर
कंथा=कथा, आप बीती
कँदोरे बार करना=दस्तरखान तैयार करना
कँटाल=नफ़रत
कामरानी=कामयाबी
काल्वे=नहरें
किल्क=क़लम
किसवताँ=लिबास
कुतुब=एकविशेष प्रकार के सन्त
कुदूरत=तकलीफ़
कुबल=दुर्गम
कुदूरत=ग़म और ग़ुस्सा
कूत=ख़ुराक़
कूच=कुछ

ख

खण्ड्याँ=खण्डी (मराठी) का बहुवचन, कोड़ियाँ
खर्ग=खड्ग, तलवार
ख़ज़ीने=ख़ज़ाना
ख़राबा मने=ख़राब या निर्जन स्थान में
खातियान रुई=एक बहुत ही अच्छे क़िस्म की रुई
ख़ज़िल=(अरबी) शर्मिन्दा
खाँदा=कंधा
ख़ातिम=अंगूठी
ख़ाशाक=तिनका
ख़ारजाँ=अली के विरोधी
ख़ास्तगार=मँगनी, शादी के लिए लड़की माँगना
ख़िरदमन्द=(फ़ारसी) अक्लमन्द
ख़िलअत=बादशाह की ओर से इनाम में प्राप्त कपड़े
ख़िलवत=रंग महल
ख़िलवत के ठार=एकान्त स्थान
ख़ीश=अपना
ख़ुशरव=बादशाह
ख़ुशमान=अच्छा मान, अच्छी इज़्ज़त
ख़ुशाहंग=ख़ूब सूरत
खुसाट=खूसट

ग

गगन=आसमान
गड़ाँ=गढ़ाँ, क़िले
गड़वा=टूँटीदार लोटा
गत=गति, दशा

ग़नी=जिसे किसी चीज़ की आवश्यकता न हो, ख़ुदा
गमना=गुज़रना, बीतना, जाना
गवी=शेर की माँद
ग़व्वास=ग़ोताख़ोर, कवि का नाम
गाल=गला कर
ग़ायत=गणना, हिसाब
गिरहबान=ऊपर के वस्त्र में सीने पर का वह हिस्सा, जिसमें बटन लगती है। 'गिरह' शब्द फ़ारसी के 'ग्रे' शब्द का अपभ्रंश है, जो संस्कृत के 'ग्रीवा' शब्द से मिलता है और उसी अर्थ में है
गुल गुला=शान, शौक़त
गुलिस्ताने एरम=जन्नत का बाग़ीचा। यहाँ किसी विशेष स्थान के लिए प्रयुक्त हुआ है
गुलरेज़ होना=फूल झड़ना
गुरबत=मुसाफ़िरी
गैब के गंज=छिपे हुए खजाने
ग़ौग़ा=शोर गुल
ग़ौस=एक विशेष प्रकार के सन्त

च

चमामें=जूते
चहल दिन=चालीस दिन
चंचल दहन=चंचलता को दूर करनेवाली
चौफीर=चौफेर; चारों तरफ़

ज

जका=जगा; जाग्रत कर
जम=हमेशा
जलालत=बुज़ुर्गी
जबत तल=ज़ाप्ते के नीचे; क़ानून या शासन के अन्दर
जफ़ा=मुसीबत
जहाँ जानियाँ=संसार के जीवन का स्वामी; ख़ुदा
ज़र्द=मार
ज़फ़र=जीत
ज़रीना=सोने का
ज़रबफ्त=ज़रीदार कपड़ा
ज़मीर=दिल
ज़ंगी-हब्शी
ज़ंगन=ज़ंगी (हब्शी) का स्त्रीलिंग
जिरो=दबाकर; यह शब्द फ़ारसी के ज़ेर करदन' धातु से बना है।
जिउडा=जीव; जान
जिन्स=वजह; कारण
ज़ियाफ़त उपर ज़ियाफ़त करना=अत्यधिक आतिथ्य करना
ज़िश्ताँ=(ज़िश्त का बहुवचन) बदसूरत
जुफ्त होना=मिलना
ज़ुल्मात=वह स्थान; जहाँ हमेशा अँधेरा रहता है।
ज़ुहल=ग्रह विशेष; शनिश्चर
ज़ोहल=एक मनहूस समझा जानेवाला सितारा
ज़ोहरा न होना=मजाल न होना
जौलान देना=घोड़े को एँड़ लगाना

झ

झूक झूक कर=परेशान हो होकर

ट

टाक आना=मुक़ाबिले में ठहरना

ड

डोंगराँ=क़िला; घाटी

त

तक़सीर=ग़ल्ती
तक़वा=ताक़त
तक़ी=परहेज़गार

तर्ख़=तड़कना; फटना
तग़य्यीर होना=बदलना
तगबगी=बेचैनी
तगटे=शाल दुशाले
तजल्ली=नूर; चमक
तदाँते=तदा ते; उस समय से
तफ़हुस=(अरबी) खोज
तबर=कुल्हाड़ी
तरावत=तरावट
तराट उठना=बज उठना
तशरीफ़=बादशाह की ओर से इनाम के रूप में प्राप्त लिबास
तलमल होना=घबराना
तवक्कल=(अरबी) भरोसा
तहय्यात=दुआ के शब्द
तहसील करना=प्राप्त करना
तालिबाँ=ढूँढ़नेवाले
तालेक़वी=बड़ी क़िस्मत
तिर्जग=त्रिजग; तीनों लोक
तुज=तुझ; तुम्हारे
तुन्द होना=(फ़ारसी) गुस्से में आना
तुनक तार होना=तार जैसा दुबला पतला होना
तूर=एक विशेष पहाड़; जिस पर ख़ुदा ने अपना नूर गिराया; जिसे देख 'मूसा' बेहोश हो गए

थ

थोबड़ा=जबड़ा

द

दन्दे=द्वन्द रखनेवाले; दुश्मन
दबीर=मुन्शी; लेखक
दम पकड़ना=सब्र करना
दरहम होना=गुस्से में आना, तितर-बितर होना
दरेग़े सूँ=रंज और ग़म से
दरियाए कुलज़ुम=लाल समुद्र
दर्मन=दवा
दाट=(मराठी) अत्यन्त अधिकता से
दाना पानी सटना=भूख-प्यास बन्द होना
दानिशवरी=अक्लमन्दी
दार=द्वार
दावरी=बादशाहत
दिपाना=दीप्त करना; प्रकाशित करना
दिलग़ीर=रंजीदा; दुखी
दिल को जमा रखना=मन को चैन से रखना
दिल को उताले के हात देना=उतावला होना; बेचैन होना
दिवाल पाया=एक योनि विशेष; जिनके हाथ पैर में हड्डियाँ नहीं होतीं ये ज़मीन पर सरकते या लुढ़कते हुए चलते हैं।
दीस=दिवस; दिन
दुंबाल=पीछे; साथ
दुराही=हुकूमत
दुरूनी में=भीतर ही भीतर
दुर्ज=रत्न रखने की डिबिया
देवतियाँ=दीवट
दोतारा=एक दो तारोंवाला बाजा विशेष
दोस्त दाराँ-साथी मित्र

ध

धरतरी=धरित्री; पृथ्वी
धाइया=दौड़ा
धावँ=धाम; घर
धुन्दना=ढूँढ़ना
धुलाराब=वंडर

न

नब्याँ=नबी का बहुवचन
नवल आसिम=मिश्र के बादशाह का नाम

नवल लाल=सुन्दर; यहाँ पर इमाम हुसेन के लिए प्रयुक्त है
न्हाटना=भागना
न्हासना=भागना
नामाँ=पत्र
निभ्काना=ग़ौर से देखना
निढाल होना=शक्तिहीन होना
निदा=नाद; शब्द
निहंगाँ=मगर; पानी का एक जानवर
नीश=नश्तर
नुकुल=शराब पीते समय खाने के लिए इस्तेमाल की जानेवाली चीज़ें
नुजुम्याँ=ज्योतिषी
नुसरत=खुदा की मेहबानी
नेकोकार=अच्छा काम करनेवाला
नेरवा नावँ=अच्छा नाम
नेट=दोस्त
नौ गढ़=इस्लाम के अनुसार आसमान के ६ खण्ड
नौबताँ=बारी बारी से

प

पछन्या=पहचाना
पड़ लंका=लंका से भी और आगे
पतियाना=भरोसा करना, विश्वास करना
पनज=पैदाइश में
पन्त=पन्थ, रास्ता
पया पै=लगातार
परधान=प्रधान
परा=परी का पुरुषवाची शब्द
पशेमान होना=परेशान होना
पागाह=अस्तबल
पाड़ना=(मराठी) निकालना
पारचा=कपड़ा
पिनान=पिन्हाय, पहना कर
पिन्हा=अप्रत्यक्ष
पेच के मारकाँ=मुसीबतों की लड़ाई
पोथे=पर से

फ

फ़गफ़ूर=चीन का बादशाह
फ़ज़ीलत=बुज़ुर्गी, महत्व
फ़रह बख़्श=खुशी देनेवाला
फ़रह के घराँ=ख़ुशी के घर, अत्यन्त ख़ुशी देनेवाले
फ़रंग्याँ=तलवार
फ़रंगदाज़=सिपाही
फ़रामोश करना-भूल जाना
फ़राख़=चौड़े
फ़रियाद रस=ख़ुदा
फ़साहत=शायरी
फ़ाड़=पहाड़
फ़ाल=जन्म पत्री
फामना=ज्ञात करना
फ़ितने के मूँदे किवाड़ खोलता=लड़ाई झगड़े के बन्द दरवाज़े खोलना, लड़ाई शुरू करना
फिरास्त=बुद्धिमान
फुरसत लेना=जाने की आज्ञा लेना
फ़ैज़=कृपा

ब

बख़्तवर=भाग्यवान
बजन्तर=विभिन्न प्रकार के बाजे
बजाँ=बादअज़ाँ (फ़ारसी); उसके बाद
बज़िद=कोशिश के साथ
बज़्म=सभा
बन्दा नवाज़=दक्षिण के एक बड़े फ़क़ीर; जिनकी समाधि गुलबर्गा में है
बन्दगी का खत देना=ग़ुलामी करना

बरश गाल=वर्षा काल
बर जमीं=ज़मीन पर
बरहम होना=क्रोध में आना
बलन्द धावँ=ऊँचा धाम; ऊँची जगह; मन की ऊँची स्थिति
बशर=आदमी
बस्त=वस्तु; चीज़
बहरोबर=समुद्र व पृथ्वी
बहुराना=लौटाना
बाँ=बाण; तीर
बाग=बाघ; शेर
बाग के वर्ग का=बाघ के वर्ग का; शेर की तरह बहादुर
बाट सारू होना=रास्ता तय करना
बादपा=तेज़ घोड़ा
बाँदर के धात=बन्दरों की तरह
बदिये=मशक; चमड़े का थैला; जिससे भिश्ती पानी भरते हैं
बारा=हवा
बाव भया=वायु चली; हवा बही
बुरग़ामाँ=एक ख़ास तरह का बाजा, जिसकी आवाज़ बड़ी तेज़ होती है
बेगीकर=वेग से; शीघ्रता से
बेबदल=जिसकी बराबरी का कोई न हो
बैताँ=शेर; कविता

भ

भड़ज=भाड़ में; दुःख की आग में जलनेवाला
भरोसा सटना=आशा खतम होना
भंगार=भीषण शब्द
भँजन=भंजन; टूटना; यहाँ दुःख दूर होने के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है
भान=बहन
भार=शक्ति; सेना
भार पड़=बाहर पड़; बाहर निकल
भाये=रँभाये; गाय की तरह बोलना
भाँच=कलश
भोगुनी=बहुगुणी; अधिक गुणवाला
भोत=बहुत

म

मक़बूल=प्राप्ति; बहुत ही प्रसिद्ध
मक्र=मकर; धोखा
मक्की=मक्का का रहनेवाला
मक़सूद=उद्देश्य; ख़्वाहिश
मक़बूल=सुन्दर
मखा=मक्का
मग़ज़=बादाम के भीतर का बीज
मज़कूर होना=कहा जाना
मजलिस भरना=दरबार या सभा में बैठना
मजाज़ी=झूठा
मता हो=मस्त हो
मद्ह=तारीफ़
मंदीर=मन्दिर; महल
मनें=में
मनक़ेबत=फ़क़ीर और महात्माओं की तारीफ़
मनौवर=रौशन
म्याने म्यान=बीचो बीच
मरग़ोलना=चहचहाना; पक्षियों का बोलना
मलायक=फ़रिश्ते
मरातिब=मर्तबा; शान
मर्ग़ज़ार=चरागाह
मलूक=दुःखी
मवादा=कहीं ऐसा न हो
मसीहा=ईसा मसीह; इनके सम्बन्ध में विश्वास है कि ये मुर्दों को जीवित कर देते थे
मामूर=आबाद; भरा हुआ

मावली=बूढ़ी औरत
माह=चाँद
माहरूयाँ=चन्द्रमा के समान सुन्दर स्त्रियाँ
माहियाँ=माही (फ़ारसी); मछली
माँदा करना=थका देना
माँदगी=थकावट
मिनक़ार=(फ़ारसी); चोंच
मुकल्लल ज़रीनाँ=ज़री का काम किया हुआ कपड़ा
मुक़बिलाँ=भक्त
मुजर्रद=अकेला हो जाना
मुंडी=सर
मुरस्सा=हीरे जवाहिरात जुड़े हुए
मुतरिबाना=मुतरिब का बहुवचन; गानेवाले
मुदाम=सर्वदा
मुद्दुआ=अभिलाषा
मुनाजात=प्रार्थना
मुन्तदी=जिसने किसी काम को सीखना प्रारंभ किया हो
मुन्तही=पारंगत; जिसने किसी काम को अच्छी तरह सीख लिया हो
मुरसिल=रसूल; ख़ुदा का संदेश पहुँचानेवाला
मुवल्लक=लटका हुआ
मुश्तरी=एक तारा विशेष; जो बहुत ही चमकदार
मुही उद्दीनियाँ=मुहीउद्दीन के अनुगामी
मेराज=यह विश्वास है कि मुहम्मद साहब ख़ुदा के पास गए और सातों आसमान की सैर करके वापिस आ गए। मुहम्मद साहब का यह पूरा काम 'मेराज' कहलाता है
मेहतराँ=बड़े लोग
मेह्र=सूर्य; प्रेम
मोअम्मा=समस्या; कठिनाई
मोअत दिल=सम शीतोष्ण जलवायु
मौज=लहर
मौजज्याँ=करामात

य

याकूत=लाल रंग का हीरा

र

रज़्म=लड़ाई
रयन=रैन; रात
रवा=उचित
रावें=रव करें; बोलें
रीश=ज़ख़्म
रुख़सार=गाल
रुच साजना=रुचि के साथ सजाना
रेवाज=इज़्ज़त
रोशन ज़मीर=दिल की बातों को जाननेवाले
रौज़न=सुराख़
रौशन सिफ़ात=विशेषताएँ रखनेवाला

ल

लसड़ी-रस्सी
लौह=स्लेट

व

वजाहत=ऊपर देखने से
वाँलग=वहाँ तक
विते=उतने ही
विर्द=विरुद, यश
वैताग भेस=ऐसा वेश या ढङ्ग जो मुसीबतों से भरा हुआ है।

श

शगुफ्ता किया=खुश किया
शद्दाद=एक बादशाह का नाम, जिसने दुनियाँ में जन्नत बनाई थी।
शफ़क़=प्रातः एवं सायंकालीन आकाश की लालिमा

शफ़क्क़त=मेहरबानी
शहपाल=एक बादशाह का नाम
शहरेयार=बादशाह
शादमानी=ख़ुशी
शादमानी सटना=खुशी समाप्त होना
शाहिद=गवाह
शिग़ाल=(फ़ारसी) भेड़िया
शिताब=जल्दी
शिद्दत=मुसीबत
शुजाअत=बहादुरी

स

सकसार=आदमी का हाथ पैर रखनेवाली और कुत्तों का मुँह रखनेवाली योनि विशेष
सके=मिश्ती
सगल=(मराठी) सब
सड़ी बोई=बदबू
सटूँ=फैंक दूँ
सना=तारीफ़
सफ़ा दरसफ़ा=क़तार की क़तार
सफ़ादार=साफ़ सुथरा
समर=नतीजा
समदूर=समुद्र
सरगुरू=बड़ा दर्जा रखनेवाले
सरांदील=सिंहल, लंका
सरे=मुनासिब, उचित
सर्वे आज़ाद=(फ़ारसी) आशिक़
सहरगाह=सुबह का समय
संगातन=सखी
सँपड़ना=(मराठी) प्राप्त होना
सात=साअत (अरबी) समय
सारकी=सरीखी, समान
साहब जमाल=बहुत ही खूब सूरत
सिद्क सात=सच्चे दिल से
सिर ते साफ़ी देना=नए सिरे से साफ़ करना
सिलहदार=सन्तरी, पहरेदार
सिरते=नए सिरे से
सुगड़=सुन्दर
सुते=सोये
सुंबुलाँ=एक विशेष प्रकार की घास, जो धुँघुराले बालों के समान होती है।
सुरय्या=एक तारे का नाम
सुलक्खन=सुलक्षण, अच्छे लक्षणोंवाली
सुलेमान=इस्लाम के एक पैग़म्बर, जिनका तख़्त बड़ा मशहूर है। कहा जाता है कि हजरत सुलेमान जहाँ जाते थे, जिन्न और परी उसे ले जाते थे क्योंकि वे उनकी रियाया थे।
सूर=चमक; ख़ुशी
सूरये यासीन=कुरान का एक अध्याय
सूरात=वाक्य
सूसना=सहना; बरदाश्त करना
सेहर=जादू
सो रात करना=लालच में आना
सौरात=ख़्वाहिश

ह

हक़यावरी=सच्ची मदद
हती=हाथी
हटीला=हठीला
हम्द=ईश्वर की स्तुति
हमायल नमन=हार के जैसा
हर तरीफ़=हर तरह
हयात=जीवन
हल्क़ा होना=चारों तरफ़ से घेरा डालना
हशम=शान शौक़त वाले

हाजिब=दूत
हात पाँव कलाना=हाथ पाँव चलाना; कोशिश करना
हाथ दौड़ाना=हाथ चलाना
हाँड़ी पकाना=ख़याली पुलाव पकाना; अत्यधिक कल्पनाएँ करना
हिजाबत=संदेश
हुचकरना=हेच करना; नीचा दिखाना
हुवेदा=प्रकट होना
हेजदा हज़ार=अठारह हज़ार
हैबक्र ज़दा होना=बहुत अधिक डरना
होड़ी=नाव
हौलनाक तफ़रक़ा=दुःखदायी अलगाव